सर्व देव

सिद्धि साधना



दो शब्द

देवी-देवताओं के पूजन-साधन पर अनेकानेक धार्मिक ग्रन्थ तन्त्र शास्त्र भारत में विद्यमान हैं। किन्तु उन महान् ग्रन्थों व शास्त्र आदि को प्रत्येक साधक सरलता से समझने में असमर्थ है क्योंकि उनमें क्लिष्ट भाषा का प्रयोग हुआ है और विषय असीम गहराई में प्रस्तुत किया गया है। एक तो ये महान ग्रन्थ तन्त्र शास्त्र सरलता से उपलब्ध नहीं हैं। दूसरे यदि इनको उपलब्ध कर भी लिया जाय तो उनके अध्ययन मनन के लिए पर्याप्त समय निकालना होगा और उनको समझने के लिए आवश्यकता होगी कुशाग्र बुद्धिमत्ता की।

आज के व्यस्त जीवन में प्रत्येक साधकभक्त कम समय में सरल भाषा द्वारा इन पूजन-साधन विधियों को ग्रहण करना चाहता है। इसी उद्देश्य को समक्ष रखते हुए प्रस्तुत पुस्तक का निर्माण इस रूप में किया गया है। इसके सम्यक् अध्ययन से देवी-देवता साधन सम्बन्धी सभी जानकारी सामान्य पाठक भी सरलता से प्राप्त कर सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न तन्त्र शास्त्रों के आधार पर श्री गणेश, शिव, विष्णु, हनुमान, महामाया, महाकाली, भद्रकाली, गुह्यकाली, दुर्गा, कमलासना लक्ष्मी, सरस्वती, बटुकभैरव आदि अनेक देवी-देवताओं के साधन संबंधी मन्त्र, पूजा, यंत्र, ध्यान, पूजाप्रयोग, न्यास, कवच, स्तोत्र आदि का समावेश किया गया है। सरल हिन्दी भाषा में यह अपने प्रकार की संभवतः प्रथम पुस्तक है, जो देव-देवी के साधकों-भक्तों के लिए परम उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

यहाँ जिस सामग्री को संकलित किया गया है उसका वर्णन 'महाइन्द्र-जाल' के किसी अन्य खण्ड में नहीं किया गया है।

पाठकों से हमारा अनुरोध है कि देवी-देवताओं के पूजन-साधन संबंधी जो भी मन्त्र इस पुस्तक में दिए गए हैं उनके सम्बन्ध में यह ध्यान रखें कि

उनको करते समय कोई भूल न हो। अपि च इस पुस्तक में साधनों की क्रियाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है फिर भी साधन से पूर्व इस विषय के जानकार किसी अनुभवी विद्वान् से परामर्श कर लें ताकि क्रिया में कोई कमी न रहे।

मुझे पूर्ण आशा है कि मेरा परिश्रम साधकों के लिए उपयोगी और लाभकारी सिद्ध होगा और सभी लोग इस पुस्तक को सस्नेह स्वीकार करेंगे।

नई दिल्ली
पहली मई, 1979

शिवनाथ राय

देवी-देवताओं की सिद्धि करने के इच्छुक भक्त के लिए आवश्यक बातकारी—

प्रथम बात—

देवी-देवताओं की सिद्धि के लिए भक्त को मन, वचन और शरीर से परम पवित्र होना चाहिए। अपवित्रता का अंश-मात्र भी साधना में बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न कर सकता है।

द्वितीय बात—

किसी सिद्धि के लिए आपको पुस्तक का सुचारु रूप से अध्ययन मनन करने के पश्चात् किसी अनुभवी विद्वान् व्यक्ति से परामर्श लेना लाभकारी सिद्ध होगा।

तृतीय बात—

यन्त्रों के निर्माण करते समय पूर्ण सावधान रहें। विभिन्न यन्त्रों में अन्तर सूक्ष्म दृष्टि से ही ज्ञात किया सकता है। अतः सजन सचेत रहकर यन्त्रों का रहस्य समझने का प्रयत्न करें।

धार्मिक साहित्य

श्रीमद् भगवद् गीता (भाषा)

श्रीगीता जी का हिन्दी भाषा में बहुत ही सुन्दर सरल अनुवाद। प्रत्येक स्त्री, बच्चे, पुरुष के लिए बड़ी अच्छी और रोजाना पाठ करने के लिए उपयोगी है। उर्दू भाषा में भी प्राप्त है।

श्री प्रेम सागर

इस ग्रन्थ में भी श्री कृष्ण जी के चरित्र का आदि से लेकर अन्त तक वर्णन किया गया है : भगवान श्रीकृष्ण के बचपन की रोचक बातें, युवावस्था और उनके मरण तक की सब बातों का हाल है। इस ग्रन्थ में श्रीमद्भागवद् के दशम स्कन्ध का वर्णन है।

महाभारत भाषा (अठारह पर्व)

महाभारत की घटनाओं को कौन नहीं जानता। इस ग्रन्थ में महाभारत का सम्पूर्ण हाल सरल हिन्दी भाषा में दिया गया है। इसमें पांडवों का जन्म से लेकर उनके हिमालय में गलने तक का पूरा हाल है।

गोस्वामी तुलसीदासकृत रामायण (भाषा टीका सहित आठ काण्ड)

इस ग्रन्थ में दोहे व चौपाइयों का ऐसा सरल अर्थ दिया गया है कि साधारण से साधारण पढ़ा-लिखा मनुष्य भी सुगमता से भगवान राम की कथा के तत्व को समझ सकेगा। इस ग्रन्थ का प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना आवश्यक है

चाणक्य नीति

मध्य युग के महान राजनीतिज्ञ आचार्य चाणक्य का नाम कौन नहीं जानता ? अल्प शक्ति होते हुए भी उन्होंने किस प्रकार प्रबल शत्रु पर सफलता प्राप्त की, यह जानना आज के युग में अत्यन्त ही आवश्यक है।

"शठे शाठ्यं समाचरेत् की नीति के मूर्त रूप आचार्य चाणक्य की नीतियाँ मानना प्रत्येक शठ विरोधी का कर्त्तव्य है। मूल्य 5/- रुपये।

श्री वाल्मीकि रामायण भाषा

इस ग्रन्थ में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की शिक्षाप्रद सम्पूर्ण कथा मोटे अक्षरों में सुन्दर छापी गई है। पुस्तक में अनेकों सुन्दर चित्र दिये गये हैं। आवरण चित्र अति सुन्दर हैं। जिस पर भी सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य 80 रुपये। डाक व्यय माफ

श्री राधेश्याम रामायण

हमने इस धर्म ग्रन्थ को मधुर गायन और सरल कविता में लिखकर प्रकाशित किया है। पढ़ने वाले का बिना पूरी रामायण पढ़े छोड़ने को जी नहीं चाहता। अनपढ़ और मूढ़ भी इसके अर्थ को बिना समझाये समझ लेते हैं। कथावाचक बाजे पर इसकी कथा सुनाकर मन मोह लेते हैं। मूल्य 30 रु०। छोटी 21 रु०

श्री दुर्गा सप्तसती भाषा (18 अध्याय)

यह पुस्तक दुर्गा का पाठ करने वाले भक्तजनों के लिए अत्यन्त उपयोगी है और इसमें वर्णित कथाओं का अर्थ सुन्दर और सरल भाषा में भली प्रकार खोला गया है जिससे संस्कृत से अनभिज्ञ भक्तजन भी पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं। मूल्य 10 रुपये।

सुखसागर श्रीमद (भागवत पुराण)
(बम्बई का मोटा टाईप पक्की जिल्द)

श्रीमद्भागवत गीता का सरल हिन्दी अनुवाद कर स्कन्ध सहित संपूर्ण जिसमें मुरली मनोहर श्रीकृष्ण भगवान का चरित्र व जीवन का वर्णन अनेक चित्रों सहित दिया गया है। रेगजीन की सुन्दर गोल्ड ठप्पे की जिल्द, अनेक रंगों की तस्वीर व अन्य चित्रों सहित है। कृपया अपनी प्रति आज ही मंगाने की कृपा करें। मूल्य 80 रुपये।

हिन्दी कुरान शरीफ

संसार का बड़ा समूह जिसे ईश्वरी ग्रन्थ मानकर पूजता है वह कुरान शरीफ बना है ? अरबी अक्षरों को हिन्दी में लिखने का शुद्ध रास्ता आया है। मूल्य 20 रुपये डाक खर्च सहित।

यह 30 सिपारों में प्रकाशित हो गई है। केवल मुल (गुजरा) हिन्दी अक्षरों में अति सिपारा साथ में अक्षरों का चार्ट और पढ़ने की नियमावली दी हुई है। तत्काल आर्डर भेजकर अपनी प्रतियां मंगवा लें।

बड़ा भक्ति सागर

इस किताब में ईश्वर प्रार्थना, हनुमान चालीसा, आरतियां, सर्वपुराण, वेदों का मन्त्र, भगवत विनय, कमल स्तोत्र, शिव चालीसा, दुर्गा चालीसा, बजरंग बाण, कीर्तन, हरिहर स्तोत्र, प्रातः व संध्या समय व भोजन तथा सोते समय की प्रार्थना, नित्य कर्म की पद्धति, दिन-चर्या, गीता का अठारहवां अध्याय, महात्म्य सहित, आदि बहुत सी धार्मिक बातें लिखी गई हैं। यह पुस्तक स्त्री पुरुषों व विद्यार्थियों सभी के लिए समान रूप से उपयोगी और सतसंगों में कथा करने के लिए विशेष उपयोगी है। मूल्य 15 रुपये डाक व्यय सहित।

योगवशिष्ट—भाषा दो खंडों में

भक्ति, वैराग्य और वेदान्त का यह अनुपम ग्रन्थ है। विरक्त सज्जनों का तो मानो प्राण ही है। सरल भाषा में मोटे अक्षरों में छपे ग्रन्थ का मूल्य 100 रुपये प्रति है। सैट दो जिल्दों में है। डाक खर्च अलग।

क्रम

1. साधना और सिद्धि

साधना किसे कहते हैं ? 1
साधना का श्रीगणेश कहाँ से और कैसे होता है ? 1
साधना की आवश्यकता क्यों है ? 3
साधना के केन्द्र 5
साधना के सिद्धान्त 6
साधना का मूल आधार—गुरु 6
कुछ साधनाएँ 7
पुकारो भगवान को पुकारो 12
महासाधन 14
सिद्ध पुरुष 16
समर्पण 17

2. श्रीगणेश-साधना

प्रथम चरण 18
कराङ्ग न्यास 18
षोडशोपचार क्रम से पूर्ण-विधि 20
ध्यान मन्त्र 20
आसन मंत्र 20
पाद्य मंत्र 20
अर्घ्य मन्त्र 20
आचमनीय मन्त्र 20
तैल मन्त्र 21
दुग्धस्नान मन्त्र 21
दधिस्नान मन्त्र 21
घृतस्नान मन्त्र 21
मधुस्नान मन्त्र 21
शर्करा स्नान मन्त्र 21
गुड स्नान मन्त्र 21
मधुपर्क मन्त्र 22
शुद्धोदक स्नान मन्त्र 22
वस्त्रमन्त्र 22
यज्ञोपवीत मन्त्र 22
आभूषण मन्त्र 22
चन्दन मन्त्र 22
अक्षत मन्त्र 22
पुष्प मन्त्र 22
धूप मन्त्र 22
दीपक मन्त्र 22
नैवेद्य मन्त्र 22
आचमनीय मन्त्र 22
फल मन्त्र 24
आचमनीय कर उद्वर्त्तनादि मंत्र 24
सिन्दूर मन्त्र 24

ताम्बूल मन्त्र 24
दक्षिणा मन्त्र 24
माला मन्त्र 24
दूर्वा मन्त्र 25
प्रदक्षिणा मन्त्र 25
आरार्तिक मन्त्र 25
श्रीगणेश षडाक्षर मन्त्र 25
ध्यान का स्वरूप 25
श्रीगणेश जी का एक त्रिंशद्वर्ण मन्त्र 26
लक्ष्मी-गणेश मन्त्र 27
त्रैलोक्य मोहनकर गणेश मन्त्र 27
ध्यान और जप 27
हरिद्रा गणेश मन्त्र 28
ध्यान और जप विधि 28

3. उच्छिष्ट गणेश साधन द्वितीय चरण

उच्छिष्ट गणेश मन्त्र 29
प्रयोग विधि 29
कराङ्ग न्यास 29
ध्यान का स्वरूप 30
पूजन विधि 30
बलि विधान 31
पुरश्चरण विधि 31
उच्छिष्ट गणेश का एकोनविंशति वर्ण मन्त्र 32
उच्छिष्ट गणेश का द्वात्रिंशद्वर्ण मन्त्र 32
उच्छिष्ट गणपति के विशेष प्रयोग 32
गणपति पूजन 34
संकल्प 35
आवाहन मन्त्र 36
स्थापन मन्त्र 36
आसन मन्त्र 36
पाद्य मन्त्र 37
अर्घ्य मन्त्र 37
पंचामृत स्नान मन्त्र 37
स्नानीय जल मन्त्र 37
यज्ञोपवीत मन्त्र 37
वस्त्र मन्त्र 37
आचमनीय मन्त्र 37
गन्ध मन्त्र 37
अक्षत मन्त्र 38
पुष्प मन्त्र 38
धूप मन्त्र 38
दीपक प्रदर्शन मन्त्र 38
नैवेद्य मन्त्र 38
जल मन्त्र 38
फल मन्त्र 38
नीराजन मन्त्र 39
प्रार्थना मन्त्र 39
गणेशस्तवराज 40

गणेशकवच 42
गणपति स्तुति 44

4. शिवसाधना

शिवपूजन मन्त्र 45
शिवध्यान मन्त्र 45
आवाहन मन्त्र 45
आसन मन्त्र 46
अर्घ्य मन्त्र 46
आचमनीय मन्त्र 47
गोदुग्ध स्नान मन्त्र 47
दधि स्नान मन्त्र 47
घृत स्नान मन्त्र 47
मधु स्नान मन्त्र 47
शर्करा स्नान मन्त्र 47
शुद्धोदक स्नान मन्त्र 47
शतरुद्री 48
वस्त्र मन्त्र 56
उपवीत मन्त्र 56
गन्ध मन्त्र 56
अक्षत मन्त्र 56
पुष्प मन्त्र 56
बिल्वपत्र मन्त्र 57
धूप मंत्र 57
दीपक मन्त्र 57
नैवेद्य मन्त्र 57
आचमनीय मन्त्र 57
करोद्वर्तन मन्त्र 57
फल मन्त्र 57
ताम्बूल पूगीफलादि मन्त्र 58
द्रव्य मन्त्र 58
नीराजन मन्त्र 58
पुष्पांजलि मन्त्र 58
प्रणाम मन्त्र 58
शिवरात्रि अर्घ्य मन्त्र 59
सोमवार अर्घ्य मन्त्र 59
शिव स्तोत्र 60
शिव कवच 66
करन्यास 66
ध्यान 66
आरती शिव शंकर जी की 74

5. हनुमत् साधन

विधि 76
टिप्पणी 76
मन्त्र 78
और फिर सिद्धि की प्राप्ति के बाद 79
आरती श्री हनुमान जी की 80

6. दुर्गा साधन

महाकाली 81
महालक्ष्मी 82
महासरस्वती या चामुण्डा 82
योगमाया 82

रक्तदन्तिका	83
शाकम्भरी	83
दुर्गा	83
भ्रामरी	83
चण्डिका	84
श्री दुर्गा देवी की पूजाविधि	84
हवन की सामग्री	86
विधि	86
मन्त्र	87
दुर्गा स्तोत्र	87
दुर्गा कवच	89
दुर्गा जी की आरती	90

7. काली साधन

काली मन्त्र	92
काली कवच	92
काली स्तोत्र	96
श्यामा साधन मन्त्र	100
दक्षिण कालिका के एकासन मन्त्र	100
दक्षिण कालिका के मन्त्र	101
गुह्य काली का मन्त्र	103
भद्रकाली मंत्र	104
श्मशान काली का मन्त्र	104
महाकाली का मन्त्र	104
पूजा विधि	104
ऋष्यादि न्यास	105
षडंग न्यास	106
कर न्यास	106
माला मन्त्र	106
महाकाली	107

8. लक्ष्मी साधन

लक्ष्मी मन्त्र	108
लक्ष्मी-पूजन विधि	109
ध्यान के मन्त्र	110
आवाहन का मन्त्र	110
आसन का मन्त्र	111
पाद्य का मन्त्र	111
अर्घ्य का मन्त्र	111
आचमन का मन्त्र	111
स्नान का मन्त्र	111
पंचामृत स्नान का मन्त्र	111
शुद्धोदक स्नान का मन्त्र	112
गंगोदक स्नान का मन्त्र	112
वस्त्र का मन्त्र	112
उपवस्त्र का मन्त्र	112
मधुपर्क का मन्त्र	112
आभूषण का मन्त्र	112
गंध का मन्त्र	113

रक्त चंदन का मन्त्र	113
सिंदूर का मन्त्र	113
कुंकुम का मन्त्र	113
सुगंधित तेल का मंत्र	113
अक्षत (चावल) का मन्त्र	113
पुष्प का मन्त्र	114
पुष्प माला का मंत्र	114
दुर्वा का मंत्र	114
अबीर गुलाब का मंत्र	114
अङ्ग पूजा	114
अष्ट सिद्धि पूजा	115
अष्टलक्ष्मी पूजा	115
आवरण पूजा	115
धूप का मन्त्र	116
दीपक का मन्त्र	116
नैवेद्य का मन्त्र	116
ऋतु फल का मन्त्र	116
आचमन का मन्त्र	116
ताम्बूल का मन्त्र	117
नीराजन का मन्त्र	117
दक्षिणा का मंत्र	117
प्रदक्षिणा का मन्त्र	117
नमस्कार का मंत्र	117
पुष्पांजलि का मन्त्र	117
प्रार्थनामन्त्र	118
श्रीमहाकाली के ध्यान के मंत्र	119
सरस्वती के ध्यान के मन्त्र	119
लेखनी प्रार्थना मन्त्र	120
श्रीकुबेर प्रार्थना मंत्र	120
तुला मन्त्र	120
मान दण्ड मन्त्र	121
अन्य वस्तुओं का मन्त्र	121

9. भैरव साधन

भैरव के ध्यान का स्वरूप	122
बटुक भैरव मन्त्र	122
श्री भैरव के ध्यान के स्वरूप	123
सात्त्विक ध्यान	123
राजस ध्यान	123
तामस ध्यान	123
सामान्य ध्यान	124
भैरव का भोग, हवन तथा हवन सामग्री	124
बटुक भैरव सहस्र नाम स्तोत्र	125
न्यास	126
ध्यान	126
सहस्रनाम	126
सहस्रनाम पाठफल	137

10. गायत्री साधन

मन्त्र व्याख्या	139
(१) भर्ग क्या है ?	139
(२) भर्ग	139
(३) भर्ग का अर्थ भग	141

(४) भर्ग तेज है 142
गृहस्थी सावधान 142
प्राण अपान कब होते हैं ? 142
देव शब्द का अर्थ 143
दूसरा अर्थ 143
वह देव क्या देता है ? 144
इस मन्त्र में सविता के साथ देव क्यों जोड़ा गया है ? 144
ज्ञान दो प्रकार का है एक प्राकृतिक दूसरा आत्मिक 144
बाह्य तथा आन्तरिक तह का भेद 145
भजन साधन रहस्य 146
बिना रंजिश का काम केवल प्रभु का भजन ही है 146
(१) जाप विधि तथा स्थान 146
(2) माला के लाभ 146
(३) दीर्घ काल तक संतोष तथा ईश्वर अनुग्रह पर निर्भर होकर साधन करना चाहिए तभी सफलता होती है 146
(४) भजन विधि 147
(५) प्राणों की तेजी से स्वयं सावधानी रखिए। 147

गायत्री साधन
(तन्त्र-शास्त्र के अनुसार)

पूजन विधि 148
ध्यान 149
हवन द्रव्य निरूपण 149
होम व्यवस्था 150
भूत प्रेत दूर हों 151
मन्त्र सिद्ध करना 151

देवी-देवता सिद्धि

देवी देवता सिद्धि 152
सामान्य प्रकरण 152

1

साधना और सिद्धि

स्वामी श्री शुद्धानंदजी भारती

'साधना' किसे कहते हैं ?

'साधना' का अर्थ है प्रयत्न करना, उद्योग करना, लगना। साधना का अर्थ सिद्धि भी है। आत्मानुसंधान के मार्ग में, अपनी आत्मा को परमात्मा में लगाने पर 'पूर्णमदः पूर्णमिदं' की अनुभूति के पथ में हमारी जो कुछ भी आध्यात्मिक चेष्टाएं होती हैं उन सब का नाम 'साधना' है। नदी की धारा ऊंचे चढ़ती है, नीचे ढलती है, वन-पर्वत को लांघती हुई बढ़ती जाती है। क्यों, किसलिये ? इसलिये कि यह अन्त में अपने आपको समुद्र की गोद में सुला दे, लीन कर दे, मिटा दे। मनुष्य को आत्मा भी भाग्य के चढ़ाव-उतार, सुख-दुःख हर्ष-विषाद और ऐसे ही जीवन के विविध खट्टे-मीठे अनुभवों को पार करती हुई चित्त और आनन्द के एक अनन्त महासागर अपने आपको ढाल देने के लिए व्याकुल है, बेचैन है। नदी का लक्ष्य है समुद्र, मनुष्य का लक्ष्य है भगवान। भगवान के मार्ग में चलने के लिये जो भी अनुष्ठान किया जाता है, जो भी व्रत किया जाता है, वह सभी 'साधना' है और जो भी इस मार्ग में अवरोधक है, वह है अन्तराय, वह है साधना में विघ्न।

साधना का श्रीगणेश कहां से और कैसे होता है ?

मनुष्य मात्र अपने भीतर एक निगूढ़, एक अव्यक्त अभाव का अनुभव करता है। वह कुछ 'खोज' रहा है, चाह रहा है; परन्तु वह 'चाह' क्या है, उसे पता नहीं। वह 'किसी' को देखना चाहता है। परन्तु वह नहीं जानता कि वह 'कोई' कौन है ? और कैसा है ? संसार के इस बनने-मिटने वाले चित्रों से, क्षण-क्षण पर बदलने वाली वस्तुओं से, उसे स्थायी सुख, स्थायी शान्ति मिले

तो कैसे ? आज का विश्वासी मित्र कल घोर शत्रु हो जाता है, दगा दे जाता है। स्वजन परिजनों को देखकर आज घड़ी-दो-घड़ी के लिये एक हल्की-सी सुखानुभूति हुई, परन्तु कल ही उनका दुःख दर्द देख कर रोना पड़ता है। मनुष्य आज धन-सम्पत्ति जमा करता है, परन्तु कल ही उनके बन्धनों में बन्ध करके तड़पने लगता है, छटपटाने लगता है; उनके भार से पिसने लगता है। इन्द्रियों का सुख, क्षण भर के लिये उसे बहला तो जाता है, परन्तु फिर सदा के लिए असन्तोष और सन्ताप के अथाह सागर में छोड़ जाने के लिए। बुद्धि की दौड़-धूप और उछल कूद से जीवन की शंका मिटती नहीं। अपने ही मन के रचे हुए जेल में मनुष्य अपने आप कैदी है। वह प्रकाश के लिए तड़प रहा है, स्वतन्त्रता के लिए बिलख रहा है। पिंजरे को तोड़कर, जेल की दीवारें लांघकर वह बाहर आना चाहता है परन्तु"'परन्तु जुगनुओं से कहीं रात का अंधकार जाता है ? जगत् के सुखभोग से क्या अन्तर की प्यास मिटती है ? हीरे जवाहर भी इस अंधकार को छिन्न-भिन्न नहीं कर सकते, फिर बुद्धि के उच्चतम विकास और विलास से मन का संशय कैसे मिटे ? दुनिया भर में नाम और यश का विस्तार हो गया, परन्तु इससे, उसको कौन सा सन्तोष मिला ? कहीं भी तृप्ति मिली ? इन्द्रियों के सुख-भोग से क्षण-भर की जो तृप्ति हुई, उसके पीछे मन सदा के लिए, चिरकाल के लिए और क्षुब्ध हो उठा ! मन तो भावों का, बल खाते हुए भावों का एक सागर है और जीवन है उस क्षुब्ध जल में डगमगाती हुई एक नन्ही-सी नाव। इसके सामने है रहस्यों से भरा भविष्य, इसके पीछे-पीछे लगा आ रहा है भाग्य का मकर, किस्मत का घड़ियाल, सन्नाटा और तूफान, धूप और वर्षा, ओले और कुहारा मार्ग में आते हैं और नाव की गति-विधि को छेड़ते रहते हैं। प्रकृति की शक्तियों के सामने हमारी बुद्धि कुछ काम नहीं देती। पग-पग पर वह हमें छकाती है, अब गया, तब गया ऐसा लगने लगता है। एकाएक वह देखता है कि उसकी किश्ती बुरी तरह से फिर गयी है सर्वनाशी तूफान से; तब वह अपने आपको पाता है चारों ओर से असहाय, निराधार और निरवलम्ब। ऐसे ही समय उसके अन्तस्तल से एक पुकार उठती है, एक हूक निकलती है—हे प्रभो ! हे मेरे स्वामी ! मुझे बचाओ ! बचाओ !! मैं दीन-हीन हूँ, असहाय हूँ !!!

बुद्धिर्विकुण्ठिता नाथ समाप्ता मम युक्तयः।
नान्यत्किञ्चिद्विजानामि त्वमेव शरणं मम ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

हे नाथ ! मेरी मति कुण्ठित हो गयी है, मेरी सारी तर्क युक्तियां समाप्त हो गयी हैं, मैं तुम्हारे सिवा कुछ भी नहीं जानता; तुम ही मेरे एकमात्र शरण हो। तुम ही सच्चे पिता हो, तुम ही स्नेहमयी माता हो, तुम ही विपत्ति से बचाने वाले सच्चे बन्धु हो, तुम ही सच्चे मित्र हो; विद्या, धन और सर्वस्व, हे देवदेव ! मेरे सब कुछ तुम ही हो !

हे प्रभो ! हे अशरण शरण ! आज तुम्हारे सिवा मेरे लिए कोई सहारा नहीं है, कोई गति नहीं है; तुम ही मेरे सर्वस्व हो, जीवन के आधार हो, प्राणों के अवलम्ब हो; मुझे बचाओ ! मुझे बचाओ ! मुझे बचाओ ! तुम से प्रेम करना ही प्रेम है। तुम्हें जानना ही ज्ञान है। प्रभो ! दया कर अपने प्रेम का दान दो अपने प्यार से मुझे नहला दो, पवित्र कर दो; अपने ज्ञान का प्रकाश दो, जिससे मेरा अन्तर-बाहर ज्योतिर्मय हो जाये—शुभ्र ज्ञानमय हो जाये !

मनुष्य के हृदय से जब ऐसी करुण पुकार निकलती है, तब समझना चाहिये कि यथार्थ साधना का श्रीगणेश हुआ है।

साधना की आवश्यकता क्यों है ?

हर बात में उपयोगिता ढूंढ़ने वाले यह पूछ सकते हैं कि आखिर साधना की आवश्यकता किसलिए है, उससे क्या लाभ है ? क्यों न मनुष्य खाये पिये, भोजन करे, धन संग्रह करे, बम बरसाये, दुनिया को जीतकर उनकी छाती पर अपना शासन स्थापित करे, हकूमत कायम करे ? और इस बात की आवश्यकता ही क्या है कि वह भगवान और साधना के विषय में सोचे विचारे, माथा पच्ची करे ? परन्तु यह भी कोई जीवन है ? यह तो अज्ञान-तिमिर में भटकना है ! यह जगत त्रिगुणमयी माया की अन्तिम क्रीड़ास्थली है। मनुष्य

आँख मिचौली खेल रहा है। उसकी आँखों पर अज्ञान की पट्टियाँ बंधी हैं। अंधकार के कारण वह दुख के गर्त में जा पड़ा है । कभी इसे छूता है कभी उसे। दुनिया भर की खाक छानता फिरता है। अटक से कटक तक, चीन से पेरू तक चक्कर लगाता फिरता है और सुख-दुख हर्ष विषाद के थपेड़े खाता फिरता है। जहाँ जाता है, वहाँ धक्के खाता है, दुरदुराया जाता है। कहीं भी शान्ति नहीं, सुख नहीं, स्वतन्त्रता नहीं, सन्तोष नहीं । अपने ही आप अपनी इच्छाओं मे आबद्ध है,। वासनाओं में जकड़ा हुआ है । अपनी इच्छाओं का गुलाम है। वह जितना भी सोचता विचारता है, जितना भी हाथ पैर मारता है, उतना ही वह दुखों की जंजीरों से अधिकाधिक जकड़ा जाता है, उलझता जाता है ।

इतने में ही अन्दर की घंटी बज उठती है और भगवान का नाम हृदय में गूंजने लगता है। शास्त्र एक स्तर पर कहते हैं — डंके की चोट कहते हैं कि भगवान ही — एक मात्र श्रीभगवान ही विशुद्ध आनन्द हैं, वास्तविक ज्ञान हैं, परात्पर सत्य हैं। जीवन उन्मुक्त हो जाता है, सत्य उतर आता है और हृदय के अन्तस्तल में आनन्द की तरंगें उठने लगती हैं। नाम का अनुसरण और भगवान के चरणों का स्मरण साधना की पहली सीढ़ी है। भगवान के परम पावन चरण युगल ही हमारे सच्चे आश्रय हैं, एकमात्र शरण्य हैं और तमाम आधार व्यर्थ हैं। धोखे में डालने वाले हैं, भरमाने वाले हैं भगवान की प्राप्ति ही सच्ची प्राप्ति है; उनके बिना सारी प्राप्ति व्यर्थ है महान् हानि है। भगवत्-चेतना के बिना जीवन दारुण आत्म-हत्या भयानक आत्महनन है। आज की दुनिया में जहाँ विज्ञान के नवीन-नवीन अनुसन्धानों से मनुष्य का अहंकार इतरा उठा है, जहाँ सौभाग्य साम्राज्यवाद की दानवी ज्वाला से मानवता पीड़ित एवं क्षुब्ध है — सर्वत्र इसी आत्महनन का दौर-दौर है पैशाचिकता नहीं तो और क्या है कि समुद्र के गर्भ में लोह चुम्बक तारों का जाल बिछा कर जहाजों को डुबो देते हैं और निरीह मानवों पर बम बरसा जा रहे हैं? इस आधार से मनुष्य को ऊपर उठाना होगा, इस अहंकार से पल्ला छुड़ाना पड़ेगा और तभी यह अपने सत्य स्वरूप की, उस सनातन शाश्वत सत्य की उपलब्धि कर सकेगा, जिसके लिये उसके भीतर तड़फ है, व्याकुलता है, प्रभु का बोध है, दूसरे शब्दों में उसे साधना करनी होगी तब अपने सत्य स्वरूप का — जो स्वयं श्रीनारायण है — पता लगेगा। यह साधना जीवन के लिये आवश्यक है, अनिवार्य है। जीवन में अन्न, जल, वायु, प्रकाश की अपेक्षा भी इस साधना की आवश्यकता अधिक है।

साधना के केन्द्र

मनुष्य वस्तुत: दिव्य भागवत प्राणी है। वह आत्मदृष्टि साक्षात् श्री भगवान ही है, मनुष्यता का तो उसने चोला धारण किया है। मनुष्य की तमाम पहेलियों का बस एक ही हल है और वह यही है कि मनुष्य अपने दिव्य भगवत्-स्वरूप की उपलब्धि करे। मनुष्य के भीतर भगवान पंच कोषों में छिपे हुए हैं। मनुष्य का भौतिक रूप आत्मा का परिच्छेद है, यही है अन्नमय कोष, उस के बाद है प्राणों का कोष अर्थात स्नायु जाल, जो शरीर धारण किये हुए है। इस स्नायुजाल में ही जीवन की धाराएं प्रवाहित होती रहती है। मन इन स्नायुओं का पोषण और संचालन करता है। शरीर, मन और प्राण मनुष्य के निम्न स्तर के केन्द्र हैं। मन के परे विज्ञान है। इस विज्ञान की दृष्टि में एक तत्त्व बहुत ही स्पष्ट एवं प्रांजल रूप में रह जाता है। विज्ञान के परे आनन्दमय कोष है और इसमें प्रवेश करने पर मनुष्य आत्मानन्द के हृदय में प्रवेश कर जाता है। आत्मा इन पांचों कोषों से परे है और हमारे हृदय कमल में जगमगा रहा है। साधना की तीव्रता के द्वारा जब दिव्य चेतना का स्फुरण और जागरण होता है, तब इन पर पञ्चकोषों की प्रक्रिया समझ में आती है। दृष्टि के सभी अंगों में भगवान के दिव्य संस्पर्श की अनुभूति होनी चाहिए इसके लिये आवश्यकता इस बात की है कि हमारे समग्र अंग सक्रिय साधना में लगें। साधना कोई भी क्यों न हो, यह आवश्यक है कि वह हमारी मनोदृष्टि को उद्बोधित करे और हृदय को स्पर्श करे। हमारे शरीर के अन्दर हृदय और बुद्धि में भगवान का निवास होता है। मन-बुद्धि साधना में स्थिर हो जाये और हृदय उसके आनन्द रस का निरन्तर आस्वादन करता रहे—यही तो साधना की सफलता के लक्षण हैं। मन-बुद्धि और हृदय के केन्द्रों को जो साधना स्पर्श नहीं करती, वह साधना अधूरी समझी जायेगी। अच्छा, इसके सम्बन्ध में फिर आगे विचार किया जायेगा।

साधना के सिद्धान्त

साधारणतः हमारी चेतना बहिर्मुखी होती है। बाहर के विषयों में यह मनमानी बेलगाम दौड़ लगाती है, खूब उछल-कूद मचाती है और उस प्रत्येक उछल-कूद में हमारी शान्ति और शक्ति का क्षरण होता रहता है और मन चंचल और क्षुब्ध होता रहता है। मन पर अच्छी तरह लगाम कसकर और इस प्रकार समग्र बिखरी हुई चेतना को अपने अन्दर समेट कर उसे हृदय में डुबो देना ही साधना का गुह्य तत्त्व है। जिस प्रकार परजीवी समुद्र म गोते लगाकर रत्न ढूंढ़ निकालता है, उसी प्रकार साधक को अपने हृदय में डूबना होगा। हमारे सभी अंग, हमारे अस्तित्व का एक-एक कण भगवत प्राप्ति की सजग अभीप्सा में पुलकित हो उठें, हमारे भीतर दिव्य पवित्रता भर जाए—इसके लिए अन्दर दृढ़ निश्चय चाहिए, अटल निष्ठा चाहिए। और चाहिए साधना के प्रति अटूट अनुराग। "अन्तर्मुख होओ, भीतर की ओर लौटो"—समस्त साधनों का एक मात्र यही सूत्र है।

साधना का मूल आधार

हृदय में स्थित नारायण का साक्षात्कार करने के लिए तथा समस्त जगत में उनका संस्पर्श अनुभव करने के लिए अनेक प्रकार की साधनाएं हैं। उनमें कोई भी साधना लगन और उत्साह के साथ की जाए तो साधक अपने लक्ष्य को प्राप्तकर लेगा क्योंकि हमारी अन्तरात्मा ही हमें यन्त्र बनाकर काय करती है। मन, वचन और कर्म की पवित्रता, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सात्त्विक एवं युक्त आहार-विहार, सत्संग, एकान्त-सेवन, आंख, कान, जिह्वा, और उपस्थेन्द्रिय का पूर्ण संयम, भगवान में पूर्ण विश्वास, नाम-स्मरण, नम्रता, निरपेक्षता, सदा ग्रंथसेवन, साधु-सेवन, श्री गुरु की आज्ञा का पालन—यह ही हैं साधना के मूल आधार और कोई भी साधक, चाहे जिस शैली की उसकी साधना हो, इन तत्त्वों की अवहेलना नहीं कर सकता।

गुरु

योग्य गुरु के संरक्षण में साधना करना सर्वथा सुरक्षित एवं निरापद है। परन्तु सच्चे गुरु के लिए सच्ची खोज होनी चाहिए। गुरु के जीवन में जितनी अधिक दिव्यता होगी, उसके मुखमण्डल पर चिच्छक्ति का जितना अधिक विकास

होगा, उसकी करुणा भरी, कृपा भरी दृष्टि में जितनी भी दिव्य आध्यात्मिक ज्योति निकलती रहेगी, उसके शान्त, स्थिर, निर्मल, अहंकार-शून्य, सरल, निश्छल, निर्मान, निर्मोह आचरण में, उसकी शीतल स्निग्ध वाणी में जो सहज ही संशय का उच्छेदन करती है, आनन्द और प्रकाश की वर्षा करती है, जितना अधिक प्रभाव होगा, साधक का उतना ही शीघ्र कल्याण होगा। सच्चा गुरु कभी भी अपने को अवतार घोषित नहीं करता, न अपने को सर्व-शक्तिमान ही बतलाता है। इस प्रकार के अहंकार का उसमें लेश भी नहीं होता। प्रकाशन और प्रचार की अपेक्षा मौन और एकान्त से उसका विशेष प्रेम होता है। वह यह कहता भी नहीं कि मैं गुरु हूं। सच्चा गुरु एक बार के दृष्टि-निक्षेपमात्र से, एक बार के स्पर्श से, एक बार के संकल्प से अपने योग्य शिष्य में शक्तिपात कर सकता है। मीलों दूर से अपने शिष्य की काया पलट सकता है, क्योंकि परमाणुओं की गति में जो संवेग है, उससे भी अधिक तीव्र संवेग उसके विचारों में, उसके संकल्प में होता है। बड़ा ही भाग्यशाली है वह साधक जिसे ऐसा गुरु प्राप्त हो गया है। ऐसे योग्य गुरु हैं बहुत ही दुर्लभ। भगवान की कृपा से ही वह इस धराधाम पर आते हैं। इस संसार में आजकल ऐसे गुरु बहुत ही थोड़े हैं।

कुछ साधनाएँ

साधना के जिन आवश्यक तत्त्वों का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, यदि उनका विकास किसी साधक में हो रहा है यह आत्मज्ञान की निम्नलिखित साधनाओं में से किसी एक का, जिसका निर्देश उसके गुरु देव करें अथवा जिस का अनुमोदन उसकी अन्तरात्मा करे, आधार ले सकता है।

(1) भगवद्गीता, रामायण, भागवत, सूतसंहिता, विवेकचूडामणि आदि आदि धर्म ग्रन्थों का अनुशीलन एवं मनन।

(2) राम, कृष्ण, शिव, शक्ति, अल्लाह, जेहोवा या भगवान के अन्य किसी भी प्रिय नाम का प्रतिदिन कम-से-कम दस हजार जप।

(3) भजन गाना, भगवत्प्रेम में नाचना, और खूब प्रेम से भगवद्नाम का जोर-जोर से उच्चारण और भगवत् कृपा का आवाहन। हृदय द्वार को खोलने तथा हृदय ग्रन्थियों को काटने के लिए यह सर्वोत्तम साधन है।

(4) सत्संग, साधु-सेवा और संत-महात्माओं को भगवान का रूप समझ कर उनका सम्मान करना।

(5) हमारे धर्म शास्त्र द्वारा अनुमोदित नित्य नैमित्तिक कर्मानुष्ठान-संध्योपासन, ब्रह्मयज्ञ, बलिवैश्वदेव आदि पवित्र कर्मों का विधिवत् पालन करना। इन कर्मों में महान् आध्यात्मिक रहस्य भरा पड़ा है।

(6) भगवत्पूर्ण बुद्धि से ही कर्म करना और उन समस्त कर्मों से जो अहंकार उत्पन्न करते हैं, सर्वथा अलग रहना।

(7) भगवान की मूर्ति की उपासना और अर्चा। यह भाव दृढ़ रहे कि मूर्ति में साक्षात् भगवान का निवास है। यह धातु की नहीं है, अपितु स्वयं श्रीभगवान का दिव्य मंगलमय विग्रह है। मूर्तिपूजा के आलोचक इस बात को भूल जाते हैं और इसलिए मूर्तिपूजा के तत्त्व से अनभिज्ञ रह जाते हैं।

(8) नियमपूर्वक किसी मन्दिर में जाना, उसे धोना, पोंछना, साफ करना, बत्ती जलाना, धूप दिखाना आदि कैंङ्कर्य करना।

(9) तीर्थ-सेवन, गङ्गा, यमुना, सरयू आदि पवित्र नदियों में स्नान करना। यदि सच्चाई के साथ निष्ठा पूर्वक यह कार्य किये जायें तो अवश्य ही इसके द्वारा चित्त शुद्धि होती है और भक्ति की लता लहरा उठती है।

(10) दान करना — दीन दुखियों, अपाहिजों को अन्न देना, पशु-पक्षियों को अपनी सन्तान समझ कर उनको दाना-पानी पहुँचाना, गो-सेवा करना, पूजा के लिए बाग बगीचे और फुलवारियाँ लगाना, ब्रह्मचारियों को अन्न वस्त्र देना, साधु संन्यासियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करना, सद्ज्ञान का प्रचार और प्रसार, गरीबों के लिए, रोगियों के अस्पताल खुलवाना गरीबों और मजदूरों के लिए काम-काज की व्यवस्था करना, और उनकी जीविका की व्यवस्था बैठाना, उदारता पूर्वक दान देना, मानव-मात्र को श्री नारायण का विग्रह समझकर निष्काम भाव से उनकी सेवा शुश्रूषा करना अन्तःकरण की शुद्धि के लिए यह कार्य नितान्त अनिवार्य हैं।

(11) गुरुसेवा — गुरु के चरणों में अपने आपको अर्पित कर देना, उन्हें साक्षात् श्री भगवान समझना, और धैर्य तथा उत्साह के साथ उनके

निर्देशित पथ का, उनकी आज्ञाओं का श्रद्धापूर्वक पालन एवं अनुसरण करना, कभी उनकी भगवत्ता में संशय न करना।

(12) हठयोग की कुछ क्रियाएं — आसन, बन्ध, मुद्रा-प्राणायाम, कुम्भक, धौति, नौलि, त्राटक आदि का अभ्यास किसी योग्य अनुभव गुरु के अनुशासन एवं तत्त्वावधान में करना। हठयोग के आसनों का अभ्यास एक मात्र नाड़ी शुद्धि और प्राण शुद्धि के लिए किया जाता है। इससे तुरन्त लाभ यह होता है कि इसके द्वारा साधक का चित्त स्थिर होता है और ध्यान जमता है और शारीरिक क्षोभ अथवा विक्षेप नहीं होने पाता। चमत्कार के लिए आसनों का जो प्रदर्शन किया जाता है, उससे कुछ भी होता हवाता नहीं। पैसों के लिए तो राह में भिखमंगे भी आसन करते देखे जाते हैं। मन के साथ स्नायुओं का सीधा सम्बन्ध है। योग के आसनों द्वारा प्राणप्रवाह पर बहुत ही सुन्दर ढंग से नियन्त्रण किया जा सकता है, मन के वेगों पर लगाम कसा जा सकता है और इस कारण आसनों के द्वारा मन और प्राण स्वस्थ होते हैं और शरीर भी पुष्ट होता है, संगठित होता है। हठ योग का यही लक्ष्य है (इस पुस्तक के प्रकाशकों से मेरी जगत् प्रसिद्ध रचना 'योगासन' जरूर मंगाकर देखिए)

(13) राजयोग—राजयोग में आठ सीढ़ियाँ हैं—यम, नियम, आसन और प्राणायाम के सम्बन्ध में ऊपर उल्लेख हो चुका है। प्रत्याहार, धारणा ध्यान और समाधि के विषय में, बहुत संक्षेप में यहाँ चर्चा की जा रही है। पहले चार तो बाह्य साधना के अंग हैं और पिछले चार आन्तरिक साधना के। पिछले चार द्वारा मनुष्य भगवान के बहुत निकट पहुँच जाता है। ध्यान ही आभ्यन्तर साधना का प्राण है। ध्यान का सरल अर्थ यही है कि समस्त बाह्य वृत्तियों को अन्तर्मुख करके हृदयात्मा अथवा हृत्पुण्डरीक स्थित आत्मपुरुष में लीन कर देना। ध्यान में सबसे पहले चित्त की वृत्तियों को एकाग्र करना पड़ता है। इष्ट देवता की मूर्ति या चित्र पर दृष्टि को टिकाने से सहज ही ध्यान जमता है, चित्त एकाग्र होता है। अथवा किसी पुण्य नक्षत्र, सूर्य, प्रकाश मन्त्र, श्वासोच्छ्वास अथवा हृदय की धड़कन पर दृष्टि स्थिर करने से सहज ही ध्यान लगने लगता है। तारे और पुष्प को अपने परम प्रियतम प्रभु की मृदुल मुस्कान समझना चाहिए, हृदय को उसका मन्दिर मानना चाहिए। वस्तुओं

के रहस्यमय आन्तरिक स्वरूप को ही ग्रहण करना चाहिए। ध्यान जब हृदय में किया जाता है तब बाह्य के किसी उपकरण या सहायता की आवश्यकता नहीं रह जाती क्योंकि हृदयस्थ चैत्य पुरुष का दिव्य भाव-प्रवाह हमारी समस्त सत्ता को आत्मसात कर लेता है और इस कारण हमारी उपासना भी दिव्य हो जाती है। हृदय देश में स्थित भगवान नारायण का ध्यान लगातार छः महीने करने पर हमारी अन्तश्चेतना जाग उठती है और उसके अनन्तर तो साधक को केवल इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि उसकी अन्तर्गुफा में जो दिव्य ज्वाल-माल जगमगा रहा है उस पर उसकी दृष्टि स्थिर रहे। फिर और कुछ करना धरना नहीं पड़ता, साधना तो स्वयं चलती जाती है, होती रहती है। इससे होगा यह कि धीरे-धीरे जब समग्र चेतना जाग उठेगी तो मन बुद्धि का आत्मा में विलयन हो जायेगा और समाधि का आनन्द प्राप्त होने लगेगा।

(14) भक्ति-योग -- अपने इष्टदेव के चरणों में आत्मसमर्पण ही सर्व श्रेष्ठ साधन है। इससे स्वयं ही साधक की आवश्यक बातें आ जाती हैं। भक्ति की साधना अत्यन्त सुगम है और इसमें किसी प्रकार की विघ्न बाधा या अन्तराय का प्रायः भय नहीं है। भगवान के चरणों में भक्ति करके, संसार में आज तक किसी को धोखा हुआ नहीं, हो नहीं सकता। गृहस्थोंके लिए जिनकी संख्या संसार में 99% (सौ में निन्यानवें) है, यह सर्वोत्तम साधन है। भक्ति के मुख्यतः दो भेद हैं—सगुणभक्ति और निर्गुणभक्ति। इनमें सगुण भक्ति अधिक सुगम है और इसका पालन सभी कर सकते हैं। प्रेम कई प्रकार से व्यक्त होता है। प्रेमी भक्त अपने आपको अनेक प्रकार से प्रकट करता है। भगवान से वह कई प्रकार सम्बन्ध जोड़ लेता है -- दास्यभाव, सख्यभाव, वात्सल्यभाव, कई सम्बन्धों को लेकर वह भगवान से जुड़ जाता है। इनमें से किसी भी भाव से की हुई भक्ति द्वारा भगवत्कृपा प्राप्त होती ही है।

(15) ज्ञान-साधन - समाधि के लिये ज्ञान-साधन बहुत ही उत्तम साधन है। विवेक, वैराग्य, आत्मविचार, अन्तर्दर्शन — यह है प्रक्रिया ज्ञान-साधन की। दृश्य जगत के विषयों के प्रति — जो उत्तम दीखते हैं, किन्तु तुच्छ और क्षणभङ्गुर हैं, ज्ञानी अपनी दृष्टि मून्द लेता है, अपनी इन्द्रियों को हटा लेता है, खींच लेता है। मैं यह भी नहीं हूँ। मैं यह भी नहीं हूँ — 'नाहम्'

'नाहम्' से यह शुरू करता है। फिर सहज ही प्रश्न उठता है — फिर मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ — 'कोऽहम्' 'कोऽहम्'।

अन्त में शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूप में अपने आपको स्थित पाकर वह कह उठता है — 'मैं यह हूँ' 'मैं यह हूँ' 'सोऽहम्' 'सोऽहम्'! ज्ञानी इस बात को जानता है कि वह आत्मा है, स्वयं ब्रह्म है। अहर्निश, सोते जागते उठते बैठते इसी जागृत चेतना में रहता है और अपने मन, चित्त तथा प्राण को उस एक शाश्वत सत्य में लय किये रहता है। उसी एक का ही वह अपने अन्दर हृदय में दर्शन करता है और आँखे खोलकर भी बाहर के संसार में भी वह उसी का दर्शन करता है। उसके सिवा उसके लिये और कुछ रह नहीं जाता। वह सर्वत्र और सब वस्तुओं में उसी एक अद्वितीय को ही और उस 'अद्वितीय' में सब वस्तुओं और सब रूपों को देखता है। इसी को कहते हैं अनेक में एक का दर्शन। ऐसे ही आत्मदर्शी सन्त का गुणगान गीता और उपनिषद् गाते हैं।

(16) तन्त्र — योगी लोग जागृत कुण्डलिनी की उपासना शक्ति रूप में करते हैं। चक्र वेध की क्रिया के द्वारा यह कुण्डलिनी के छ: चक्रों को भेदता हुआ सहस्रार में ले जाता है और वहाँ महाकुण्डलिनी का 'पुरुष' से मिलन होता है। इस मिलन से ओंकार की ध्वनि स्पष्ट सुनने में आती है और ब्रह्मानन्द में प्रकाश जगमगाने लगता है और कई वर्ष की साधना से हमारा पूर्ण अस्तित्व मन, प्राण, शरीर सब-का सब दिव्य हो जाता है। नस-नस में, कण कण में चिच्छक्ति का दिव्य विलास होने लगता है और आनन्द की पुलक से रोम रोम सिहर उठता है। परन्तु यह बात स्मरण रखने की है कि तन्त्र की साधना से कुण्डलिनी जागरण द्वारा जो कुछ आनन्दानुभूति होती है, ज्ञान की सहज समाधि या भक्त के अशेष आत्मसमरण में उससे किञ्चिदंश में भी कम आनन्दानुभूति नहीं होती। तन्त्र का मार्ग संकटापन्न है और किसी अनुभवी योग्य सिद्ध गुरु की देख रेख में रहकर ही इस मार्ग में प्रवृत्त होना चाहिये। गुरु ऐसा हो जो शिष्य में शक्तिपात कर सके। केवल प्रपञ्च-सार, षट्चक्रभेदन, कुलार्णव या महार्णव तन्त्र पढ़ लेने से तन्त्र का ज्ञान नहीं हो सकता। और इन्हें पढ़कर पञ्चमकार की उपासना में प्रवृत्त हाल तो अपने को एकदम

खतरे में डालना है। बहुत से साधक इस मार्ग पर चलकर खतरा उठा चुके हैं, धोखा खा चुके हैं। इस पथ में पूर्ण सावधानी न रही तो अवाँछनीय परिणाम होना स्वाभाविक है। जान लेना चाहिये कि भक्ति-साधना और शक्ति-साधना दोनों ही समानरूप से प्रभावशाली हैं।

पुकारो, भगवान को पुकारो

बचपन में मैं सहज ही भक्ति मार्ग में लगा। मेरे दादा एक सच्चे संन्यासी थे। पैदल दो बार, मद्रास से हिमालय तक की यात्रा उन्होंने की थी और अपने अन्तिम दिनों में एक धर्मशाला में रहा करते थे। मेरी अवस्था उस समय छः सात साल की थी। मैं बराबर उनकी सेवा-परिचर्या में लगा रहता था और मेरे लिए तो वह भगवान ही थे। उनके पास बैठ कर ही मैंने हठयोग के तमाम आसन सीखे, प्राणायाम की क्रिया सीखी—और यह सब हुआ खेल तमाशे में। उनकी सेवा में मुझे इतना रस मिलता कि पढ़ना लिखना सब ताक पर रख दिया और मेरा दिल दिमाग दुनिया की किसी भी बात में रमता नहीं था। घर वाले मुझे बुरी तरह फटकारते, परन्तु मैं अपनी सारी बातें चुपचाप अपने दादा से—जिन्हें मैं साक्षात् भगवान् नारायण समझता था—कह दिया करता था।

मैं — "स्वामी जी, मेरे पिताजी मुझे पीटते हैं ... "

मैं—"स्वामी जी, मेरी माँ मुझे बुरी तरह से फटकारती हैं।

वह — "एक ऐसा भी पिता है जो अपने बच्चों को कभी नहीं पीटता ; उसे खोजो।"

वह — " एक ऐसी मां है जो तुम्हें कभी फटकारेगी नहीं, वह तुम्हें केवल प्यार-ही-प्यार करेगी, उसे ढूंढो।"

× × ×

मैं — स्वामी जी : मेरे मास्टर बेतों से मेरी खबर लेते हैं "

वह — " एक ऐसा भी मास्टर है जो तुम्हें कभी भी बेंत नहीं लगायेगा न तुम्हें छेड़ेगा ही। वह तुम्हें ऐसी बातें सिखलायेगा जिन्हें तुम्हारे दुनिया के मास्टर सौ जन्म में भी नहीं सिखला सकेंगे। "

मैं— "मुझे किताबों में कुछ मजा नहीं मिलता।"

वह—(मेरे हृदय को थपथपा कर) " असली किताब तो यहाँ है, इसे खोलकर देखो, पढ़ो। फिर आप- ही आप तुम्हें सारा ज्ञान हासिल हो जायेगा।

मेरे अन्तर की दिन प्रतिदिन उनके उत्तरों से गाँठें खुलती गईं और अपने आप ही मैं आत्मविचार में लग गया। मैंने मन में यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि उस 'परमपिता' के दर्शन करने ही हैं और उसका ज्ञान प्राप्त करना ही है, अवश्यमेव करना है। एक दिन वह बहुत ढंग से यह समझा रहे थे कि जो कुछ है सब-का-सब भगवान ही है, एकमात्र भगवान है, भगवान सर्वत्र है और सब कुछ है। इस पर मैंने उनसे पूछा — " स्वामी जी ! क्या मैं उनके दर्शन कर सकता हूँ ?

" हाँ : हाँ : " उन्होंने स्नेह के साथ कहा।

" कैसे ? " मैंने आतुरता से पूछा।

"पुकारो, उन्हें पुकारो, " उन्होने समझाते हुए कहा—

कैसे पुकारूँ स्वामी जी ?

"अरे भाई ; उन्हें पुकारने में क्या दिक्कत है ? वे सर्वव्यापक हैं, शुद्ध हैं, पवित्र हैं, सर्वशक्तिमान् हैं। चाहे जिस नाम से पुकारो वे सुनते हैं, अवश्य सुनते हैं। इन्हें शुद्ध ब्रह्म कहो या उन्हें सर्वशक्तिमान्, सर्वसमर्थ कहो उन्हें पुकारो या उनकी शक्ति को पुकारो। अच्छा सुनो, मैं तुम्हें एक मन्त्र सुनाता हूँ, तुम उसे जपा करो और तुम उसके दिव्य चमत्कार को देखोगे। वह मन्त्र है " ओं शुद्धशक्ति; " इससे तुम्हारे सारे मनोरथ सिद्ध हो जायेंगे।

इस मन्त्र के साथ मेरे हृदय का एक विचित्र अकथनीय आकर्षण हो गया। उसके लिए हृदय में चाह उत्पन्न हो आई और रात दिन मैं बराबर उसका जाप करता रहा। यह मन्त्र मेरे हृदय की धड़कन के साथ मिल गया। मैं अपने हृदय की धड़कन में स्पष्ट सुनता था उस मन्त्र की ध्वनि; मुझे यह दिव्य मन्त्र प्रदान कर वह महात्मा इस संसार से चल बसे। इसके बाद मैं अनेक सन्त महात्माओं के संसार में आया और अनेक प्रकार की साधनाएं की। परन्तु अन्ततः मेरे लिये तो उस परम शुद्ध शक्ति के चरणों में पूर्ण आत्मसमर्पण का ही एकमात्र आधार हो गया है और इसी से मेरे जीवन में एक अद्भुत आनन्द है, जिसका मैं निरन्तर मान किया करता हूँ। भक्ति की ज्वाला मेरे हृदय में अहर्निश प्रज्वलित रहती है। शुद्ध और शक्ति का वही सम्बन्ध है, जो सूर्य और उसकी किरणों का है।

महासाधन

सम्पूर्ण, निःशेष आत्मसमर्पण को ही मैं 'महासाधन' कहता हूँ। साधकों की प्राणदायिनी माता गीता का यह सर्वस्व है। लोग समझते हैं कि समर्पण एक बहुत आसान चीज है, परन्तु यह आसान नहीं है। समर्पण से सारा कार्य, सारी साधना, समग्र मनोरथ सफल हो जाते हैं। इसमें कोई भी संदेह नहीं। मुझे तो एकमात्र समर्पण से ही पूर्ण शान्ति, की पूर्ण आनन्द की अनुभूति हुई है। हठयोग और राजयोग की अपेक्षा समर्पण का मार्ग अधिक कठिन है। समर्पण में कर्म, भक्ति और ज्ञान का पूर्ण समन्वय है। हाँ, यह बात अवश्य है कि हमारा समर्पण पूर्णतः प्रीति पूर्वक होना चाहिये। नम्रता, आज्ञा-पालन, प्रभु की सेवा और भगवद्भाव से जगत के जीवों की यथाशक्ति सेवा सहायता करना — यह तो है शरीर का समर्पण। प्राणों का स्तर इतना सुदृढ़ होना चाहिये कि वह साधना के भार को सम्भाल सके, अहंकार को भगा सके; इच्छा, मोह, वासना, आसक्ति, ईर्ष्या, राग-द्वेष, लोभ, लालसा, मद मत्सर से साधक को अछूता रख सके। यह पूर्णतः नरम, कोमल, चिकना, मसृण और संवेदनशील होना चाहिये — जिसमें यह भगवत्कृपा के संस्पर्श और प्रभाव को बरोबर अनुमान करता रहे। किसी भी व्यक्तिगत वासना, किसी भी अहंकार पूर्ण माँग या पूर्ति के द्वारा समर्पण को कलंकित नहीं करना चाहिये। चित्त सर्वथा शुद्ध और निर्मल हो, स्थिर हो, दृढ़ हो और हमारी समस्त इच्छाएं पुञ्जीभूत होकर भगवान को पुकार सकें, भगवान को ही प्राप्त करने के लिए तड़फ उठें! अहंकार को तो एकदम मिटा देना होगा। निःशेष कर देना पड़ेगा। साधक को इस बात का दृढ़ विश्वास होना चाहिये कि मनुष्य भगवान के हाथ यन्त्रमात्र है, भगवान उससे जो कुछ कराना चाहते हैं वही उसे करना पड़ता है। उसे यह अनुभव करना चाहिये कि स्वयं भगवान ही उसके प्राणों के प्राण हैं, जीवन के जीवन हैं, मस्तिष्क में बैठकर भगवान ही विचार करते हैं और हृदय में बैठकर वही आनन्द की तृप्ति करते हैं।

साधना के दो घोर शत्रु हैं अहंकार और ममकार, मैं और मेरा। इनके नाम मात्र से भी साधना के क्षेत्र से सब कुछ चौपट हो जाता है। बुद्धि के द्वारा आत्मा को अनात्मा से पृथक् करके भगवान के पथ में आगे बढ़ना चाहिये

मन इन्द्रियों पर पूरी चौकसी रखे। इन्द्रियाँ कभी-कभी मदमाते उद्दाम घोड़ों की तरह खाई-खंदक में फेंक गिराती हैं और मनुष्य विषय-वासनाओं के जंगल में भटकता फिरता है। मनुष्य अज्ञान के हाथ की कटपुतली हो जाता है। मन तो विषयों का स्फुरण स्थान है। मन हृदय में डूब जाये और हृदय में भगवान की ज्योति सदैव जगमगाती रहे—फिर चाहिए क्या? हृदय को इस बात का पूरा-पूरा विश्वास हो जाना चाहिए कि अधोगामी विषयों में कुछ भी नहीं है और प्रेम करने योग्य कोई वस्तु है तो वह है परम प्रियतम प्राणधन हरि। जब दिव्य प्रेम हृदय को स्पर्श करता है तो मार्ग अपने-ही आप सुगम हो जाता है और सारी कठिनाइयाँ आप-ही-आप हल हो जाती हैं। तब तो ऐसा होता है कि हमारा परम प्रियतम हमें अपनी भुजाओं में बांध कर अपने साथ लिए फिरता है। जब मन, बुद्धि, प्राण भगवान में डूब जायें, जब हृदय में उसी एक 'दिलबर' के लिए उसी एक 'महबूब' के लिए तड़फ रह जाये — बस, प्यार-भरी तड़फ और तड़पता हुआ प्यार रह जाये जब जगत् के भोग विलासों से चित्त आप-ही आप फिर जाये। जब साधक यह समझे, यह अनुभव करे कि शरीर जाये तो जाये, परन्तु भगवान के जाये बिना नहीं रह सकूंगा, जब उसे जीवन की अपेक्षा भी प्रभु प्रिय लगें तब उसे समझना चाहिए कि भगवदीय चेतना का उसमें अवतरण एवं स्फुरण हुआ है। तभी उस पर भगवान की दया उतरती है, दिव्य प्रकाश उस पर अपने आप बरसने लगता है। तभी उस के भीतर भागवती इच्छा अपना कार्य करने लगती है। साधक तब यह समझता है कि वह भगवान के हाथ का एक यन्त्रमात्र है और भगवान को जो इच्छा होती है वही उसके द्वारा कराता है। अन्यथा कुछ हो ही नहीं सकता। वह यह अनुभव करता है कि उसके फुफ्फुस में भगवान ही सांस लेते हैं, भगवान ही उस के हृदय में बैठे प्यार करते हैं, उसकी बुद्धि में बैठे विचार करते हैं और उसकी आत्मा में रहकर आनन्द का आस्वादन करते हैं। यह है समर्पण की पराकाष्ठा। इसके द्वारा मनुष्य स्वतः निश्चिन्त निर्द्वन्द्व और निर्लेप रहता है और उसके द्वारा भागवती शक्ति अपना कार्य करने लगती है। साधक अपने हृदय में भगवान के साथ नित्य युक्त रहता है। साधक भगवान को नहीं छोड़ता, भगवान साधक को नहीं छोड़ते। साधक का निवास होता है भगवान में,

भगवान का निवास होता है साधक में। इस प्रकार के समर्पण की प्रक्रिया हमारे प्राचीन ऋषियों-मुनियों ने बतलायी है और यही है इस युग के लिए परम साधन।

सिद्ध पुरुष

सिद्ध पुरुष यह जानता है कि भगवान ही उसकी आत्मा हैं। वह डंके की चोट से कह सकता है कि मैं आत्मा हूँ, मैं ब्रह्म हूँ। परन्तु सिद्ध पुरुष इस कारण किसी ऐसे भ्रम या अहंकार में नही पड़ेगा कि वह सोचने लगे कि वह सर्वशक्तिमान है, सर्वव्यापक है और स्वयं भगवान है या उसका प्रतिनिधि है। समाधि-साधकों को तो इस दिशा में बहुत ही सतर्क रहने की आवश्यकता है। नाम मात्र का अहंकार भी उसे ले डूबेगा। मनुष्य तो सीमाओं से आबद्ध है। वह ईश्वर का अंश अवश्य ही है, परन्तु ईश्वर नहीं है। अंश पूर्ण बराबर नहीं हो सकता, सूर्य की एक किरण सूर्य के समान नहीं हो सकती। जल का एक कण लघु सागर है—इसमें कोई संदेह नहीं है, परन्तु यह पूर्ण सागर तो नहीं है। साधक सदैव इस बात का ध्यान रखे कि वह जीवित है, क्योंकि भगवान का उसमें निवास है; वह सांस लेता है, क्योंकि भगवान उसके भीतर सांस लेते हैं; वह सोचता विचारता है, इस लिए कि उसकी बुद्धि में बैठे हुए भगवान अपनी बुद्धि से, उसकी बुद्धि को प्रकाशित किए हुए हैं और वह भगवान का साक्षात्कार करता है, क्योंकि भगवान ही उसके साथ सत्ता हैं। डायनेमो बिजली के प्रवाह से चलता है। स्वयं मशीनों में क्या शक्ति है कि कुछ भी कर सकें। उस अनन्त शक्ति के एक कण-मात्र से समस्त लोक-लोकान्तरों में जीवन-प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। उसी शक्ति से यह जगत्-चक्र चल रहा है। मनुष्य उस शक्ति-कण का करोड़वें हिस्से का भी करोड़वां हिस्सा है या उससे भी कम। इसलिए उसे यह भूल नहीं जाना चाहिये कि चाहे कितनी भी उसकी शक्ति क्यों न हो, वह देश और काल से सीमित है, परिच्छन्न है और वह कदापि उस अनन्त सर्वशक्तिमान प्रभु की समानता नहीं कर सकता। इसलिए मनुष्य मात्र के लिए एक ही मार्ग है और वह मार्ग है समर्पण का। जिस प्रकार एक माला के मनके धागे में पिरोये रहते हैं उसी प्रकार जप से लेकर समाधि तक समस्त साधनों का मूल आधार है यह समर्पण, सर्वस्वसमर्पण, निःशेष सर्वात्मसमर्पण।

समर्पण

प्रभो! मेरे देवाधिदेव! मैं यह भूलूं नहीं कि तुम सदैव मेरे हृदयदेश में निवास करते हो। तुम्हीं मेरे जीवन के सूत्रधार हो। इस क्षण-क्षण बदलने वाले, पल-पल में बनने मिटने वाले संसार में जो कुछ भी हो रहा है, जो कुछ सामने आ रहा है, जो कुछ भी हिल-डुल रहा है और फिर आंखों से ओझल हो रहा है वह सारा ही तुम्हारी सत्ता से अनुप्राणित है, स्पन्दित है। मेरा मन प्राण तुम में ही निवास करे, और मेरा यह ज्ञान, यह चेतना बनी रहे कि तुम्हारी इच्छा के सिवा मेरी कोई गति नहीं, कोई आश्रय नहीं, कोई शरण नहीं, कोई अस्तित्व नहीं। यह शरीर तो मृत पिण्ड है, यह सजीव इस लिए है कि तुम इसमें सांस लेते हो। ओ मेरे प्रियतम! मेरे प्राणाराम! मैं अपने हृदय देश में सतत तुम्हारा आलिंगन-रस पाता रहूँ। जो कुछ करूँ तुम्हारी प्रेरणा और संकेत से; तुम मेरे द्वारा अपना कार्य करो, अपना उद्देश्य साधो, मेरे हृदय में तुम्हारा ही प्रेम विराजे, तुम ही प्रेम रूप में विराजो; मेरी बुद्धि में तुम ही प्रकाश-रूप बने रहो: मेरे मस्तिष्क में तुम ही विचार करो। मेरे समस्त अहंकार को अपने में डुबो लो। प्रभो! मेरे अन्दर तुम्हारे सिवा कुछ भी रह न जाए, तुम-ही-तुम रह जाओ। हे सर्वशक्तिमान! सर्व समर्थ स्वामिन्! भले ही मैं समाधि की अवस्था में तुम से एकाकार होकर तुम्हारी तरह हो जाऊं परन्तु यह भूलकर भी मैं न मान बैठूं कि मैं तुम्हारे सदृश हूँ। मैं हूँ ही क्या? एक तुच्छ नगण्य नाचीज—जो कि अपनी एक-एक सांस के लिए तुम्हारी कृपा पर अवलम्बित है, तुम्हारी दया का मुंह जोहता है। तुम्हारे अनन्त महासागर के सम्मुख इस कण की क्या हस्ती है? प्रभो! मेरा अहंकार तुम ले लो। मेरे दयामय हरि! मुझे नम्रता, दीनता प्रदान करो। ओ मेरे स्वामी! तुम्हारी इच्छा मेरे जीवन में पूर्ण हो, वही मेरे भीतर बाहर हो—तुम ही मेरे भीतर साधना करो और तुम ही मेरे, भीतर सिद्ध होकर अपनी इच्छा पूर्ण करो।

2

श्रीगणेश-साधना

प्रथम चरण

सबसे पूर्व आदि पूज्य, विघ्न-नाशक श्रीगणेश जी के मन्त्र साधन की विधि यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

श्रीगणेश साधन मन्त्र—"ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व्वजनम्मे वशमानय ठः ठः।"

श्रीगणेश पूजन यन्त्र—निम्न प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर बना करके गणेश जी का पूजन करना चाहिए।

पूजन विधि—सबसे पहले प्रातःकाल नित्य कृत्यादि से निवृत्त होकर पीठ शक्तियों का न्यास करना चाहिए। यन्त्रस्थ केशर में पीठ शक्तियों का इस प्रकार पूजन करें :—

ओं तीव्रायै नमः, ओं ज्वालिन्यै नमः, ओं नन्दायै नमः, ओं भोगदायै नमः, ओं कामरूपिण्यै नमः ओं उग्रायै नमः, ओं तेजोवत्यै नमः, ओं रात्यायै नमः ओं विघ्ननाशिन्यै नमः।"

इसके पश्चात् मध्य में सर्वशक्तिकमलासनाय नमः, कहना चाहिए।

ऋष्यादि न्यास—इसके उपरांत ऋष्यादि न्यास करना चाहिए जो इस प्रकार है :—

"शिरसि गणक ऋषये नमः।
मुखे निचृद्गायत्रीच्छन्दसे नमः।
हृदि गणपतये देवतायै नमः।"

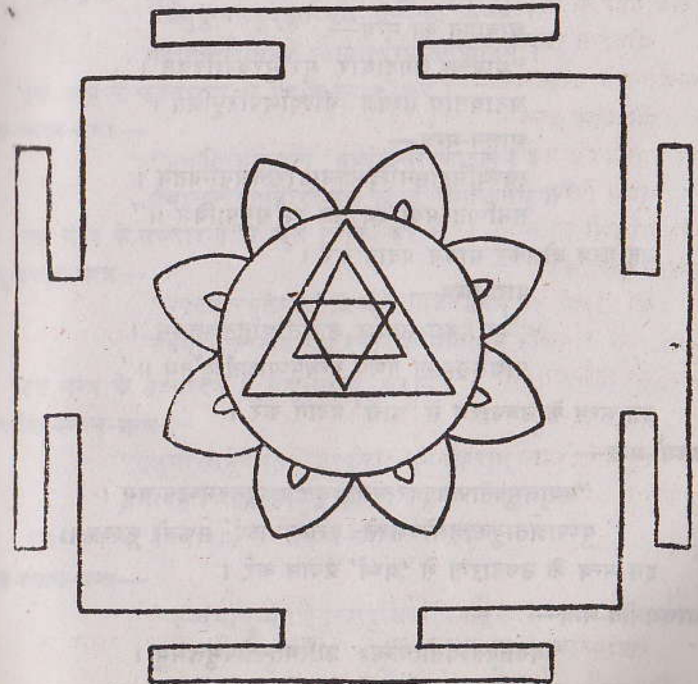
करांगन्यास—इसके उपरान्त कराङ्ग न्यास निम्न प्रकार से करना चाहिए—

ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां अंगुष्ठाभ्यान्नमः।

ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गीं तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा।
ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गूं मध्यमाभ्यां वषट्।
ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गैं अनामिकाभ्यां हुम्।
ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गौं कनिष्ठाभ्यांव्वषट्।
ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

बिल्कुल इसी प्रकार हृदयादि में करना चाहिए।

कुछ विद्वानों का मत है "ओं गां हृदयाय नमः, ओं गीं शिरसे स्वाहा—" आदि षट् तत्त्व बीजों से दीर्घ मात्रा प्रकल्पित की गई है। इसे वैशिष्ट्य समझना चाहिए।



षोडशोपचार क्रम से पूजाविधि—

ध्यान-मन्त्र—

एकदन्तं शूर्पकर्ण्णङ्गजवक्त्रञ्चतुर्भुजम् ।
पाशांकुशधरन्देवम्मोदकान्बिभ्रतङ्करैः ॥
रक्तपुष्पमयीम्मालां कण्ठे हस्ते परां शुभाम् ।
भक्तानांम्वरदं सिद्धिबुद्धिभ्यां सेवितं सदा ॥
सिद्धिबुद्धिप्रदन्नृणान्धर्म्मार्थकाममोक्षदम् ।
ब्रह्मरुद्रहरीन्द्राद्यैस्संस्तुतम्परमर्षिभिः ॥"

उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करते समय 'ध्यान' करना चाहिए ।

आवाहन का मन्त्र—

"आगच्छ जगदाधार सुरासुरवरार्च्चित ।
अनाथनाथ सर्व्वज्ञ गीर्व्वाणपरिपूजित ।"

आसन-मन्त्र—

स्वर्ण्णसिंहासनन्दिव्यन्नानारत्नसमन्वितम् ।
समर्प्पितम्मया देव तत्र त्वं समुपाविश ॥"

यह मन्त्र बोलकर आसन प्रदान करें ।

पाद्य-मन्त्र—

"देव देवेश सर्व्वेश सर्व्वतीर्थाहृतञ्जलम् ।
पाद्यङ्गृहाण गणप गन्धपुष्पाक्षतैर्य्युतम् ॥"

इस मन्त्र के उच्चारण से 'पाद्य' प्रदान करें ।

अर्घ्य-मन्त्र—

"प्रवालमुक्ताफलपूगरत्नन्ताम्बूलजाम्बूनदमष्टगन्धम् ।
पुष्पाक्षतायुक्तममोघशक्ते दत्तम्मयार्घ्यं सफली कुरुष्व ॥

इस मन्त्र के उच्चारण से 'अर्घ्य' प्रदान करें ।

आचमनीय-मन्त्र—

"गंगादिसर्व्वतीर्त्थेभ्यः प्रार्त्थितन्तोयमुत्तमम् ।
कर्प्पूरैलालवंगादिवासितं स्वीकुरु प्रभो ॥"

इस मन्त्र के उच्चारण से 'आचमनीय' प्रदान करें ।

तैल-मन्त्र—

"चम्पकाशोकबकुलमालतीमल्लिकादिभिः ।
वासितं स्निग्धताहेतुन्तैलञ्चारु प्रगृह्यताम् ।"

इस मन्त्र के उच्चारण से 'तैल' प्रदान करें ।

दुग्ध-स्नान-मन्त्र—

"कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषाञ्जीवनम्परम् ।
पावनं यज्ञहेतुन्ते पयः स्नानार्त्थमर्पितम् ॥"

इस मन्त्र के उच्चारण से 'दुग्ध-स्नान' करें ।

दधि-स्नान-मन्त्र—

"धेनुदुग्धसमुद्भूतं शुद्धं सर्व्वगतं प्रियम् ।
मयानीतन्दधिवरं स्नानार्त्थम्प्रतिगृह्यताम् ।"

इस मन्त्र के उच्चारण से "दधि-स्नान' करें ।

घृत-स्नान-मन्त्र—

"नवनीतसमुत्पन्नं सर्व्वसन्तोषकारणम् ।
यथाङ्गन्देवताहारङ्घृतं स्नातुं समर्प्पितम् ॥"

इस मन्त्र के उच्चारण से 'घृत स्नान' करें ।

मधु-स्नान-मन्त्र—

"रक्तसारघसम्भूतं सर्व्वतेजोविवर्द्धनम् ।
सर्वपुष्टिकरन्देव मधु स्नानार्त्थमर्प्पितम् ।"

इस मन्त्र के उच्चारण से मधु-स्नान' करायें ।

शर्करा-स्नान-मन्त्र—

"इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां सुमनोहराम् ।
मलापहारिणीं स्नातुङ् गृहाण त्वम्मयार्प्पिताम् ॥"

इस मन्त्र के उच्चारण से 'शर्करा-स्नान' करायें ।

गुड-स्नान-मन्त्र—

"सर्व्वमाधुर्य्यताहेतुस्वादुस्सर्व्वप्रियङ्करः ।
पुष्टिकृत्स्नातुमानीत इक्षुसारभवो गुडः ॥"

इस मन्त्र के उच्चारण से 'गुड़-स्नान' करायें ।

मधुपर्क-मंत्र—

"कांस्ये कांस्येन पिहितो दधिमध्वाज्यपूरितः ।
मधुपर्क्को मयानीतः पूजार्त्थम्प्रतिगृह्यताम् ॥"

इस मन्त्र के उच्चारण से 'मधु-पर्क' प्रदान करें ।

शुद्धोदक-स्नान-मंत्र—

"सर्व्वतीर्त्थाद्धृतन्तोयम्मया प्रार्त्थनया विभो ।
सुवासितङ् गृहाणेदं सम्यक् स्नातुं सुरेश्वर ॥"

इस मंत्र के उच्चारण से शुद्धोदक-स्नान करायें ।

वस्त्र-मंत्र —

"रक्तवस्त्रयुगन्देव लोकलज्जानिवारणम् ।
अनर्घ्यमतिसूक्ष्मञ्च गृहाणेदम्मयार्पितम् ॥"

यज्ञोपवीत-मंत्र—

"राजतम्ब्रह्मसूत्रञ्च काञ्चनं रक्तसंय्युतम् ।
भक्त्या मयार्पितं देव गृहाण परमेश्वर ।"

इस मंत्र के उच्चारण से 'यज्ञोपवीत' प्रदान करें ।

आभूषण-मंत्र—

"अनेकरत्नयुक्तानि भूषणानि बहूनि च ।
तत्तदङ्गे काञ्चनानि योजयामि तवाज्ञया ॥"

इस मन्त्र के उच्चारण से 'आभूषण' प्रदान करें ।

चन्दन-मंत्र—

अष्टगन्धसमायुक्तं रक्तचन्दनमुत्तमम् ।
द्वादशाङ्गेषु ते देव लेपयामि कृपाङ् कुरु ॥"

इस मंत्र के उच्चारण से 'चन्दन' प्रदान करें ।

अक्षत-मंत्र—

"रक्तचन्दनसंमिश्रांस्तन्दुलांस्तिलकोपरि ।
शोभायै सम्प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वर ॥"

इस मंत्र के उच्चारण से 'अक्षत' प्रदान करें ।

पुष्प-मंत्र—

"पाटलं कर्णिकारञ्च गन्धकं रक्तपङ्कजम् ।
मोगरम्मालतीपुष्पं गृहाण सुमनोहरम् ।"

इस मंत्र के उच्चारण से 'पुष्प' प्रदान करें ।

धूप-मंत्र—

"दशाङ्गङ्गुग्गुलन्धूपं सर्व्वसौगन्ध्यकारकम् ।
सर्व्वपापक्षयकरन्त्वं गृहाण मयार्प्पितम् ॥"

इस मंत्र के उच्चारण से 'धूप' प्रदान करें ।

दीपक-मंत्र—

"सर्व्वज्ञ सर्वलोकेश तमोनाशनमुत्तमम् ।
गृहाण मङ्गलन्दीपन्देव देवनमोऽस्तु ते ।"

इस मंत्र के उच्चारण से 'दीपक' प्रदर्शित करें ।

नैवेद्य-मंत्र—

"नानापक्वान्नसंयुक्तम्पायसं शर्करान्वितम् ।
नानाव्यञ्जनशोभाढ्यं शाल्योदनमनुत्तमम् ॥
दधिदुग्धघृतैय्युक्तं लवङ्गैलासमन्वितम् ।
मरीचिचूर्णसहितन्वथिकावटकान्वितम् ॥
राजिकाधान्यसंय्युक्तम्मेथीपिष्टं सतक्रकम् ।
हिङ्गुजीरककूष्माण्डम्मरीचिमाषपिष्टकैः ॥
सम्पादितैः सुपक्वैश्च भर्जितैर्व्वटकैर्य्युतम् ।
मोदकापूपलड्डूकशष्कुलीमण्डकादिभिः ॥
पर्प्पटैरपि सय्युक्तन्नैवेद्यममृतान्वितम् ।
हारिद्राहिङ्गुलवणसहितं सूपमुत्तमम् ॥
ससामुद्रं गृहाणेदम्भोजनङ् कुरु सादरम् ॥"

इन मंत्रों के उच्चारण से 'नैवेद्य' प्रदान करें ।

आचमनीय-मंत्र—

"सुतृप्तिकारकन्तोयं सुगन्धञ्च पिबेच्छया ।
त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तन्नित्यतृप्ते महात्मनि ॥

उत्तरापोशनार्थन्ते दधि तोयं सुवासितम् ।
मुखपाणिविशुद्ध्यर्थम्पुनस्तोयन्ददामि ते ॥"

इस मंत्र के उच्चारण से 'आचमनीय' प्रदान करें ।

फल-मंत्र—

"दाडिमम्मधुरन्निम्बुजम्वाम्रपनसादिकम् ।
द्राक्षारम्भाफलम्पक्वङ्कर्कन्धू: खार्जुरम्फलम् ॥
नारिकेलञ्च नारिङ्गमञ्जिरञ्जम्बिरन्तथा ।
उर्वारुकञ्च देवेश फलान्येतानि गृह्यताम् ॥"

आचमनीय कर उद्वर्त्तनादि मंत्र—

"मुखपाणिविशुद्ध्यर्थम्पुनस्तोयन्ददामि ते ।
गृहाण चन्दनञ्चारु कराङ्गोद्वर्तनं शुभम् ॥"

इस मंत्र द्वारा 'आचमनीय सहित करोद्वर्त्तन' प्रदान करें ।

सिन्दूर मंत्र—

"चारुश्मलूरसम्भूतंव्वंशसारसमुद्भवम् ।
सीमन्तभूषणञ्चूर्णल्लाक्षारञ्जितमस्तु ते ॥"

इस मंत्र के उच्चारण से 'सिन्दूर' प्रदान करें ।

ताम्बूल-मंत्र—

"सचन्द्रपूगवर्णाढ्यङ्खाद्यखादिरसंय्युतम् ।
एलालवङ्गसंमिश्रं ताम्बूलङ्करसान्वितम् ॥"

इस मंत्र द्वारा 'ताम्बूल' प्रदान करें ।

दक्षिणा-मंत्र—

"न्यूनातिरिक्तपूजायाः सम्पूर्णफलहेतवे ।
दक्षिणाङ्काञ्चनीन्देव स्थापयामि तवाग्रतः ॥"

इस मंत्र द्वारा 'दक्षिणा' प्रदान करें ।

माला मंत्र—

"सितपीतैस्तथा रक्तैर्ज्जलजैः कुसुमैः शुभैः ।
ग्रथितां सुन्दराम्मालाङ्गृहाण परमेश्वर ॥"

इस मंत्र के उच्चारण से 'माला' प्रदान करें ।

दूर्वा-मन्त्र—

"हरिता श्वेतवर्णा वा पञ्चत्रिपत्रसंय्युताः ।
दूर्वाङ्कुरा मया दत्ता एकविंशतिसम्मिताः ॥

इस मन्त्र द्वारा 'दूर्वा' प्रदान करें ।

प्रदक्षिणा-मन्त्र—

"एकविंशतिसंख्याकाः कुर्य्यादिव प्रदक्षिणाः ।
पदे पदे ते देवेश नश्यन्तु पातकानि मे ॥"

इस मन्त्र द्वारा 'प्रदक्षिणा' करें ।

आरात्तिक-मंत्र—

"औदुम्बरे राजते वा कांस्ये काञ्चनसम्भवे ।
पात्रे प्रकल्पितान्दीपान्गृहाण चतुरर्पितान्
पञ्चारात्तिम्पञ्चदीपैर्द्दीपिताम्परमेश्वर ।
चारुचन्द्रनिभं दीपं गृहाण वीचिवारणम् ॥
यथास्य नेक्ष्यते भस्म तथा पापं विनाशय ॥"

श्रीगणेश षडाक्षर-मन्त्र—

"वक्रतुंडाय हुं ।"

यह श्रीगणेश जी का षडाक्षर मन्त्र है ।

इस मन्त्र के भार्गव ऋषि अनुष्टुप् छन्द, विघ्नेश देवता व बीजशक्ति है तथा अभीष्ट सिद्धि में इसके जप का विनियोग है ।

साधनविधि—

प्रथम षडङ्गन्यास करके एक लाख की संख्या में मन्त्र का जप करके अष्ट द्रव्यों द्वारा दशांश होम करें ।

ध्यान का स्वरूप—

इस मन्त्र के साधन में श्रीगणेश जी का ध्यान इस प्रकार कहा गया है :—

"उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः
पाशांकुशाभयवरान्दधतं गजास्यम् ।

"रक्तांबरं सकलदु:खहरं गणेशं
ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥"

अन्य सभी क्रियायें पूर्वोक्त मन्त्र की भाँति ही करें। अष्ट द्रव्यों के सम्बन्ध में इस प्रकार कहा गया है —

"इक्षव: सक्तवो रंभाफलानि चिपिटास्तिला: ।
मोदका नारिकेलानि लाजा द्रव्याष्टकं स्मृतम् ॥"

विनायक के इस मन्त्र के साथ मन्त्र में पीठशक्तियों का पूजन करें। पीठशक्तियों के नाम इस प्रकार हैं :—

(1) तीव्रा, (2), चालिनी, (3) नंदा, (4) भोगदा, (5) कामरूपिणी, (6) उग्रा, (7) तेजोवती, (8) सत्या और (9) विघ्ननाशिनी ।

प्रतिदिन दो सहस्र की संख्या में 6 मास तक इस मन्त्र का जप करने से दरिद्रता नष्ट हो जाती है।

श्रीगणेश जी का एकत्रिशद्वर्ण मंत्र—

"रायस्पोषस्य ददिता निधिदो रत्नधातुमान्नक्षोहणीबलगहनो वक्रतुंडाय हुं।"

यह श्रीगणेश जी का मन्त्र इकत्तीस वर्णों का है। इसकी साधन विधि व पूजनविधि पूर्वोक्त मन्त्र की भाँति ही की जाती है।

श्रीगणेश जी के अन्य मंत्र—

"मेघोल्काय स्वाहा।" इस मन्त्र का जप एक लाख की संख्या में करना चाहिए। अन्य सब विधियाँ पूर्ववत् हैं।

"हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा।"

इस मन्त्र का जप भी एक लाख की संख्या में करना चाहिए। अन्य सभी विधियां पूर्ववत् हैं।

ओं ह्रीं ग्रीं ह्रीं ।

इस चार अक्षर के मंत्र की साधन विधि भी पूर्ववत् ही है।

लक्ष्मी-गणेश-मन्त्र—

"ओं श्रीं गं सौम्याय गणपतये वरवरद
सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।"

यह अट्ठाईस वर्ण वाला मन्त्र लक्ष्मीगणेश का है।

इस लक्ष्मी विनायक मन्त्र के अन्तर्यामी ऋषि, गायत्री छन्द, लक्ष्मी विनायक देवता, बीज तथा स्वाहा शक्ति हैं। अभीष्ट सिद्धि के लिये इसके जप का विनियोग है। इस मत्र का चार लाख की संख्या में जप करके विल्व की समिधाओं से दशांश होम करना चाहिए।

(1) वलाका, (2) विमला, (3) कमला, (4) वनमालिका, (5) विभीषिका, (6) मालिका, (7) शाङ्करी (8) सुवालिका। —इन आठ शक्तियों की अंग पूजा करनी चाहिए। दक्षिण तथा वामपार्श्व में शंख और पद्मनिधि की पूजा करनी चाहिए तथा लोकपाल और उनके अस्त्रों की बाह्य भाग में पूजा करनी चाहिए। इस विधि द्वारा साधन करने पर मंत्र सिद्ध हो जाता है तथा साधक की समस्त मनोभिलाषायें पूर्ण हो जाती हैं। नाभिपर्यन्त जल में खड़े होकर सूर्यमण्डल की ओर दृष्टि गढ़ाये हुए इस मंत्र का तीन लाख की संख्या में जप करने से धन की वृद्धि होती है।

त्रैलोक्यमोहनकर गणेश-मंत्र—

वक्रतुण्डकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर
वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

इस मंत्र के गणक ऋषि, गायत्री छन्द तथा त्रैलोक्य मोहनकर गणेश देवता हैं। अभीष्ट सिद्धि में इनके जप का विनियोग है।

ध्यान और जप—

गदाबीजपूरे धनुशूलचक्रे सरोजोत्पले पाशधान्याग्रदन्तान्।
करै: सन्दधानं स्वशुंडाग्रराजन्मणिकुम्भमकाधिरूढं स्वपत्न्या।
सरोजन्मनीं भूषणानां भरेणोज्ज्वलद्धस्ततन्व्या समालिङ्गिताङ्गम्।
करीन्द्राननं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रं जगन्मोहनं रक्तकान्तिं भजेत्तम्।

उपरोक्त मंत्र का चार लाख की संख्या में जप करके अष्ट द्रव्यों का दशांश होम करना चाहिए तथा पूर्वोक्त पीठों एवं दिक्पालों की उनके अस्त्रों

सहित पूजा करनी चाहिए। इस मंत्र को सिद्ध करके आप तीनों लोकों को मोहित कर सकते हैं।

हरिद्रा गणेश मंत्र—

"ओं हुँ गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वरद सर्वजन-
हृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा।"

इस मंत्र के मदन ऋषि, अनुष्टुप् छन्द तथा हरिद्रा गणनायक देवता हैं। अभीष्ट सिद्धि के लिए इसके जप का विनियोग है।

ध्यान और जपविधि—

इस मंत्र का ध्यान निम्न प्रकार से करें—

"पाशाङ्कुशौ मोदकमेकदन्तं करैर्दधानं कनकासनस्थम्।
हरिद्रखण्डं प्रतिमं त्रिनेत्रं पीतांशुकं रात्रिगणेशमीडे।"

इस मन्त्र का चार लाख की संख्या में जप करके हरिद्रा चूर्ण मिश्रित दशांश चावलों का होम करना चाहिए तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए, पूर्वोक्त पीठ, अङ्ग मातृकादि का पूजन करना चाहिए। शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को क्वारी कन्या के हाथ से हरिद्रा (हल्दी) पिसवा कर अपने शरीर पर लेप करके स्नानोपरान्त गणेश जी का पूजन करके तर्पण करते हुए आठ सहस्र की संख्या में मन्त्र का जप करके, घृत मिश्रित पुओं का एक सौ की संख्या में हवन करके ब्रह्मचारियों को भोजन कराये तथा कुमारियों को सन्तुष्ट कर, गुरु से अभिलषित फल की प्राप्ति होती है। शत्रुओं का मुख स्तंभित होता है। जल, अग्नि, चोर, सिंह आदि हिंस्र जन्तुओं का निरोध होता है।

वन्ध्या स्त्री को रजस्नान से निवृत्त होकर गणेश जी का पूजन करना चाहिए तथा एक पल हल्दी को गोमूत्र में पीसकर उसको एक हजार की संख्या में इस मन्त्र से अभिमंत्रित करना चाहिए। फिर कन्या तथा ब्रह्मचारियों को लड्डुओं का भोजन कराना चाहिए। तत्पश्चात् पूर्ववत् हल्दी का पूजन करना चाहिए तथा उक्त अभिमंत्रित पिसी हुई हल्दी का पान करना चाहिए। इस प्रकार करने से गुणवान् पुत्र की प्राप्ति होती है।

उच्छिष्ट गणेश साधन
(द्वितीय चरण)

यहाँ पर अब उच्छिष्ट गणेश साधन मन्त्र एवं पूजन-विधि प्रस्तुत की जा रही है।

उच्छिष्टगणेश मन्त्र :—

(क) 'ओं हस्तिपिशाचिनि खे ठः ठः।'

(ख) 'ओं हस्तिपिशाचिनि खे स्वाहा।'

(ग) 'गं हस्तिपिशाचिनि खे स्वाहा।'

उपरोक्त तीनों मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र द्वारा उच्छिष्ट-गणेश का साधन किया जा सकता है

इस देवता की आराधना में तिथि, वार आदि का कोई नियम नहीं है उपवास आदि करने की आवश्यकता नहीं होती। जो मनुष्य जिस मनोरथ से इस देवता की आराधना करता है उसकी वह अभिलाषा पूर्ण होती है।

प्रयोग विधि—

सामान्यविधि के अनुसार प्रातः कृत्यादि से निवृत्त होकर प्राणायाम के पश्चात् सभी कार्यों का सम्पादन करना चाहिए। उसके पश्चात् ऋष्यादि न्यास करना चाहिए।

ऋष्यादि न्यास इस प्रकार करें :—

"शिरसि सुघोरऋषये नमः।
मुखे निबिडगायत्रीछन्दसे नमः।
हृदि उच्छिष्टगणपतये नमः।"

कराङ्ग-न्यास—

ऋष्यादि न्यास के पश्चात् निम्नलिखित विधि से कराङ्ग न्यास करना चाहिए।—

ओं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ओं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ओं मध्यमाभ्यां वषट्।
ओं अनामिकाभ्यां हुं।

ओं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ।
ओं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट ।
ओं हृदयाय नमः ।
ओं शिरसे स्वाहा ।
ओं शिखायै वषट् ।
ओं कवचाय हुँ ।
ओं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ओं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

इस विधि से कराङ्ग न्यास करने के पश्चात् ध्यान करना चाहिए ।

ध्यान का स्वरूप—

"रक्तमूर्ति गणेशं च सर्वाभरणभूषितम् ।
रक्तवस्त्रं त्रिनेत्रं च रक्तपद्मासने स्थितम् ॥
चतुर्भुजं महाकायं द्विदन्तं सस्मितानन्म् ।
इष्टं च दक्षिणे हस्ते दन्तं च तदधः करे ॥
पाशांकुशौ च हस्ताभ्यां जटामण्डलवेष्टितम् ।
ललाटे चन्द्ररेखाढ्यं सर्वालंकारभूषितम् ॥"

भावार्थ—"उच्छिष्ट गणेश रक्त वर्ण हैं। उनके वस्त्र, पहिनावा तथा नेत्र लाल वर्ण के हैं। रक्त-कमल के आसन पर विराजमान हैं। उनके चार हाथ हैं, शरीर बड़ा है, दो दाँत हैं तथा मुख पर हास्य की रेखा सदैव विद्यमान रहती है। उनके दाँई ओर के ऊपर हाथ में वरमुद्रा है तथा नीचे का हाथ एक दांत को पकड़े हुये है। बांई ओर के ऊपर हाथ में पाश है तथा नीचे के हाथ में अंकुश है। उनके मस्तक पर जटामण्डल तथा अर्द्धचन्द्र सुशोभित है।"

पूजन विधि—

ध्यान के पश्चात् मूल मंत्र से अर्घ्य स्थापित करके, अर्घ्य के जल से पूजा के उपकरण द्रव्य तथा अपने शरीर पर छींटे देने चाहिएं। फिर दूसरी बार देवता का ध्यान करके उन्हें अष्टदल पद्म में स्थापित करे। फिर पंचोपचार से देवता की पूजा करके अष्टदल पद्म के पूर्वादि पत्र में 'ओं वक्रतुण्डाय

स्वाहा, ओं एकदन्ताय स्वाहा, ओं लम्बोदराय स्वाहा, ओं विकटाय स्वाहा, ओं विघ्नेशाय स्वाहा, ओं गजवक्त्राय स्वाहा, ओं विनायकाय स्वाहा, ओं गणपतये स्वाहा, तथा मध्य में ओं हस्तिमुखाय स्वाहा,

इस मंत्र से देवताओं की पूजा करे। फिर तीन मूल देवता ओं की पूजा करके, यथाशक्ति मूल मंत्र का जप करते हुए जप समर्पण करे।

इसके पश्चात् "ओं उच्छिष्टगणेशाय महाकालाय एष बलिर्नमः" इस मंत्र से बलि देकर, आचमनीयादि प्रदान करे। विशेष फल की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को "ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रूं फट् स्वाहा"—इस मंत्र से पुनर्वार बलि प्रदान करनी चाहिए, फिर एक पुष्प दक्षिण दिशा में फेंककर 'क्षमस्व' कहते हुए विसर्जन करना चाहिए।

पुरश्चरणविधि—

इस मंत्र के पुरश्चरण में सोलह सहस्र की संख्या में मंत्र का जप करना चाहिए। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी से आरम्भ करके शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तक स्त्री (पत्नी) के सहयोग से (साथ लेकर) प्रतिदिन एक सहस्र की संख्या में जप करना चाहिए। देवता को प्रतिदिन मधु से स्नान कराकर गुड़-पायस का नैवेद्य प्रदान करना उचित है। भोजनोपरान्त आचमन किए बिना ही उच्छिष्ट (जूठे) मुख से देवता का जप करना चाहिए।

श्वेत आक या लाल चन्दन द्वारा अंगुष्ठ प्रमाण उच्छिष्ट गणपति की प्रतिमूर्ति बनाकर उसमें प्राण प्रतिष्ठा पूर्वक, ब्राह्मण, अग्नि तथा गुरु के समीप सोलह सहस्र की संख्या में मंत्र का जप करने पर ही मंत्र की सिद्धि होती है। केवल मानसिक जप ही करना चाहिए। कुछ तन्त्रों के मतानुसार कराङ्ग न्यास नहीं करना चाहिए तथा "मैं स्वयं ही गणेश स्वरूप हूं" इस प्रकार चिन्तन करते हुये जप करना चाहिए। इस सम्बन्ध में गर्ग मुनि का यह कहना है कि निर्जन वन में बैठकर लाल चन्दन से लिप्त ताम्बूल (पान) को चबाते हुए जप करना चाहिए। अन्य तन्त्रानुसार साधक को सब प्रकार

के आभूषणों से विभूषित होकर जप करना चाहिए । एक अन्य तन्त्र के मतानुसार इस देवता की पूजा में लड्डू खाते हुए जप करना चाहिए ।

भृगु मुनि के मतानुसार उच्छिष्ट-गणपति की आराधना में फल भक्षण करते हुए जप करना चाहिए तथा विभीषण के मतानुसार नैवेद्य का भोजन करते हुए जप करना चाहिए ।

उच्छिष्ट गणेश का एकोनविंशति वर्णमन्त्र—

"ओं नमः उच्छिष्टगणेशाय हस्तिपिशाचिनि खे स्वाहा ।"

इसकी साधन विधि पूर्ववत् है । यह उन्नीस वर्ण का मन्त्र है ।

उच्छिष्ट गणेश का सप्तत्रिंशदक्षर मन्त्र—

"श्रों नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने श्रां क्रों ह्रीं गं घे घे स्वाहा ।"

यह सैंतीस अक्षर का मंत्र है और साधन विधि पूर्ववत् है ।

उच्छिष्ट गणेश का द्वात्रिंशद्वर्ण मंत्र—

"श्रों हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने
श्रां क्रों ह्रीं हूं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ।"

यह बत्तीस वर्ण का मन्त्र है, साधन विधि पूर्ववत् है ।

उच्छिष्ट गणपति के विशेष प्रयोग—

1. राजद्वार, वन, सभा, गोत्र, समाज, विवाद, व्यवहार, युद्ध, शत्रु संकट, द्यूतक्रीड़ा, विपत्तिकाल, ग्रामदाह चोर-भय, तथा सिंह व्याघ्रादि का भय उपस्थित होने पर इस देवता के स्मरण से समस्त भयों का तथा विघ्न का नाश हो जाता है ।

2. मूल मन्त्र द्वारा अपामार्ग की समिधा को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके होम करने पर साधक को सौभाग्य की प्राप्ति होती है ।

3. इस मन्त्र द्वारा एक करोड़ की संख्या में होम करने पर अणिमादिक अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति होती है ।

4. इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर कंठ अथवा मस्तक पर धारण करने से सौभाग्य की वृद्धि तथा सर्वत्र रक्षा होती है ।

5. विवाहार्थी मनुष्य यदि पांच सहस्र की संख्या में इस मन्त्र का जप करे तो उसे श्रेष्ठ स्त्री की प्राप्ति होती है ।

6. जिस साध्य व्यक्ति का नाम लेकर मूलमन्त्र का एक सहस्र की संख्या में जप किया जाय, वह वशीभूत होता है ।

7. इस मन्त्र द्वारा दस सहस्र की संख्या में होम करके अभिलषित राजा को वशीभूत किया जा सकता है ।

8. उच्छिष्ट गणेश का मन्त्र एक लाख की संख्या में जपने पर राजा, दो लाख की संख्या में जपने पर राजा के समस्त कर्मचारी आदि वशीभूत होते हैं ।

9. बन्दर की हड्डी से बनी कील को मूल मंत्र से अभिमन्त्रित करके जिस मनुष्य के घर में गाड़ दिया जाये, उसका उच्चाटन होता है ।

10. उपर्युक्त प्रकार की कील को यदि किसी बाजार में गाड़ दिया जाये तो वहाँ क्रय-विक्रय का व्यापार अवरुद्ध हो जाता है ।

11. उपर्युक्त प्रकार की कील को यदि कलाल (शराब बनाने व बेचने वाले) के घर में गाड़ दिया जाये तो उसके घर में रखी हुई शराब बिगड़ जाती है ।

12. उपर्युक्त कील को यदि किसी वेश्या के घर में गाड़ दिया जाये तो उसका कोई आदर नहीं करता ।

13. उपर्युक्त कील को यदि किसी क्वारी कन्या के घर में गाड़ दिया जाये तो उसका विवाह नहीं होता ।

14. मनुष्य की हड्डी से बनी कील को मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करके किसी मनुष्य के घर में गाड़ दिया जाये तो उसकी मृत्यु हो जाती है । कील उखाड़ लेने पर दोष की शान्ति हो जाती है ।

3

गणपति-पूजन

किसी भी कार्य एवं साधन के प्रारम्भ में श्रीगणेश जी का पूजन करना अत्यावश्यक कहा गया है। अतः यहाँ हम श्रीगणेश जी के पूजन की विधि का वर्णन कर रहे हैं।

सर्वप्रथम साधक को चाहिए कि वह प्रातःकाल उठकर नित्य कर्म स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण कर, प्रथम सामग्री संकलन, आचमन, दीप-पूजन, अर्घ्य-स्थापन आदि कृत्य समाप्त करके सर्वविघ्ननाशक गणपति का पूजन प्रारम्भ करे।

सबसे पूर्व हाथ में दूर्वा, अक्षत (चावल) और पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का सस्वर उच्चारण करे—

ओं सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
नवरत्नमयं द्वीपं स्मरेदिक्षुरसाम्बुधौ ।
तद्वीचिधौतपर्यन्तमन्दमारुतसेवितम् ॥
मन्दारपारिजातादिकल्पवृक्षलताकुलम् ।
उद्भूतरत्नच्छायाभिररुणीकृतभूतलम् ॥
उद्यद्दिनकरेन्दुभ्यामुद्भासितदिगन्तरम् ।
तस्य मध्ये परिजातन्नवरत्नमय स्मरेत् ॥

ऋतुभिः सेवितं षड्भिरनिशम्प्रीतिवर्द्धनैः ।
तस्याधस्तान्महापीठरचिते मातृकाम्बुजे ।
षट्कोणान्तस्त्रिकोणाढ्यम्महागणपतिं स्मरेत् ॥
हस्तीन्द्राननमिन्दुचूडमरुणच्छायन्त्रिनेत्रं रसा-
दाश्लिष्टम्प्रियया सपद्मकरया स्वाङ्कस्थया सन्ततम् ।
बीजापूरगदाधनुस्त्रिशिखियुक्चक्राब्जपाशोत्पल-
कञ्जाभः स्वविषाणरत्नकलशौ हस्तैर्वहन्तम्भजे ।
गण्डपालीगलद्दानपूरलालसमानसान् ।
द्विरेफान्कर्णतालाभ्यां वारयन्तम्मुहुर्मुहुः ॥
कराग्रधृतमाणिक्यकुम्भवक्त्रविनिस्सृतै-
रत्नवर्षैः प्रीणयन्तं साधकम्मदविह्वलम्
माणिक्यमुकुटोपेतं रत्नाभरणभूषितम् ॥

उपरोक्त मन्त्रोच्चारण करके हाथ के दूर्वा अक्षत तथा पुष्प को गणेश की मूर्ति के समीप समर्पित करे।

तत्पश्चात् तिल, कुश और जल हाथ में लेकर निम्न संकल्प करे—

संकल्प

ओं विष्णुः विष्णुः विष्णुः नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय । विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्यब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे द्वितीये यामे तृतीये दिवसे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्य्यावर्तान्तर्गतदेशैकपुण्यक्षेत्रे, 'अमुक' सम्वत्सरे 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौ 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' उपयोगे 'अमुक' करणे, 'अमुक' वासरे, 'अमुक' राशिस्थिते सूर्ये चन्द्रे भौमे बुधे गुरौ भार्गवे शनौ राहौ केतौ तथा राशिस्थानस्थितेषु ग्रहेषु काले श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तचतुर्वर्गफलप्राप्तये एवं गुणवैशिष्ट्येन विशिष्टे 'अमुक' गोत्रः 'अमुक' राशिः 'अमुक' शर्मा वाऽहं मम करिष्यमाणासंस्कारकर्मणि भगवतो गणेशस्य तथा कलशस्थापनपुण्याहवाचननीराजनमातृकापूजनवसोधारानिपातनाभ्युदयिकनान्दीश्राद्धनवग्रहादीनां पञ्चोपचारेण वा षोडशोपचारेण निर्विघ्नतया कार्य्यसिद्धये पूजनं करिष्ये ।

इस संकल्प को पढ़कर हाथ के अक्षत पुष्प आदि को गणेश जी की प्रतिमा के समीप छोड़ दे। संकल्प में जहाँ-जहाँ 'अमुक' शब्द आया है वहाँ वहाँ यथोचित उच्चारण करे। इसके पश्चात् गणेश जी का नीचे लिखे अनुसार आवाहन करे।

आवाहन-मंत्र

"ओं एहि हेरम्ब त्वं मे देहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज। सिद्धिबुद्धिपते त्र्य लक्षलाभपितु: पित:। नागास्य नागहार त्वं गणराज चतुर्भज। भूषित: स्वायुधै दिव्यै: पाशाङ्कुशपरश्वधै:। आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतो:। इहागत गृहाण त्वं पूजाकर्तुश्च रक्ष मे।"

प्रतिष्ठापन के लिए मन्त्र निम्नलिखित है—

"ओं एतन्ते देव सवितुर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन माम मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु विश्वे देवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठेति।"

इस मंत्र से प्रतिष्ठापन करने के उपरान्त निम्न मंत्र से स्थापन करना चाहिए।

स्थापन-मंत्र

"ओं गणानां त्वेति प्रजापतिऋषिर्यजुश्छन्दो गणपतिदेवता गणपतिस्थापने विनियोग:।

ओं गणानां त्वा गणपतिं हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे व्वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। ओं भूर्भुव: स्व: गणपते इहागच्छ इहातिष्ठ। विनायक नमस्तेस्तु उमामलसमुद्भव। इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तम"

अब आसन देने के लिए

आसनमंत्र—

"सुमुखाय नमस्तुभ्यं गणाधिपतये नम:।
गृहाणासनमीश त्वं विघ्नपुञ्जं निवारय॥"

पाद्य मन्त्र—

"उमापुत्राय देवाय सिद्धवन्द्याय ते नम:।
पाद्यं गृहाण देवेश विघ्नराज नमोस्तु ते॥"
इस मंत्र से पाद्य प्रदान करे।

अर्घ्य-मंत्र—

"एकदन्त महाकाय नागयज्ञोपवीतक।
गणाधिदेवदेवेश गृहाणार्घं नमोस्तु ते॥"

पंचामृत-स्नान-मन्त्र—

"पयोदधिघृतक्षौद्रै: शर्करामिश्रितै: कृतम्।
पञ्चामृतं गृहाणेदं स्नानार्थं विघ्नभञ्जनम्॥"

स्नानीयजल-मन्त्र—

"नर्मदा चन्द्रभागादिगङ्गासङ्गमजैर्जलै:।
स्नापितोसि मया देव विघ्नं सद्य: निवारय॥"

स्थानीय जल के पश्चात् यज्ञोपवीत प्रदान करने के लिए यह मंत्र उच्चारण करे—

यज्ञोपवीत-मन्त्र—

"सूर्यंकोटिसमाभासं नागयज्ञोपवीतकम्।
सुवर्णमूले रचितमुपवीतं गृहाण मे॥"

वस्त्र-मन्त्र—

"रक्ताम्बरधर श्रेष्ठ पाशांकुशधरेश्वर।
वस्त्रयुग्मं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥"
वस्त्र प्रदान करने के पश्चात् आचमनीय प्रदान करना चाहिए -

आचमनीय मन्त्र—

"सुगन्धमिश्रतीर्थादिपूतं पानीयमुत्तमम्।
आचमार्थं गृहाण त्वं विघ्नराज वरप्रद॥"
आचमनीय के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से गन्ध प्रदान करना चाहिए।

गन्ध-मंत्र—

"ईशपुत्र नमस्तुभ्यं नमो मूषकवाहन।

गन्धं गृहाण देवेश सर्वसौख्यं विवर्धय ॥"

इसके उपरान्त अक्षत-प्रदान करे।

अक्षत-मंत्र—

"रक्तचन्दनसंमिश्रैरक्षतैर्योतयाम्यहम्।
सर्वभूतहितार्थाय विघ्नराज जगद्गुरो ॥"

पुष्प-मंत्र—

"पाटला मल्लिका दूर्वा शतपत्राणि विघ्नहृत्।
पुष्पं गृहाण देवेश विबुधप्रिय सर्वतः ॥"

उपरोक्त मन्त्र द्वारा पुष्प प्रदान करने के पश्चात् धूप प्रदान करने के लिए निम्न मन्त्र उच्चारण करे।

धूप-मंत्र—

"लम्बोदर महाकाय धूम्रकेतो नमो नमः।
धूपं गृहाण देवेश विघ्नपुञ्जं निवारय ।।"

दीपक-प्रदर्शन मंत्र—

"घृताक्तवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश रुद्रप्रिय नमोऽस्तु ते ॥"

दीपक के उपरान्त निम्न मन्त्र द्वारा नैवेद्य समर्पण करे।

नैवेद्य मंत्र—

"भालचन्द्र नमस्तुभ्यं विघ्नहृन्मोदकप्रिय।
नानाविधं गृहाणेदं नैवेद्यं कृपया प्रभो ॥"

नैवेद्य के उपरान्त नीचे लिखे मन्त्र द्वारा जल प्रदान करना चाहिए

जल-मंत्र—

"लम्बोदर महाकाय गौरीसुत नमोऽस्तु ते।
करानन विशुद्ध्यर्थं जलमेतद् गृहाण मे ॥"

अब फल प्रदान करने के लिए यह मन्त्र उच्चारण करे।

फल-मंत्र—

"इदं फलं मया देव स्थापित पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥"

फल चढ़ाने के पश्चात् पुष्प द्वारा जल के छींटे देते हुए इस प्रकार उचारे—

"ओं गणाधिपतये नमः दूर्वाङ्कुरयुग्मं समर्पयामि।
ओं उमापुत्राय नमः ,, ,, ,,।
ओं अघनाशिने नमः ,, ,, ,,।
ओं एकदन्ताय नमः ,, ,, ,,।
ओं इभवक्त्राय नमः ,, ,, ,,।
ओं मूषकवाहनाय नमः ,, ,, ,,।
ओं विनायकाय नमः ,, ,, ,,।
ओं ईशपुत्राय नमः ,, ,, ,,।
ओं सर्वसिद्धिप्रदायकाय नमः ,, ,,।
ओं कुमारगुरवे नमः ,, ,, ,,।
ओं चतुर्थीशाय नमः ,, ,, ,,।
ओं सर्वविघ्नहराय नमः ,, ,, ,,।"

इसके पश्चात् नीराजन प्रदान करें।

नीराजन मंत्र—

"ओं अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम्।
नीराजनमिदं देव गृहाण मदनुग्रहात् ॥"

अब प्रार्थना करनी चाहिए। हाथ जोड़ कर नतमस्तक होकर इस प्रार्थना मन्त्र का उच्चारण करें।

प्रार्थना मंत्र—

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥
भूतार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय

भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तिप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

गणेशस्तवराज—

गणेश जी का निम्नलिखित स्तोत्र पाठ करने से साधक की सभी अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं—

ओं तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥
ओंकारमाद्यम्प्रवदन्ति सन्तो
वाचः श्रुतीनामपि यं गृणन्ति ।
गजाननन्देवगणानताङ्घ्रि-
म्भजेहमर्द्धेन्दुकृतावतंसम् ॥
पादारविन्दार्च्चनतत्पराणां
संसारदावानलभङ्गदक्षम् ।
निरन्तरन्निर्गतदानतोयं
तन्नौमि विघ्नेश्वरमम्बुदाभम् ॥
कृताङ्गरागन्नवकुङ्कुमेन
मत्तालिजालम्मदपङ्कलग्नम् ।
निवारयन्तन्निजकर्णतालैः
को विस्मरेत्पुत्रमनङ्गशत्रोः ॥
शम्भोर्ज्जटाजूटनिवासिगङ्गाजलं समानीय कराम्बुजेन ।
लीलाभिराराच्छिवमर्च्चयन्तङ्गजाननम्भक्तियुता भजन्ति ॥
कुमारभुक्तौ पुनरात्महेतोः पयोधरौ पर्व्वतराजपुत्र्याः ।

प्रक्षालयन्तङ्करशीकरेण मौग्ध्ये च तन्नागमुखम्भजामि ॥
तया समुद्धृत्य गजस्य हस्तं ये शीकराः पुष्कररन्ध्रमुक्ताः ।
व्योमाङ्गणे ते विचरन्ति तारा कालात्मना मौक्तिकतुल्यभासः ॥
क्रीडारते वारिनिधौ गजस्थे वेलामतिक्रामति वारिपूरे ।
कल्पावसानम्परिचिन्त्य देवाः कैलासनाथं श्रुतिभिः स्तुवन्ति ॥
नागानने नागकृतोत्तरीये क्रीडारते देवकुमारसंघैः ।
त्वयि क्षणङ्कालगतिंविहाय तौ प्रापतुः कन्दुकतामिनेन्दू ॥
मदोल्लसत्पञ्चमुखैरजस्रमध्यापयन्तं सकलागमार्थम् ।
देवानृषीन्भक्तजनैकमित्रं हेरम्बमर्क्कारुणमाश्रयामि ॥
पादाम्बुजाभ्यामतिवामनाभ्याङ्कृतार्थयन्तङ्कृपया धरित्रीम् ।
अकारणङ्कारणमाप्तवाचान्तन्नागवक्त्रन्न जहाति चेतः ॥
येनार्पितं सत्यवतीसुताय पुराणमालिख्य विषाणकोट्या ।
तच्चन्द्रमौलेस्तनयन्तपोभिराराध्यमानन्दघनम्भजामि ॥
पदं श्रुतीनामपदं स्तुतीनाँल्लीलावतारम्परमात्मभूतेः ।
नागात्मकंव्वा पुरुषात्मकंव्वा त्वमेवमाद्यं भज विघ्नराजम् ॥
पाशाङ्कुशाभग्नरदन्त्वभीष्टङ्करैर्दधानङ्कररन्ध्रमुक्तैः ।
सिञ्चन्तमङ्गं शिवयोर्भजामि सिञ्चन्तमङ्गं शिवयोर्भजामि ॥
मुक्ताफलाभैः पृथुशीकरौघैरनेकमेकञ्जमेकदन्तम्
ब्रह्मेति यं व्वेदविदो वदन्ति तं शंभुसूनुं सततम्भजामि ॥
स्वाङ्कस्थिताया निजवल्लभाया मुखाम्बुजालोकनलोलनेत्रम् ।
स्मेराननाब्जम्मदवैभवेन रुद्धम्भजे विश्वविमोहनन्तम् ॥
ये पूर्व्वमाराध्य गजाननन्त्वां
सर्व्वाणि शास्त्राणि पठन्ति तेषाम् ।
त्वत्तो नचान्यत्प्रतिपाद्यमेतै-
स्तदस्ति चेत्सर्व्वमसत्यकल्पम् ॥
हिरण्यवर्णञ्जगदीशितार-
ङ्कविम्पुराणं रविमण्डलस्थम् ।
गजाननं य्यम्प्रविशन्ति सन्त-

स्तत्कालयोगैस्तमहम्प्रपद्ये ।।
वेदांतगीतम्पुरुषम्भजेह-
मात्मानमानन्दघनं हृदिस्थम् ।
गजाननंय्यन्महसा जनानां
व्विघ्नांधकारो विलयम्प्रयाति ।।
शम्भोस्समालोक्य जटाकलापे
शशाङ्कखण्डन्निजपुष्करेण ।
सुभग्नदन्तं प्रविचिन्त्य मौग्ध्या-
दाक्रष्टुकामः श्रियमातनोतु ।।
विघ्नार्गलानांव्विनिपातनार्थं
यं नारिकेलैः कदलीफलाद्यैः ।
प्रसारयन्तम्मदवारणास्य-
म्प्रभुं सदाभीष्टप्रदम्भजेयम् ।।
यज्ञैरनेकैर्ब्बहुभिस्तपोभि-
राराध्यमाद्यङ्गजराजवक्त्रम् ।
स्तुत्यानया ये विधिवत्स्तुवन्ति
ते सर्व्वलक्ष्मीनिलया भवन्ति ।।

गणेशकवच —

विश्वसारतन्त्र में उल्लिखित गणेश कवच इस प्रकार है। यह कवच समस्त सम्पत्तियों को देने वाला, समस्त रिपुओं का दमन करने वाला तथा ग्रह पीड़ा, ज्वर, राग, बीमारी, गुह्यकादि दोषों को मिटाने वाला है। इसलिए गणेश जी के प्रत्येक साधक भक्त को इस कवच का प्रतिदिन पाठ करना चाहिए।

ईश्वर उवाच—

शृणु वक्ष्यामि कवचं सर्व्वसिद्धिकरम्प्रिये ।
पठित्वा पाठयित्वा च मुच्यते सर्व्वसङ्कटात् ।।
अज्ञात्वा कवचं देवि गणेशस्य मनुञ्जपेत् ।
सिद्धिर्न जायते तस्य कलाकोटिशतैरपि ।।

ओं आमोदश्शिरः पातु प्रमोदश्च शिखोपरि ।
सम्मोदो भ्रूयुगे पातु भ्रूमध्ये च गणाधिपः ।।
गणक्रीडश्चक्षुर्य्युगन्नासायाङ्गणनायकः ।
गणक्रीडाचितः पातु वदने सर्व्वसिद्धये ।।
जिह्वायां सुमुखः पातु ग्रीवायान्दुर्म्मुखः सदा ।
विघ्नेशो हृदये पातु विघ्ननाशश्च वक्षसि ।।
गणानान्नायकः पातु बाहुयुग्मे सदा मम ।
विघ्नकर्त्ता च उदरे विघ्नहर्त्ता च लिङ्गके ।।
गजवक्त्रः कटिदेशे एकदन्तो नितम्बके ।
लम्बोदरः सदा पातु गुह्यदेशे ममारुणः ।।
व्यालयज्ञोपवीती माम्पातु पादयुगे सदा ।
जापकः सर्व्वदा पातु जानुजंघे गणाधिपः ।।
हरिद्रः सर्व्वदा पातु सर्व्वाङ्गे गणनायकः ।
य इदम्प्रपठेन्नित्यं गणेशस्य महेश्वरि ।।
कवचं सर्व्वसिद्धाख्यं सर्व्वविघ्नविनाशनम् ।
सर्व्वसिद्धिकरं साक्षात् सर्व्वपापविमोचनम् ।।
सर्व्वसम्पत्प्रदं साक्षात्सर्वशत्रुक्षयङ्करम् ।
ग्रहपीडा ज्वरा रोगा ये चान्ये गुह्यकादयः ।।
पठनाद्धारणादेव नाशमायान्ति तत्क्षणम् ।
धनधान्यकरन्देवि कवचं सुरपूजितम् ।।
समो नास्ति महेशानि त्रैलोक्ये कवचस्य च ।
हरिद्रस्य महेशानि कवचस्य च भूतले ।
किमन्यैरक्षदालापैर्य्यंत्रायुर्व्यर्थतामियात् ।।

इति श्रीगणेशकवचं सम्पूर्णम् ।

गणपतिस्तुतिः

गाइये गणपति जग वन्दन

शंकर सुमन भवानी के नन्दन ।

सिद्ध सदन गज बदन बिनायक

कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक ॥

मोदकप्रिय मुदमंगलदाता

विद्यावारिधि बुद्धिविधाता ॥

मांगत तुलसीदास कर जोरे

बसहुं राम सिय मानस मोरे ॥

4

शिव साधना

* यहाँ हम शिवसाधना के मन्त्र, यन्त्र, पूजाविधि, स्तोत्र, कवच इत्यादि को प्रस्तुत कर रहे हैं।

सर्वप्रथम शिव साधन का मूल मंत्र—

"ओं नमश्शिवाय ।"

शिव पूजन यंत्र—

निम्नलिखित यन्त्र (देखिये पृ० 46) को अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिख कर शिवजी का पूजन-साधन करना चाहिए ।

प्रातः कृत्यादि करके पूजा-स्थान में जाकर आसन पर विराजमान होकर दीपक प्रज्ज्वलित करना चाहिए। "ओं दीं दीपनाथाय नमः" इस मन्त्र का उच्चारण करके दीपक का पूजन करना चाहिए। भूतापसर्पण करना चाहिए। तत्पश्चात् पूजा प्रारंभ करनी चाहिए।

शिवध्यान-मंत्र—

"बन्धूकसन्निभन्देवन्त्रिनेत्रचन्द्रशेखरम् ।
त्रिशूलधारिणन्देवञ्चारुहासं सुनिर्म्मलम् ।
कपालधारिणन्देवं वरदाभयहस्तकम् ।
उमया सहितं शम्भुन्ध्यायेत्सोमेश्वरं सदा ॥"

उपरोक्त मन्त्र से ध्यान करके निम्नलिखित मन्त्र द्वारा आवाहन करना चाहिए।

आवाहन-मंत्र—

"आयाहि भगवञ्छम्भो शर्व्व त्वङ्गिरिजापते ।
प्रसन्नो भव देवेश नमस्तुभ्यं हि शंकर ॥

अब निम्नलिखित मन्त्र द्वारा आसन प्रदान करना चाहिए—

आसन-मंत्र—

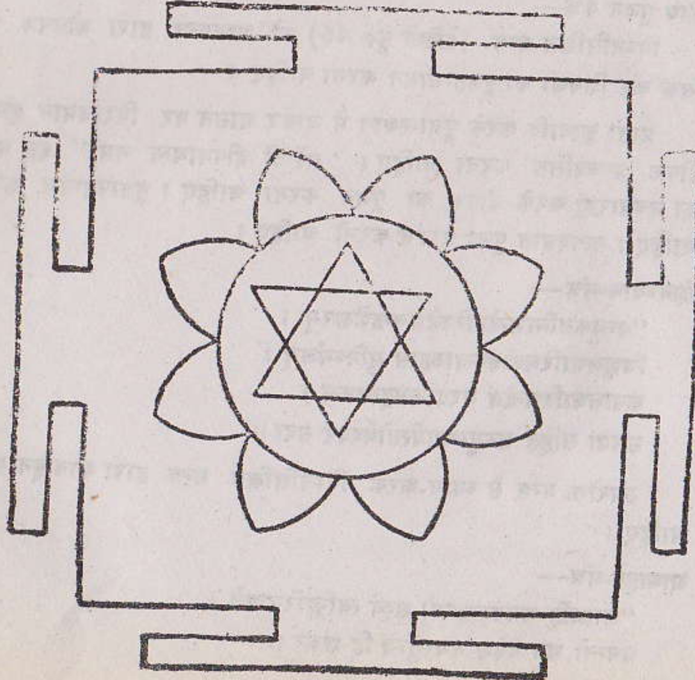
"विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरप्रिय ।
आसनन्दिव्यमीशान दास्येऽहन्तुभ्यमीश्वर ॥"

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा अर्घ्य प्रदान करे—

अर्घ्य-मन्त्र—

"त्र्यम्बकेशसदाचार जगदादिविधायक ।
अर्घ्यं गृहाण देवेश साम्ब सर्व्वार्थदायक ॥"

इसके पश्चात् 'आचमनीय' प्रदान करना चाहिए । उसके लिए मन्त्र निम्न लिखित है । (देखो पृ० 45)



आचमनीय मंत्र—

"त्रिपुरान्तक दीनार्त्ति हर श्रीकण्ठ शाश्वत ।
गृहाणाचमनीयञ्च पवित्रोदकमर्पितम् ॥"

तत्पश्चात् गोदुग्धस्नान कराना चाहिए । इसके लिए इस मन्त्र का उच्चारण करे—

गोदुग्धस्नान मंत्र—

"मधुरं गोपयः पुण्यम्पटपूतम्पुरस्कृतम्
स्नानार्थन्देवदेवेश गृहाण परमेश्वर ॥"

गो-दुग्ध स्नान करने के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा दधिस्नान कराये—

दधिस्नानमंत्र—

"दुर्ल्लभन्दिवि सुस्वादु दधि सर्व्वप्रियम्परम् ।
पुष्टिदम्पार्व्वतीनाथ स्नानाय प्रतिगृह्यताम् ॥"

दधि स्नान कराकर निम्नलिखित मन्त्र द्वारा 'घृतस्नान' कराये :—

घृतस्नान मंत्र—

"घृतगव्यं शुचिस्निग्धं सुसेव्यम्पुष्टिमिच्छताम् ।
गृहाण गिरिजानाथ स्नानाय चन्द्रशेखर ॥"

घृत स्नान के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा मधु-स्नान कराये—

मधुस्नान मंत्र—

"मधुरम्मृदु मोहघ्नं स्वरभंगविनाशनम् ।
महादेवेदमुत्सृष्टन्तव स्नानाय शंकर ॥"

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा शर्क्करास्नान करायें—

शर्क्करास्नान मंत्र—

"तापशान्तिकरी शीता मधुरा स्वादसंयुता ।
स्नानार्थन्देवदेवेश शर्क्करेयम्प्रदीयते ॥"

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा शुद्धोदक स्नान कराये ।

शुद्धोदक स्नान मंत्र—

"गंगा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा ।
सरस्वत्यादितीर्थानि स्नानार्थम्प्रतिगृह्यताम् ॥"

इस प्रकार शुद्धोदक स्नान कराकर निम्नलिखित 900 मन्त्रों द्वारा 'शतरुद्री स्नान' कराना चाहिये ।

शतरुद्री स्नान मंत्र—

शतरुद्री स्नान का मंत्रोद्धार—

"नमस्ते रुद्रसूक्तञ्च पुनः षोडशमेव च ।
एष ते द्विर्न्नमस्तेद्विर्न्नतावद्वयमेव च ।
मोढुष्टमष्ट चत्वारि वचक्ष्वमष्टमञ्जपेत् ॥"

स्नान मंत्र इस प्रकार हैं :—

"ओं नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ १ ॥
या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥ २ ॥
या मिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवांगिरित्र ताङ् कुरु माहि ठं सीः पुरुषञ्जगत् ॥ ३ ॥
शिवेनव्वचसा त्वा गिरिशाच्छाव्वदामसि ।
यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ठं. सुमनाऽअसत् ॥ ४ ॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वांश्च यातुधान्योधराचीः परासुव ॥ ५ ॥
असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽउत बभ्रुः सुमंगलः ।
ये चैन ठं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषां हेडऽईमहे ॥ ६ ॥
असौ योऽवसर्प्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
उतैनं गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टोमृडयाति नः ॥ ७ ॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो येऽअस्य सत्वानो हन्तेभ्योकरन्नमः ॥ ८ ॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योंज्ज्यम् ।
याश्च ते हस्त इषवः पराताभगवोव्वप ॥ ९ ॥
विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँऽउत ।
अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥ १० ॥
या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।

तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज । ११
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः ।
अथोयऽइषुधिस्तवारेऽअस्मन्नि धेहि तम् । १२
अवतत्य धनुष्ट्व ठं सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव । १३
नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने । १४
मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकम्मा नऽउक्षन्तमुत मा नऽउक्षितम् ।
मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः । १५
मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः ।
मा नोव्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मंतः सदमि त्वा हवामहे । १६
नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो नमो नमो वृक्षेभ्यो
हरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते
पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने दुष्टानाम्पतये नमः । १७
नमोवम्लुशाय व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमो नमो भवस्य
हेत्यै जगताम्पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो नमः
सूतायाहन्त्यैव्वनानाम्पतये नमः । १८
नमो रोहिताय स्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौ-
षधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणेव्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो
नमऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः । १९
नमः कृत्स्नाय तयावते सत्वानाम्पतये नमो नमः सहमानाय
निव्याधिनेऽआव्याधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनाना-
म्पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः । २०
नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो नमो
निषङ्गिणेऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघां-
सद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमो
ऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः । २१
नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो नमो ऽइषुमद्भ्यो धन्वा-

यिभ्यश्च वो नमो नमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नमऽआय-
च्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमो नमः । २२
नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो
नमो नमः शयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च
वो नमो नमः । २३
नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो
नमोऽ आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नमो गणाभ्यस्तृ ठं
हतीभ्यश्च वो नमो नमः । २४
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो
नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्योविश्वरूपेभ्य-
श्च वो नमो नमः । २५
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्योऽअरथेभ्यश्च वो नमो नमः
क्षतृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः ।२६
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो
नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च
वो नमो नमः । २७
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमो नमः
शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च । २८
नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो
गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुधिमते च
नमो नमः । २९
नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो
वृद्धाय च संवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च । ३०
नमऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय नमः ऊर्म्याय चोव-
स्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च । ३१
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय
चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुद्ध्न्याय च । ३२
नमः सोभ्याय च प्रतिसर्प्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः
श्लोक्याय चावसान्याय च नमो वर्य्याय च खल्याय च । ३३

[illegible]न्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च
[illegible]आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च । ३४
[illegible] बिल्मिने च कवचिने च नमोर्व्वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः
[illegible] च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च । ३५
[illegible] धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च
[illegible]तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ३६
[illegible] स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः
[illegible] च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च । ३७
[illegible] कूप्याय चावट्याय च नमोवीद्ध्याय चातप्याय च
[illegible] मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च । ३८
[illegible] वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः
[illegible] च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च । ३९
[illegible] शङ्गवे च पशुपतये च नमऽउग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेव-
[illegible] च नमो हंत्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय । ४०
[illegible] शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च
[illegible] शिवाय शिवतराय च । ४१
[illegible] पार्याय चावर्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय
[illegible] कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च । ४२
[illegible] सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किं ठं. शिलाय च क्षयणाय च नमः
कपर्द्दिने च पुलस्तये च नमऽइरिण्याय च प्रपथ्याय च । ४३
[illegible]व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च
[illegible]वेष्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च । ४४
[illegible] शुष्क्याय च हरित्याय नमो नमः पां ठं सव्याय च रजस्याय च
[illegible] लोप्याय चालोप्याय नमऽऊर्व्वर्याय सूर्म्याय च । ४५
[illegible] पर्ण्याय च पर्ण्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च
[illegible]ऽआखिदते चप्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो
[illegible] वः किरिकेभ्यो देवानां ठं हृदयेभ्यो नमो विचिन्व-
[illegible]भ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो [illegible]ऽआनिर्हतेभ्यः । ४६

यिभ्यश्च वो नमो नमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नमऽआय-
च्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमो नमः । २२
नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो
नमो नमः शयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च
वो नमो नमः । २३
नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो
नमोऽ आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नमो गणाभ्यस्तृ ठं
हतीभ्यश्च वो नमो नमः । २४
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो
नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्योव्विश्वरूपेभ्य-
श्च वो नमो नमः । २५
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्योऽअरथेभ्यश्च वो नमो नमः
क्षतृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः ।२६
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो
नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च
वो नमो नमः । २७
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमो नमः
शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च । २८
नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो
गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुधिमते च
नमो नमः । २९
नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो
वृद्धाय च संवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च । ३०
नमऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय नमः ऊर्म्म्याय चोव-
स्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च । ३१
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय
चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुद्ध्न्याय च । ३२
नमः सोभ्याय च प्रतिसर्प्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः
श्लोक्याय चावसान्याय च नमो वर्य्याय च खल्याय च । ३३

नमो व्वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च
नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः सूराय चावभेदिने च । ३४
नमो बिल्मिने च कवचिने च नमोव्वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च । ३५
नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च
नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ३६
नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः
कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च । ३७
नमः कूप्याय चावट्याय च नमोवीद्ध्याय चातप्याय च
नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च । ३८
नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च नमः
सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च । ३९
नमः शङ्गवे च पशुपतये च नमऽउग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेव-
धाय च नमो हंत्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय । ४०
नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय शिवतराय च । ४१
नमः पार्याय चावर्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय
च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च । ४२
नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः कि ठं. शिलाय च क्षयणाय च नमः
कपर्द्दिने च पुलस्तये च नमऽइरिण्याय च प्रपथ्याय च । ४३
नमोव्व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च
निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च । ४४
नमः शुष्क्याय च हरित्याय नमो नमः पा ठं सव्याय च रजस्याय च
नमो लोप्याय चालोप्याय नमऽऊर्व्वर्याय सूर्व्याय च । ४५
नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च
नमोऽआखिदते च प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो
नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ठं हृदयेभ्यो नमो विचिन्व-
त्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो ऽआनिर्हतेभ्यः । ४६

द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ! आसाम्प्रजानामेषा-
म्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्म्मो च नः किंचनाममत् । ४७
इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीरायप्र भरामहे मतीः ।
यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टङ् ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् । ४८
या ते रुद्र शिवा तनू· शिवा विश्वाहा भेषजी ।
शिवारुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे । ४९
परि नो रुद्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः ।
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड । ५०
मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव । परमे वृक्षऽआयु-
धन्निधाय कृत्तिव्वसानऽआ चर पिनाकम्बिभ्रदागहि । ५१
विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽस्तु भगवः । यास्ते सहस्र
ठं हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः । ५२
सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानो भगवः
पराचीना मुखा कृधि । ५३
असङ्ख्याताः सहस्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्याम् ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ५४
अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽअधि ।
तेषा ठं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ५५
नीलग्रीवा शितिकण्ठा दिव ठं रुद्रा उपश्रिताः ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ५६
नीलग्रीवा शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः क्षमाचराः ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ५७
ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्द्दिनः ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ५८
ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवाव्विलोहिताः ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ५९
ये पथाम्पथिरक्षयऽएलबृदा आयुर्युधः ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ६०

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ६१
येऽन्नेषु विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ६२
यऽएतावन्तश्च भूया ठं सश्च दिशो रुद्रा व्वितस्थिरे ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ६३
नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषाँव्वर्षमिषवः ।
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ।
तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो
यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः । ६४
नमोस्तु रुद्रेभ्यो येऽअन्तरिक्षे येषाँव्वातऽइषवस्तेभ्यो दश
प्राचीर्दश दक्षिणा दशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः
तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो
यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः । ६५
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यांय्येषामन्नमिषवः तेभ्यो दश
प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ।
तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडन्तु ते यं द्विष्मो
यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः । ६६
नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽइषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः । ६७
या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि । ६८
यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवांगिरित्रता ङ् कुरु मा हि ठं सीः पुरुषञ्जगत् । ६९
शिवेनव्वचसा त्वा गिरिशाच्छाव्वदामसि ।
यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ठं सुमनाऽअसत् । ७०
अध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्तसर्व्वाश्च यातुधान्योऽधराची: परासुव । ७१

असौ यीव सर्प्पति नीलग्रीवोव्विलोहितः
उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः । ७२
असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽउत बभ्रुः सुमंगलः ।
ये चैन ठं रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषाः हेडऽईमहे । ७३
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो येऽअस्य सत्वानोऽहस्तेभ्योकरन्नमः । ७४
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्त्न्योर्ज्ज्याम् ।
याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवोव्वप । ७५
विज्यन्धनुः कपर्द्दिनोव्विशल्यो बाणवांउत ।
अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः । ७६
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज । ७७
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः ।
अथो यऽइषुधिस्तवारेऽअस्मन्नि धेहि तम् । ७८
अवतत्य धनुष्ट्व ठं. सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव । ७९
नमस्तेऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने । ८०
मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकम्मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्
मा नोव्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः । ८१
मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः ।
मा नोव्वीरान्रुद्र भामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे । ८२
एष ते रुद्र भागः स्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते-
रुद्र भागऽआखुस्ते पशुः । ८३
अव रुद्र मदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम् ।
यथा नो व्यस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात् ८४
नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ।
अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ठं शिवो भव । ८५

नमस्तेऽअस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे ।
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे । ८६
न तँव्विदाथ यऽइमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरम्बभूव ।
नीहारेण आवृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति । ८७
विश्वकर्म्मा ह्यजनिष्ट देव आदिगन्धर्व्वोऽअभवद्द्वितीयः ।
तृतीयः पिता जनितौषधीनामपां गर्भव्व्यदधात्पुरुत्रा । ८८
विकिरिद्रव्विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्र ठं. हेतयोन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः । ८९
मीढुष्टम शिवतम शिवो न सुमना भव ।
परमेव्वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिव्वसानऽआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि । ९०
सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि । ९१
असङ्ख्याताः सहस्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्याम् ।
तेषा सहस्रयोजने व धन्वानि तन्मसि । ९२
वय ठंः सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ।
प्रजावन्तः सचेमहि ९३
एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते ।
रुद्र भागऽआखुस्ते पशुः ९४
अव रुद्र मदीमह्यव देवन्त्र्यम्बकम् ।
यथा नो वयस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात् । ९५
भेषजमसि भेषजं गवेश्वाय पुरुषाय भेषजम् ।
सुखम्मेषाय मेष्यै । ९६
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । ९७
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ।
एतत्ते रुद्रावसन्तेन पुरो मूजवतोऽतीहि । ९८

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् । ९९
शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा मा हि ७ सी
नि वर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय
सुवीर्य्याय । १००

उपर्युक्त मन्त्रों द्वारा शुद्धोदक स्नान कराने के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा वस्त्र प्रदान करे ।

वस्त्र मन्त्र—

"वस्त्राणि पट्टकूलानि विचित्राणि नवानि च ।
मया नीतानि देवेश प्रसन्नो भव शंकर ॥"

इसके उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र द्वारा उपवीत प्रदान करे ।

उपवीत मन्त्र—

"सौवर्णं राजतन्ताम्रङ्कार्प्पासस्य तथैव च ।
उपवीतम्मया दत्तं प्रीत्यर्थम्प्रतिगृह्यताम् ॥"

इस मन्त्र के उपरान्त निम्नलिखित मंत्र द्वारा 'गन्ध' प्रदान करे ।

गन्ध मन्त्र—

"सर्व्वेश्वर जगद्वन्द्य दिव्यासनसमास्थित ।
गन्धङ्गृहाण देवेश चन्दनम्प्रतिगृह्यताम् ॥"

इस मंत्र के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा 'अक्षत' प्रदान करे ।

अक्षत मन्त्र—

"अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः शुभ्रा पूताश्च निर्म्मलाः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥"

इस मन्त्र द्वारा अक्षत देकर निम्नलिखित मन्त्र द्वारा पुष्प प्रदान करे ।

पुष्प मन्त्र—

"माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाहृतानि पूजार्थम्पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥"

इसके उपरान्त निम्नलिखित मंत्र द्वारा 'बिल्वपत्र' प्रदान करे ।

बिल्वपत्र मन्त्र—

"बिल्वपत्रं सुवर्णेन त्रिशूलाकारमेव च ।
मयार्पितम्महादेव बिल्वपत्रङ्गृहाण मे ॥"

इसके पश्चात् निम्नलिखित मंत्र द्वारा 'धूप' प्रदान करे ।

धूप मन्त्र—

"वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्व्वदेवानान्धूपोयम्प्रतिगृह्यताम् ॥

इस मन्त्र से धूप प्रदान करके निम्नलिखित मन्त्र द्वारा दीपक प्रदान करे ।

दीपक मन्त्र—

"आज्याक्तवर्त्तिसंयुक्तं वह्निना दीपितन्तु यत् ।
दीपङ्गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह ॥"

दीपक देने के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा नैवेद्य प्रदान करे ।

नैवेद्य मन्त्र—

"अपूपानि च पक्वानि मण्डकावटकानि च ।
पायसं सूपमन्नञ्च नैवेद्यम्प्रतिगृह्यताम् ॥"

नैवेद्य मन्त्र देने के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा आचमनीय प्रदान करे ।

आचमनीय मन्त्र—

"पानीयं शीतलं शुद्धं गांगेयम्महदुत्तमम् ।
गृहाण पार्व्वतीनाथ तव प्रीत्या प्रकल्पितम् ॥"

इसके उपरान्त निम्न मन्त्र द्वारा करोद्वर्त्तन प्रदान करे ।

करोद्वर्त्तन मन्त्र—

"कर्प्पूरादीनि द्रव्याणि सुगन्धीनि महेश्वर ।
गृहाण जगतान्नाथ करोद्वर्त्तनहेतवे ॥"

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा फल प्रदान करे ।

फल मन्त्र—

"कूष्माण्डम्मातुलिङ्गं च नारिकेलफलानि च ।
गृहाण पार्व्वतीकान्त सोमशेखर शंकर ॥"

इस मन्त्र के उच्चारण के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा ताम्बूल पूगीफलादि प्रदान करे।

ताम्बूलपूगीफलादि मन्त्र—

"पूगीफलम्महद्दिव्यन्नागवल्लीदलैर्युतम्।
गृहाण देवदेवेश द्राक्षादीनि सुरेश्वर।"

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा 'द्रव्य' प्रदान करे।

द्रव्य मन्त्र—

"हिरण्यगर्भगर्भस्थं हैमबीजसमन्वितम्।
पंचरत्नं मया दत्तङ् गृह्यतां वृषभध्वज।।"

इस मन्त्र द्वारा द्रव्य प्रदान करने के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा नीराजन प्रदान करे।

नीराजन मन्त्र—

"अग्निर्ज्योती रविर्ज्योतिर्ज्योतिर्न्नारायणो विभुः।
नीराजयामि ते वेशम्पंचदीपैः सुरेश्वर।।"

नीराजन देकर निम्न मंत्र द्वारा 'पुष्पांजलि' भेंट करे।

पुष्पांजलि मन्त्र—

"हर विश्वाखिलाधार निराधार निराश्रय।
पुष्पांजलिङ् गृहाणेश सोमेश्वर नमोस्तु ते।।"

इसके उपरान्त निम्नलिखित मंत्र द्वारा प्रणाम निवेदित करे।

प्रणाम मन्त्र—

"हेतवे जगतामेव संसारार्ण्णवसेतवे।
प्रभवे सर्व्वविद्यानां शम्भवे गुरवे नमः।।"

उपर्युक्त सभी मंत्रों के अन्त में "सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सावरणाय नमः।" यह वाक्य जोड़ना चाहिये। इसके पश्चात् पूजा-विधि सम्पन्न होती है।

अर्घ्य प्रदान करने के विशेष मन्त्र—

शिवरात्रि तथा सोमवार के दिन विशेषार्घ्य मंत्र प्रदान किये जाते हैं।

सर्वप्रथम निम्नलिखित संकल्पवाक्य का उच्चारण करे—

"अद्य पूर्व्वोच्चरित एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम्पुण्यतिथौ ममात्मनः पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं पूजासांगतासिद्ध्यर्थमर्घ्यप्रदानङ्करिष्ये।"

शिवरात्रि अर्घ्यमन्त्र—

"नमः शिवाय शर्व्वाय सर्व्वपापहराय च।
शिवरात्रौ महापुण्यङ् गृहाणार्घ्यन्नमोऽस्तु ते।
शिवाय नमः इदम्।"

"व्योमकेश नमस्तुभ्यं व्योमात्मन्व्योमरूपिणे।
नक्षत्ररूपिणे तुभ्यन्तारकार्घ्यन्नमोऽस्तु ते।
तारकाय नमः इदम्।"

"आकाशदिक्छरीराय ग्रहनक्षत्रमालिने।
सुरसिद्धनिवासाय दत्तमर्घ्यं सदाशिव।
सदाशिवाय नमः इदम्।"

सोमवार अर्घ्य मन्त्र—

"सोमवारव्रतं कर्तुं कल्याणम्मम सर्वदा।
प्रसीद पार्व्वतीनाथ सायुज्यन्देहि मे प्रभो।
भवानीशङ्कराभ्यां नमः इदम्।"

"नतेन सोमवारेण सोमनाथ जगत्पते।
अनेककोटिसौभाग्यमनन्तं कुरु शङ्कर।
शङ्कराय नमः इदम्।"

"आकाशदिक्शरीराय ग्रहनक्षत्रमालिने।
सर्व्वसिद्धिनिवासाय दत्तमर्घ्यन्नमोऽस्तु ते।
सदाशिवाय नमः इदम्।"

अर्घ्य के अन्त में निम्न वाक्य का उच्चारण करे।

"अनेनार्घ्यप्रदानेन भगवाँच्छ्रीभवानीशङ्करः महारुद्रः प्रीयताम्।

आरती शिव शंकर जी की

ओं जय शिव ओंकारा
हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा ॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥
दोय भुज चार भुज दस भुज से सोहे।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहै ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक भूतादिक मुक्तादिक संगे।
अक्षयमाला वनमाला मुंडमाला धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥
कर में मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूल धर्त्ता।
जगहर्ता जगकर्त्ता जगपोषणकर्त्ता ॥
ब्रह्मा स्वरूप न जाना ये तीनों एका।
ब्रह्मा विष्णु महादेव ये सवन एका ॥
त्रिगुण स्वरूप की आरती हितकारी जो कोई गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावै ॥

ओं नमो शिवाय

5

हनुमत् साधन

जब भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज ने पृथ्वी का भार उतारने को अयोध्या में जन्म लिया तब उनकी रक्षा और साथ देने के लिए शंकर जी ने हनुमान जी के रूप में चैत्र शु० पूर्णिमा को जन्म लिया था। उन्हीं के उपलक्ष में मन्वादि पूर्णिमा को हनुमान जयन्ती भी कहते हैं। हनुमान जयन्ती को हनुमान जी का व्रत रखें और स्नान करके हनुमान जी की मूर्ति को सिंदूर का चोला चढ़ावें, चांदी के वर्क लगावें और उनकी आरती उतारें। फिर हनुमान जी पर लगे सिंदूर में से एक टीका अपने माथे पर लगा लें। फिर वहां बैठकर हनुमान चालीसा का सच्ची आत्मा से सात बार पाठ करें। दिन में बन्दरों को भुने हुए चने खिलायें। हनुमान जी के व्रत से भूत-पिशाच से छुटकारा मिलता है। हनुमान भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज के सेवक होने से हनुमान जी की सेवा भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज की सेवा में पहुँच जाती है जिससे भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज उस मनुष्य को अपने लोक में बुला लेते हैं। हनुमान चालीसा का पाठ करने से सिद्धि प्राप्त होती है। इसलिये महापुरुषों ने कहा है कि हनुमान जयन्ती का व्रत अवश्य करना चाहिये। यह तो है हनुमान जयन्ती के व्रत का वर्णन। अब हम उनके साधन-मन्त्र एवं पूजा प्रणाली का वर्णन करेंगे।

श्री हनुमान जी को सिद्ध करने के लिए निम्न लिखे गये नियमों का पालन करना आवश्यक है। अतः जो सज्जन सिद्धि प्राप्त करना चाहें उनको इन नियमों का पालन अवश्यमेव करना चाहिए। यदि इन नियमों के अनुसार कार्य न किया गया तो फिर साधक को कई प्रकार कष्टों का सामना करना पड़ेगा इस लिये नियमों का पालन करना आवश्यक है।

(1) साधक को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। सिद्धि की प्राप्ति के पश्चात् वह केवल एक विवाह कर सकता है। वह भी केवल अपने वंश का नाम चलाने के लिए। साधक को अपनी पत्नी के अतिरिक्त बाकी सब स्त्रियों को अपनी मां-बहिन के समान समझना चाहिए।

(2) साधक को मांस, मदिरा, चर्स आदि बुरी वस्तुओं से परहेज करना चाहिए।

(3) प्रत्येक अवस्था में शुद्ध पवित्र रहना, मन को साफ और मस्तिष्क से बुराई का शब्द बिलकुल निकाल देना चाहिये।

(4) चोरी, काम, क्रोध, लालच, अहंकार, हिंसा, कुदृष्टि सब बातें दूर कर देनी चाहिएँ।

(5) प्रत्येक मंगलवार के दिन व्रत रखना चाहिए और सायं का को केवल एक समय ही भोजन करना चाहिए।

(6) मंगलवार को अपनी पत्नी के साथ सम्भोग न करे।

(7) साधक साधना-काल में अपने मन में किसी प्रकार का कुविचार उत्पन्न न होने दे।

विधि—

जो साधक श्री हनुमान जी को सिद्ध करना चाहे, वह उपरोक्त नियमों का पालन करे और हस्त नक्षत्र के दिन नदी पर जाकर, वहां से शुद्ध और पवित्र मिट्टी लाकर, किसी कुशल कुम्हार से, उसकी, श्री हनुमान जी की मूर्ति निम्न निर्देश के अनुसार निर्माण करवा कर उसे सुखा लेवे।

टिप्पणी—

इस बात को सदा याद रखिये कि किसी भी मूर्ति को आग में नहीं रखना चाहिये। मूर्ति के सूख जाने पर, उस पर, सिन्दूर तथा शुद्ध देसी घी मिलाकर रङ्ग कर देवें। उस मूर्ति के लिये घर में किसी अलग स्थान का चुनाव करें। उस स्थान को हमें श्रीहनुमान जी का मन्दिर कहना चाहिए। उस स्थान को भली प्रकार सुसज्जित करके, उसमें एक चौकी रक्खें और उस

चौकी पर श्री हनुमान जी की मूर्ति रक्खें। जिस कमरे में श्री हनुमान जी का मन्दिर तैयार किया जाये उस कमरे में किसी अपवित्र अथवा गन्दे व्यक्ति को न आने दिया जाये। कोई अपवित्र स्त्री अथवा बच्चा उस कमरे के भीतर न आये और न ही कोई अपवित्र वस्तु उस मन्दिर में लानी चाहिये।

साधक के पूजा-पाठ करने वाले वस्तु तथा पात्र सब के सब अलग होने चाहिएँ। मन्दिर की किसी वस्तु को मन्दिर में से बाहर न निकालो। पूजा-पाठ की प्रत्येक वस्तु वस्त्र आदि सब-के-सब शुद्ध, पवित्र और स्वदेशी होने चाहिएँ पूजा के कार्य के लिए कोई विदेशी वस्तु नहीं बर्तनी चाहिये।

साधक को सायं-प्रातः दोनों समय पूजन करना चाहिए।

विधि—

साधक को चाहिए कि वह ब्रह्ममुहूर्त में शय्या से उठकर स्नान, सन्ध्या वन्दन आदि नित्य-कर्मों से निवृत्त होकर कुएँ के जल से स्नान करे। यदि कुंआ न हो तो नदी का पानी ही ठीक है और स्नान करने के पश्चात्, पूजा के वस्त्र पहन कर पूर्व की ओर मुख करके आसन पर बैठ जाये। एक साफ पानी का लोटा अपने पास रख ले। मन में श्री हनुमान जी की मूर्त्ति का ध्यान करे और मन में उठने वाले अन्य विचारों को दूर कर दे। मन में श्री हनुमान जी का ध्यान और मुख से 'ओं श्रीपवनसुताय नमः' का पाठ करता रहे।

पहले श्री हनुमान जी की मूर्ति को कुएं अथवा नदी या गंगाजल से स्नान कराये। फिर माथे पर सिंदूर, चन्दन, कस्तूरी, केसर इन सब वस्तुओं को घिस कर, तिलक लगाकर फूल मालाएं पहनाये और वस्त्र पहनाये। धूप, कपूर गुग्गुल जलाए। घी की जोत श्री हनुमान जी के आगे जलाये। पान, सुपारी, लौंग, इलायची हनुमान जी के आगे रक्खे। फिर उनको मिठाई का भोग लगाये। फिर उनकी आरती उतारे। फिर उनके पास एक लोटा पानी का भर कर रक्खे। फिर श्री हनुमान जी के आगे प्रार्थना करे और अपनी जो इच्छा हो उसे प्रार्थना में कह दे। इस प्रकार यह काम प्रतिदिन करना चाहिए।

प्रार्थना के पश्चात् श्री रामायण के सुन्दर काण्ड का प्रेम से पाठ करे। फिर श्री हनुमान जी के सामने बैठ कर श्री हनुमान चालीसा तथा संकट मोचन का प्रतिदिन इक्कीस बार पाठ करे। यदि हनुमान चालीसा का पाठ न कर सके तो उस अवस्था में श्री हनुमान जी के मन्त्र का ढाई लाख जप करे। यह जप चालीस दिन में समाप्त करे। प्रतिदिन सवा छः हजार जप करना चाहिए। पूजा पाठ में नागा बिलकुल नहीं करना चाहिए।

मन्त्र

ओं ह्रां ह्रीं ह्रीं श्रीवायुपुत्राय नमः।

प्रतिदिन जप करने के पश्चात् श्री हनुमान जी की आरती करे। फिर सूर्य भगवान को जल दे। फिर नमस्कार करके वस्त्र आदि उतार कर रख दे और अपने काम में लग जाये। साधक को चाहिए कि वह केवल एक समय भोजन करे। नमक का बिल्कुल प्रयोग न करे। केवल मीठा, दही, दूध, घी, आटे की रोटी पकवा कर खाये। या हलुवा बना कर खाये। फिर शाम को केवल हनुमान चालीसा का पाठ करे। पाठ करते समय धूप जला कर दीपक जलाना चाहिये। जो चीजें प्रातः काल मूर्ति पर चढ़ाई थीं, उनको उतार कर अलग रख ले। उनमें से फल स्वयं खा ले। जो जल श्रीहनुमान जी के आगे रक्खा था, उसे अपने प्रयोग में ले आये।

प्रतिदिन बच्चों में मिठाई बांटा करे और फिर चालीस दिन के पश्चात् श्रीहनुमान जी का पाठ करके उपरोक्त मन्त्र का पचास हजार हवन करे। यानी कपूर, गुग्गुल, घी, चम्पापुष्प, श्वेत चन्दन के बूरे की आहुति दे। छोटे-छोटे बच्चों में प्रसाद बाँटे।

पूजा के दिनों में श्रीहनुमान जी कई बार दर्शन देते और साधक की रक्षा करते और उसको हर प्रकार के कष्टों से बचाते हैं।

इस प्रकार श्री हनुमान जी सिद्ध हो जाते हैं। हर मंगलवार को श्री हनुमान जी को सिन्दूर तथा घी का चोला चढ़ाना चाहिये और मिठाई का भोग लगाकर वह मिठाई बच्चों में बाँट देनी चाहिये।

जब साधक श्री हनुमान जी को सिद्ध कर ले तो साधक में बड़ी भारी

शक्ति आ जाती है। यदि, साधक अपने चरित्र को ठीक रक्खे और सदा-सदैव हनुमान जी का पूजन तथा पाठ करता रहे तो उसको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा और धन-धान्य उसके पास अपने आप जमा होता रहेगा।

साधक को चाहिए कि सिद्धि प्राप्ति हो जाने के पश्चात् भी प्रत्येक मंगलवार को व्रत रक्खे। प्रतिदिन श्री हनुमान जी का पूजन करके पाठ करे। बच्चों में मिठाई बाँटे।

और फिर सिद्धि की प्राप्ति के बाद

जब साधक पर कोई संकट आ पड़े तो उसको चाहिये कि वह श्रीहनुमान जी से प्रार्थना करे। संकट टल जायेगा।

श्री हनुमान जी के चरणों का तिलक लगाकर साधक जिसके सामने जायेगा, वह साधक जो कुछ भी कहेगा मान जायेगा। राजदरबार में जाने से सब काम ठीक हो जायेंगे। संकट मिट जायेंगे। विपत्तियाँ दूर हो जायेंगी। व्याधियाँ नष्ट हो जायेंगी।

श्री हनुमान जी का पाठ करके उनके चरणों से फूल लेकर, तथा पहिन कर, जो व्यक्ति, जिसभी काम के लिये जायेगा उसको अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

श्री हनुमान जी का चरणामृत जिस रोगी को विश्वास के साथ दिया जायेगा वह अवश्यमेव स्वस्थ हो जायेगा।

श्री हनुमान जी का जल जिस स्थान पर छिड़क दिया जायेगा उस स्थान में से भूत प्रेत आदि सब के सब भाग जायेंगे।

जिस मकान में गर्भवती स्त्री हो उस स्थान पर पाठ करने से प्रेत-आत्माएं, भूत-प्रेत, पिशाच, श्मशानवासिनी, छाया आदि-आदि सबके-सब दूर हो जायेंगे।

संसार में ऐसा कोई भी कठिन कार्य नहीं है जिसको श्री हनुमान जी की कृपा से किया न जा सकता हो।

साधक यदि सत्यवादी तथा सदाचारी हो तो वह श्री हनुमान जी की कृपा

से वर्षों बाद होने वाली बातें पहले बता सकता है। जो कठिनाइयाँ सामने आयें उनको दूर करने के उपाय श्री हनुमान जी स्वप्न में दर्शन देकर बता देते हैं। साधक को प्रत्येक अवस्था में शुद्ध तथा पवित्र रहना चाहिये।

उपरोक्त मन्त्र पाठ करने से सभी संकट मिट जाते हैं।

आरती श्री हनुमान जी की

जाके बल से गिरवर कांपे,
भूत पिशाच निकट नहीं झांके।
आरती कीजे हनुमान लला की,
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
लंकासी कोट समुद्रसी खाई, जात पवनसुत बार न लाई।
दे बीड़ा रघुनाथ पठाए, लंका जलाय सिया सुधि लाए।
जगमग ज्योति अवधपुर राजा घंटा ताज पखावज बाजा।
शक्ति बाण लगा लक्ष्मण को, लाय संजीवनी लषन जियाये।
बैठ पाताल छोड़ यम कातर, अहिरावण की भुजा उखाड़े।
आरती कीजै जैसी तैसी, ध्रुव प्रह्लाद विभीषण जैसी।
सुरनर मुनिजन आरती उतारें, जय जय जय हनुमान उचारें।
कंचन थाल कपूर सुहाई, आरती करत अंजनी माई।
बाँई भुजा से असुर संहारे, दाहिनी भुजा से सब संत उबारे।
लंका जलाय असुर सब मारे रामचन्द्र के काज संवारे।
अंजनीपुत्र महाबलदायक, देव संत के सदा सहायक।
लंका विध्वंस करी रघुराई, तुलसीदास कपि आरती गाई।
जो हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ अमर पद पावे।

11

देवी देवता सिद्धि

गुरुं श्रीगायत्रीं गजवदनमानन्दसदनं
कपीशं रुद्रांशं समुदितदिनेशाभसदृशम् ।
प्रणम्य स्वान्तेऽहं सकलजनप्रीत्यै हनुमत:
प्रकुर्वे मन्त्राढ्यां सरलमनुगां पद्धतिमिमाम् ।।

तत्राऽऽदौ साधको ब्राह्मे मुहूर्ते शयनादुत्थाय मानसिकस्नानं कुर्यात् ।

अपने गुरु, श्री गायत्री, आनन्दभवन श्रीगणपति, उदय होते हुए सूर्य की आभा के समान विशुद्ध रक्त वर्ण वाले श्री हनुमान जी को हृदय में प्रणाम करके मैं सब लोगों के कल्याणार्थ, पटल के अनुसार मन्त्रपूर्वक हनुमन्त पूजा पद्धति का निर्माण कर रहा हूं ॥ १ ॥

साधक सर्वप्रथम ब्रह्ममुहूर्त में शयन से उठकर मानस में धारण किये हुए, शान्त, दिव्य वस्त्रों से सुशोभित, उत्तम गंधों से युक्त वामांग में विराजमान अपनी शक्ति को धारण किये हुए, मन्द मन्द स्मित वाले अपने गुरु का ध्यान करे, फिर आवाहनपूर्वक पंचोपचार से पूजन करे। पश्चात्—

ततः गुरूपदिष्टमार्गेण पादुकां गुरुत्रयमन्त्रांश्च दशधा त्रिधा च जपित्वा नमेत्

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै स्वेष्टदेवस्वरूपिणे ।
यस्य वाक् सकलं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ॥ १ ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुर्देवः परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥
अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराऽचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ३ ॥
अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानाऽञ्जन-शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ४ ॥

गुरु के उपदेशानुसार पादुका तथा गुरु के तीन मन्त्रों को दस बार, फिर तीन बार जप करके, निम्नलिखित श्लोकों से उनकी प्रार्थना करे—

अपनी इष्ट देवता स्वरूप हम उन गुरु को नमस्कार करते हैं जिनके दिए हुए उपदेशात्मक वाक्य संसार के समस्त विषयों का विनाश करते हैं।

गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही महेश्वर है तथा गुरु ही परब्रह्म है। उस गुरु को नमस्कार करता हूं।

जिसने ज्ञानांजनशलाका से अज्ञानरूपी अंधकार से अंधी आँखों में दिव्य दृष्टि प्रदान की उस श्रीगुरु को मैं नमस्कार करता हूं।

एभिः श्लोकैः प्रणम्य पुनः स्तुवति—

नमस्ते नाथ ! भगवन् ! शिवाय गुरुरूपिणे ।
विद्यावतारसंसिद्ध्यै स्वीकृताऽनेकविग्रह ॥ १ ॥
नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे ।
सर्वाज्ञानतमोभेदभानवे चिद्घनाय ते ॥ २
स्वतन्त्रतायै भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ।
प्रकाशिनां प्रकाशाय ज्ञानिनां ध्यानरूपिणे ॥ ३ ॥

इन श्लोकों से प्रणाम करे। फिर स्तुति करे—

हे नाथ ! हे भगवन् ! आपको नमस्कार है। आप गुरु के रूप में साक्षात् शिव हो। हे प्रभो ! आप विद्या के अवतार हो तथा सिद्धि के लिए आप अनेक स्वरूप धारण करते हो।

आप सदैव नूतन तथा नूतन रूप वाले हो, मुक्ति के तो मानो आप स्वरूप ही हो। सम्पूर्ण अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करने के लिये आप सूर्य स्वरूप हो। आप साक्षात् चिद्घन हो।

आप स्वतन्त्र हैं, आपने संसारी प्राणियों पर दया करके शरीर धारण किया है। आप साक्षात् शिव हैं। आप भक्तों के परतन्त्र हैं और भव्यों में भव्य स्वरूप हैं।

आप विवेकियों में विवेक हैं और विचारशीलों में विचार हैं। प्रकाश करने वालों में प्रकाश हैं, तथा ज्ञानियों में ज्ञान हैं।

पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यादुपर्यधः।
सदा मच्चित्तभावेन विधेहि भवदासनम्।
त्वत्प्रसादादहं देव ! कृतकृत्योऽस्मि सर्वतः।
मायामृत्युमहापाशाद् विमुक्तोऽस्मि शिवोऽस्म्यहम् ॥
प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्ततः।
यत्करोमि जगन्नाथ ! तदस्तु तव पूजनम् ॥

इति क्षमाप्य ध्यायेत्—

मूलादि-ब्रह्मरन्ध्रान्तं सर्वतेजोमयीं पराम्।
कोटिसूर्य-प्रतीकाशां चन्द्रकोटिसुशीतलाम् ॥

मैं अपने आगे-पीछे, पार्श्व-पृष्ठ, ऊपर-नीचे विराजमान आपको नमस्कार करता हूं। हे प्रभो! मेरे चित्त की भावना के अनुसार आप आसन ग्रहण करें।

हे प्रभो ! आपकी प्रसन्नता से मैं सफल मनोरथ हूं। तथा आपके प्रसाद से माया-मृत्यु के महापाश से विमुक्त हूं तथा साक्षात् शिवस्वरूप हूं ॥

प्रातःकाल से सायंकाल तक तथा सायंकाल से प्रातःकाल तक हे जगन्नाथ ! मैं जो भी कार्य करता हूं उसमें आपकी पूजा हो ॥

इस प्रकार गुरु से क्षमा प्रार्थना कर, कुण्डलिनी का ध्यान करे, कुण्डलिनी का स्वरूप इस प्रकार है—

नाभिमूल से आरम्भ कर ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त, करोड़ों सूर्य के समान दिव्य तेज रूप तथा करोड़ों चन्द्रमा के समान सुशीतल होते हुए सूर्य के समान है ॥

उद्यद्हिमकरघौतां यावच्छवासनासीनाम्॥

इति ध्यात्वा तत्प्रभापटलव्याप्तं स्वदेहं विचिन्त्य, वक्ष्यमाणमूलमन्त्ररूपादिकं करं षडङ्गं कृत्य ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य मुद्राः प्रदर्श्य, विसृजेत्। ततः स्वगुरु-देवताऽऽत्मना तदैक्यं विभाव्य, देवं स्तुत्वा,

प्रातः प्रभृति सायान्ते सायादि प्रातरन्ततः॥
इति निजकृत्यं समापयेत्

अथ सहजसिद्धं गुरूपदेशेन ज्ञात-जपाजपं कुर्यात्। इसके उपरान्त तेजस्विनी, साक्षात् परस्वरूपा कुण्डलिनी का ध्यान दृढ़ आसन से प्रत्येक श्वास में करे।

इस प्रकार ध्यान कर कुण्डलिनी के तेज से मेरा शरीर व्याप्त है, ऐसी भावना कर आगे कहे जाने वाले मन्त्र से ऋष्यादि कर न्यास तथा अष्टांगन्यास कर ध्यान करे। फिर, मानसोपचार से कुण्डलिनी का पूजन कर, मुद्रा प्रदर्शित करे और मूल मन्त्र का दस हजार बार जप करे।

फिर अपने गुरु तथा इष्ट देवता में एकता की भावना कर इष्ट देवता की स्तुति करे।

स्तुति का स्वरूप इस प्रकार है।

"हे प्रभो ! प्रातःकाल से सायंकालपर्यन्त तथा सायंकाल से प्रातःकाल पर्यन्त मैं जो भी कृत्य करता हूं उससे आपकी पूजा हो।"

ऐसा कहकर अपना कृत्य भगवान को समर्पण करे। फिर गुरु के द्वारा उपदिष्ट सहज सिद्ध अजपाजप करे। उसका प्रकार अथवा विनियोग यह है—

ओं अस्य श्री अजपा-मन्त्रस्य हंस ऋषिः अव्यक्ता गायत्री छन्दः हंसो देवता, हं बीजम् सः शक्तिः सोऽहं कीलकं मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिकं कृत्वा हंसीं सूर्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
हंसीं सोमात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा॥ हंसीं निरञ्जनात्मने अनामिकाभ्यां

हुम् । हंसीं अनन्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदयादिषु विन्यस्य, ओं भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धनं कृत्वा ध्यायेत् ।

विनियोग—इस अजपाजप रूप मन्त्र का "हंस" ऋषि है, अव्यक्त गायत्री छन्द है, "हंस" देवता है, "हं" बीज है, 'सः' शक्ति तथा "सोऽहं" कीलक है, मैं मोक्ष की इच्छा से इसका जप करता हूं । पश्चात् ऋष्यादिक न्यास करे । "हंसीं सोमात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः" इस मन्त्र से दोनों अंगूठों का "हंसीं सोमात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा" इस मन्त्र से दोनों तर्जनियों का "हं खूं निरञ्जनात्मने अनामिकाभ्यां हुम्", इस मन्त्र से दोनों अनामिकाओं का हंसीं अव्यक्तात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्" इस मन्त्र से दोनों कनिष्ठिकाओं का तथा हंसः अनात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् इस मन्त्र से दोनों करतल तथा करपृष्ठों का स्पर्श करे । इसी प्रकार पूर्वोक्त मन्त्रों से क्रमशः हृदय, सिर, दोनों बाहु, दोनों नेत्र "अस्त्राय फट्" से चारों ओर थपोड़ी बजाता हुआ "ओं भूर्भवः स्वरोम्, से अपने चारों ओर की रक्षा के लिए पीली सरसों का विकरण करता हुआ नीचे लिखे मन्त्रों से ध्यान करे ।

अग्नीषोमगुरुद्वयप्रणवकं बिन्दुत्रिनेत्रोज्ज्वलं
भास्वद्रूपमुखं शिवाङ्घ्रियुगलं पार्श्वस्थसूर्यानिलम् ।
उद्यद्भास्करकोटि-कोटसदृशं हंसं जगद्व्यापिनं
शब्दब्रह्ममयं हृदम्बुजपटे नीडे सदा संहरेत् ॥

इस प्रकार ध्यान करके

"ओं हं हंसः सोऽहं स्वाहा" "हंसहंसाय विद्महे सोऽहं हंसाय धीमहि । तन्नो हंसः प्रचोदयात्" इस मन्त्र का "ओं ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा" इस आत्मा के आठ अक्षरों का तथा "हंसहंसाय" इत्यादि गायत्री का यथाशक्ति जप करके पूर्व दिन के जपाजप का निवेदन करे ।

फिर पूर्व दिन के समान प्रातःकाल सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक श्वासोच्छ्वासरूप से श्वासोच्छ्वासरूपेणास पादाधिकमेकविंशत्सहस्रकं जपन् तत्तद्देवताभ्यो निवेदयिष्ये ।" इति सङ्कल्पं समर्पयेत् ।

व-श-ष-स दलयुक्ते सम्यगाधारपद्मे
तरुणमरुणवर्णं वारुणास्यं दिनेशम् ।
अभय- वरदहस्तं चारुपाशाङ्कुशाढ्यं
करयुगलमनन्यं चिन्तयेद् विघ्नराजम् ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा,

सम्पूज्य वं नमः हंसः सोऽहं, शं नमः हंसः सोऽहं, षं नमः हंसः सोऽहं, सं नमः हंसः सोऽहं, पूर्वदिनकृतमजपाजपमाधारपटलस्थितगणपतयेऽहं

इति समर्प्य

२१६०० जप का तद् तद् देवता को निवेदन करने का संकल्प कर, उस दिन के कुल २१६०० श्वास रूप मन्त्र का निवेदन करे ।

आधार पक्ष के "व श ष स" रूप दल पर अत्यन्त रक्त वर्ण वाले हाथी के समान मुख वाले, दो नेत्र वाले अभय तथा वर रूप में दोनों हाथों में सुन्दर पाश तथा अंकुश को धारण करने वाले विघ्नराज गणेश का ध्यान करे ॥ १ ॥

इस प्रकार गणेश का ध्यान करके मानसोपचार से विघ्नराज गणेश का पूजन करे । "वं नमः हंसः सोऽहं वं नमः हंसः सोऽहं" इस प्रकार दिन के पूर्व भाग में किये हुए अजपाजप को आधार पटल में स्थित गणपति को निवेदन करता हूं । ऐसा कहकर निवेदन करे । तदनन्तर

ब भ-म-य-र-ल संज्ञैरक्षरैर्दीप्तिपद्मे
सरुचिरतरवेषं चिन्तयेत् पद्मयोनिम् ।
अभयवरदहस्तं चारु रम्याऽक्षमाला-
विकासितकरपद्मं सृष्टिकृद्विश्वमूर्तिम् ॥ २ ॥

इस प्रकार अपने हृदय स्थान पर ब्रह्मा का ध्यान कर मानसोपचार से उनका पूजन करे "बं नमः हंसः सोऽहं" से लेकर "नमः हंसः सोऽहं" तक दिन के पूर्व भाग में छह हजार (६०००) अजपा का जप करे । फिर 'स्वाधिष्ठान स्थित ब्रह्मणेऽहं षट्सहस्रम् अजपाजपं निवेदयामि, कहकर जप का निवेदन करे—

"ड" अक्षर से आरम्भ कर "फ" अक्षर पर्यन्त दलों से निर्मित पटल पर बैठे हुए श्री हरि का ध्यान करे, जिनका शरीर सूर्य के समान देदीप्यमान हो रहा है, जो अज शरीर पुरुष तथा नारायण रूप से विख्यात हैं, जो लक्ष्मी से युक्त हैं, तथा जिनके हाथ में शंख, चक्र, गदा है।

हस्ताम्भोजगदादिशङ्खममलं पीताम्बरं कौस्तुभ-
ग्रैवेयाङ्गद-लाट-नूपुरयुतं नाभौ मुदा चिन्तयेत्।। ३।।

इति नाभौ विष्णुं ध्यात्वा, हंसं मानसोपचारैः सम्पूज्य "ढं नमः हंसः सोऽहं, ढं नमः हंसः सोऽहं" इत्यादि "फं नमः सोऽहम्" इत्यन्तं पूर्वदिनकृत-षट्सहस्रमजपाजपं मणिपूरस्थविष्णवेऽहं निवेदयामि इति समर्प्य।

वागोष्ठान्तगतैः प्रकल्पितदले पद्मे निविष्टं शिवम्
एकं नामकमण्डलप्ररुचिरं त्र्यक्षं कपर्दोज्ज्वलम्।
शान्तं टङ्कामृगमदयुतैर्युक्तं करैः सर्वतः
ग्रैवेयाऽङ्गदहारनूपुरयुतं चर्माम्बरं चिन्तयेत्॥ ४॥

जिनके हाथ में कमल, गदा, शंख विराज रहे हैं, जो शुद्ध पीताम्बर कौस्तुभ ग्रैवेय भुजापट, हार तथा नूपर को धारण किये हुए हैं, इस प्रकार के स्वरूप वाले भगवान् विष्णु को नाभि स्थान में ध्यान करना चाहिये॥ ३॥

इस प्रकार नाभि-स्थान से विष्णु का ध्यान करके मानसोपचार से उनकी पूजा करे। फिर "डं नमः हंसः सोऽहं" इत्यादि क्रम से "फं नमः हंसः सोऽहम्" पर्यन्त दिन के पूर्व भाग में किये गये छः हजार (६०००) अजपाजप को "मणिपूरस्थविष्णवेऽहं निवेदयामि" कहकर विष्णु को निवेदन करे। फिर "क" से लेकर "ठ" तक के अक्षर रूप दलों से बने हुए कमल दल पर बैठे हुए शिव का ध्यान करे जो शरत् पूर्ण चन्द्रमा की कान्ति के समान देदीप्यमान हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो जटाजूट से सुशोभित हैं, जिनका स्वरूप अतिशान्त है, जो हाथों में टंक, मृगमद तथा अभयमुद्रा को धारण किये हुए हैं। इस प्रकार शिव स्वरूप का हृदयस्थान में ध्यान करे।

इति हृदि शिवं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य "कं नमः हंसः सोऽहम्" इत्यन्तमुच्चार्य पूर्वदिनकृत-षट्सहस्रमजपाजपमनाहतस्थितशम्भवेऽहं निवेदयामि इति समर्प्य

प्रत्यङ्ज्ञानुनिविष्टमङ्गरहितं व्याप्तं जगत्कारणं
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं गुणाऽगुणमयं वैराग्यसम्मिश्रितम्।
साक्षात्षोडशवर्णपत्रकमले जीवं परं चिन्तयेत्॥ ५॥

इति कण्ठे जीवं ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य "अं नमः हंसः सोऽहम्," इत्यादि "अः नमः हंसः सोऽहम्," इत्युक्त्वा॥ ४॥

पश्चात्, मानसोपचार से उनका पूजन करे, फिर "कं नमः हंसः सोऽहम्" से आरम्भ कर "ठं नमः हंसः सोऽहं" पर्यन्त अक्षरों के द्वारा पूर्व दिन में किये गये ६००० संख्यक अजपाजप को 'अनाहतस्थितशम्भवेऽहं निवेदयामि" कहकर समर्पित करे। तदनन्तर।

"अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ लॄ, ए ऐ ओ, औ, अं, अः इन षोडश वर्ण रूप दलों से बने हुए कमल पर निराकार रूप से विराजमान जगत् में व्याप्त हो कर भी जगत् के कारण स्वरूप, सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतम, वैराग्य मिश्रित सगुण तथा निर्गुण स्वरूप मूर्त एवं अमूर्तस्वरूप, स्वच्छ ज्योति से जगमगाते हुए जीव का ध्यान करना चाहिये।

इस प्रकार कण्ठ-स्थान पर जीव का ध्यान करता हुआ "अं नमः हंसः सोऽहम्" से प्रारम्भ कर "अः नमः"

पूर्वदिनकृत-सहस्रमजपाजपं विशुद्धस्थितिजीवायाऽहं निवेदयामि इति पठित्वा, समर्पयेत्।

हक्षाभ्या परिक्लृप्त-पत्ररचिते पद्मे जगत्कारणं
विश्वोत्तीर्णमनेक-देहनिलयं विद्युद्विलासं पदम्।
तत्तद्योग्यतया स्वदेशिकतनुं सम्प्राप्तरूपं परं
प्रत्यक्षरविग्रहगुरुपदं ध्यायेत् परं दैवतम्॥ ६॥

इति भ्रूमध्ये श्रीगुरुपदं ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य नमः हंसः सोऽहं क्षं नमः हंसः सोऽहम् पूर्वदिनकृत-सहस्रमजपाजपमाज्ञाचक्रस्थगुरवेऽहं निवेदयामि इति समर्प्य ।

हंसः सोऽहं पर्यन्त अक्षरों से किये गये एवं पूर्व दिन कृत १००० संख्याक अजपाजप को "विश्वस्थित- जीवायाऽहं निवेदयामि" कह कर जीव स्वरूप परमात्मा को निवेदित करे । तदनन्तर—

"ह" से लेकर "क्ष" पर्यन्त अक्षर-रूप दलों से बने हुए कमल पर विराजमान परब्रह्मस्वरूप गुरु का ध्यान करे, जिनका विग्रह प्रत्यक्ष अक्षर स्वरूप है, तथा जो अनेक शरीरों से जगत् में व्याप्त हैं, जिनके शरीर की कान्ति विद्युत् के समान जगमगा रही है, मन्त्र की तत्तद् योग्यता से जो साक्षात् परमेश्वर स्वरूप हैं ॥ ६ ॥

इस प्रकार भ्रू के मध्य श्रीगुरु का ध्यान करे और मानसोपचार से पूजन कर, "हं नमः हंसः सोऽहं सः" "क्षं नमः हंसः सोऽहं" पर्यन्त अक्षरों से किये हुए अजपाजप को 'आज्ञाचक्रस्थगुरवेऽहं निवेदयामि" कहकर निवेदन करे । तदनन्तर

विश्वस्यादिमनादिमेककमलं नित्यं परं निष्कलं
नित्योद्बुद्धप्रशस्तनैकद्युतिभिः संवित्स्फुरद्देहिनम् ।
स्मृत्वाऽऽत्मानमनेक-विश्वनिलयं स्वच्छं जगत्सर्वतः ।

इति ब्रह्मरन्ध्रे परमात्मानं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य 'अं नमः हंसः सोऽहम्" इत्यादि 'क्षं नमः हंसः सोऽहम्" इत्यंतम् आदाक्षिण्येन विन्यस्य "पूर्व-दिन-कृतसहस्रमजपाजपं ब्रह्मरन्ध्रस्थितपरमात्मनेऽहं निवेदयामि" इति समर्प्य ध्यायेत्—

हंसो गणेशो विधिरेव हंसो
हंसो हरिर्हंसमयश्च शम्भुः ।
हंसो हि जातो गुरुदेवहंसो
हंसो ममाऽऽत्मा परमात्महंसः ॥

फिर सहस्रदल के कमल पर प्रणव से युक्त आत्मा का ध्यान करे, जो विश्व का आदि किन्तु स्वयं अनादि है, जो एक स्वच्छ नित्य मायारहित है ।

जो जाग्रत, स्वप्न तथा सुषुप्ति से परे है, तुरीयावस्था में विद्यमान है, जो नित्यानन्द स्वरूप मुनियों के जानने के योग्य तथा अन्तःकरण में स्फुरित हो रहा है, जो जगत् में बाहर और भीतर विराजमान है ॥

इस प्रकार ब्रह्मरन्ध्र में परमात्मा का ध्यान करके मानसोपचार से उनका पूजन करे ।

"ओं नमः हंसः सोऽहं" पर्यन्त तक किये गये जप को दायें से न्यास कर दिन के पूर्व भाग में—

"ब्रह्मरन्ध्रस्थितपरमात्मनेऽहं निवेदयामि" कहकर समर्पित करे । फिर निम्न प्रकार से ध्यान करे—

गणेश हंस है, ब्रह्मा हंस है, श्रीहरि हंस है, शम्भु हंस है, जाति भी हंस है, गुरु भी हंस है, यह हमारी आत्मा भी हंस है ॥

देहो देवालयः प्रोक्तः जीवो नाम सदाशिवः ।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ॥

इति ध्यात्वा जीवात्मपरमात्मनोरैक्यं विभाव्य, सङ्कल्पं कुर्यात् । ओं अद्य सूर्योदयादारभ्य श्वः सूर्योदयपर्यन्तं जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिषु नासापुटितश्वासोच्छ्वासाभ्यां सोऽहंरूपाभ्यां षट्शतोत्तरमेकविंशसहस्रसंख्याऽजपागायत्रीमन्त्र जपमहं करिष्य इति संकल्प्य देवं प्रार्थयेत् ।

त्रैलोक्यचैतन्य आदिदेव
कपीश शम्भो ! भवदाज्ञयैव ।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं
संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ॥

यह शरीर मन्दिर है तथा इसमें निवास करने वाला जीव सदाशिव स्वरूप है । इसलिए इनकी पूजा में अज्ञान स्वरूप निर्माल्य का मैं त्याग करता हूँ । केवल "सोऽहं" भावना से पूजा करनी चाहिए ॥

इस प्रकार ध्यान करके जीवात्मा तथा परमात्मा की एकता का ध्यान करता हुआ नीचे लिखा हुआ संकल्प करे। देशकाल का संकीर्तन करे। आज के सूर्योदय से आरम्भ करके कल सूर्योदय पर्यन्त जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था में नासापुट के श्वास तथा उच्छ्वास से निकले हुए सोऽहं रूप मन्त्र का २१६०० संख्या में अजपाजप गायत्री का जप करूँगा इस प्रकार संकल्प कर निर्विघ्नता के लिए देवता की प्रार्थना करे।

हे त्रैलोक्यचैतन्यमय ! हे आदिदेव ! हे कपीश ! हे शम्भो ! आपकी आज्ञा से प्रातःकाल उठकर संसार यात्रा के लिये कार्य रहा हूँ ॥१०॥

अहं देवो न चाऽन्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोऽहमात्मानमिति भावयेत् ॥११॥
संसारयात्रामनुवर्तमानं त्वदाज्ञया श्रीहनुमन्महेश।
स्पर्द्धातिरस्कारकलिप्रमादभयानि मा माऽभिभवन्तु तात ॥१२॥
जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
त्वया जगत्प्राणहृदि स्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥१३॥
इति देवं प्रार्थ्य बहिर्गमनार्थं मही ध्यायेत्।
समुद्रकाञ्चीसम्भूषे पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥१४॥

मैं ही देव हूँ और कुछ दूसरा नहीं हूँ। मैं ही परब्रह्म हूँ। मुझे किसी प्रकार का शोक नहीं है। मैं ही सच्चिदानन्द स्वरूप हूँ। इस प्रकार ध्यान करे ॥१४॥ हे हनुमान् ! हे महेश ! संसार में अपने निर्वाह के लिए काम करने वाले मुझ को, आपकी आज्ञा से स्पर्धा, तिरस्कार, कलह, प्रमाद तथा भय के द्वारा कोई अनादर प्राप्त न हो ॥१५॥

मैं धर्म को जानता हूँ, पर मेरी उसमें प्रवृत्ति नहीं है, मैं पाप को जानता हूँ पर उससे अब मेरा छुटकारा नहीं हो पाता। अतः हे जगत्प्राण ! मेरे हृदय में बैठ कर आप जैसी आज्ञा देते हैं, वैसा ही कर रहा हूँ ॥१६॥

इसी प्रकार देवता की प्रार्थना कर बाहर जाने के लिए पृथ्वी की प्रार्थना करे। आप समुद्ररूप मेखला तथा पर्वतरूप स्तनमण्डल से विराजमान है। विष्णु पत्नि ! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम मेरे द्वारा किये गये चरण स्पर्श को क्षमा करो ॥१४॥

इति प्रार्थ्य "ऐं" इत्युत्थाय करे जलपात्रमादाय, नगराद् बहिः शौचादिकं कर्तुं त्रिवारं, देवं च स्मरन् गच्छेत् ॥

इति प्रातःकृत्यं समाप्तम् ॥

तत्र गत्वा जलपात्रं स्वनैर्ऋत्ये संस्थाप्य भूतसङ्घान् प्रार्थयेत्—
गच्छन्तु पितरो देवा ऋषयो यक्षराक्षसाः।
भूतप्रेतपिशाचाद्याः करिष्ये मलमोचनम् ॥१॥
इति प्रार्थ्य "ल" इति—

प्रादेशमात्रं भूतलं सम्मृज्य दक्षिणकर्णोपवीती वसनवेष्टितमस्तको दिवा प्राङ्मुखो वोदङ्मुखो रात्रौ च दक्षिणदिङ्मुखो मौनी तत्रोपविश्य "क्रौं" इतिमध्यातर्जनीभ्यां

ऐसी प्रार्थना कर "ऐं" इस मन्त्र का उच्चारण कर जलपात्र लेकर गांव से बाहर, शौच करने के लिये, तीन बार अपनी इष्ट देवता का स्मरण करते हुए जायें।

इस प्रकार प्रातःकाल का कृत्य समाप्त।

शौच के लिये नगर से बाहर अकृष्ट भूमि में जाकर नैर्ऋत्य दिशा में जल को रखकर भूत संघों की प्रार्थना करे।

पितर, देवता, ऋषि, यक्ष, राक्षस, भूत, प्रेत आदि इस स्थान से दूर चले जायें, क्योंकि मैं यहाँ मलमोचन करूंगा ॥१॥

इस प्रकार प्रार्थना कर "ल" इस मन्त्र को पढ़कर प्रादेशमात्र भूमि को स्वच्छ करे। दायें कान पर जनेऊ को चढ़ाये। वस्त्र से अपने शरीर को ढककर दिन में पूर्वमुख होकर अथवा उत्तराभिमुख होकर, रात्रि में दक्षिणाभिमुख मौन होकर शौच के लिये बैठे।

क्रौं इति लिंगं धृत्वा ओं ह्रीं कपालिन्यै नमः इति मूत्रं विसृज्य ओं ह्रीं रक्तचामुण्डायै नमः इति मलं विसृजेत्।

वं इति जलेन बहुमृदा च लिङ्गगुदे
प्रक्षाल्य "ऐं क्लीं श्रीं"

इति करौ पादौ च प्रक्षाल्य ह्रीं क्लीं ह्रीं इति पुनः करौ प्रक्षाल्य दन्तधावनं कुर्यात्।

दन्त धावन विधि

चम्पाऽऽम्र-जम्बू-अपामार्गाणामेकतमं वृक्षं प्रार्थयेत् ।

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशून् वसूनि च ।

श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥

इति प्रार्थ्य अष्टौ दश द्वादशाङ्गुलं वा विहित वृक्षशास्त्रोक्तदन्तकाष्ठं गृहीत्वा, "क्लीं" कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः ।

इस मन्त्र से मध्यम तर्जनी उंगलियों के द्वारा लिंग को पकड़कर "ओं कपालिन्यै नमः" इस मन्त्र से मूत्र का तथा ओं रक्तचामुण्डायै नमः इस मन्त्र से जल तथा मिट्टी के द्वारा गन्धक्षय पर्यन्त लिंग और गुदा का प्रक्षालन करे। फिर "ऐं क्लीं श्रीं" इस मन्त्र से दोनों हाथों और पैरों का तथा "ह्रीं क्लीं ह्रीं" इस मन्त्र से पुनः हाथ का प्रक्षालन करे और दाँतून के लिये चम्पा, आम, जामुन तथा अपामार्ग में से किसी वृक्ष की प्रार्थना करे

"हे वनस्पते ! आप मुझे आयु, बल, यश, तेज, संतति, पशु, धन, धान्य, श्री, मेधा तथा प्रज्ञा प्रदान करें ॥

इस प्रकार प्रार्थना कर आठ दस या बारह उंगल की दाँतून के लिये शास्त्र में विहित वृक्ष की शाखा से दांतून काट ले । फिर "क्लीं" कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः ।

दर्भान् संशोध्य "क्लीं" इति जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं प्रक्षालयेत् । ततः करौ प्रक्षाल्य देवं स्मरन् मुखं प्रक्षालयेत् । इति दन्तधावन-विधिः ।

ततो हनुमन्तं स्मरन् योगमन्दिरे सम्मार्जनादिकं कृत्वा मंगलार्तिकं विधाय, निर्माल्यमपसार्य देवगुणकर्मादिकं स्मरन् स्नातुं नदीं गच्छेत् । तत्र गत्वा "फट" इति तारिं प्रोक्ष्य स्नानोपस्करं संस्थाप्य, तर्जन्यां स्वर्णरजत-निर्मितां मुद्रिकां कुशमयीं वा धृत्वा गणेशं च नत्वा अन्तःस्नानं कुर्यात् । शिरसि सहस्रदल, कमल, कर्णिकायां विराजमानं कोटिसूर्यप्रतीकाशं निजविविधभूषण-विभूषितविग्रहं वराऽभयकराऽम्बुजं श्रीगुरुं ध्यायेत् ॥

इस मन्त्र से दान्तों को शुद्ध करे । पश्चात् क्लीं इस मन्त्र से जिह्वा को साफ कर दन्तधावन के छिलकों को धोकर शुद्ध स्थान में फेंक दें । तदनन्तर हाथ धोकर इष्ट देवता का स्मरण करता हुआ मुख का प्रक्षालन करे ।

दन्तधावनविधि समाप्त ।

स्नानविधि

तत्पश्चात् श्री हनुमान जी का स्मरण करता हुआ यज्ञ भूमि को लीपे और मंगल आरती करे । फिर श्री हनुमान जी के ज्ञान आदि गुण तथा अतुलित बलधाम आदि पराक्रम का स्मरण करता हुआ स्नान के लिये नदी में जाये । वहां जाकर "फट्" इस मन्त्र से तारि को शुद्ध करे और वहां पर स्नान की समस्त सामग्री धोती, कमण्डलु आदि को रखे और तर्जनी उंगली में सोने, चांदी अथवा कुशा की अंगूठी धारण कर एवं गणेश जी का स्मरण करके सर्वप्रथम मानसिक स्नान करे । सिर पर सहस्रदल कमल में करोड़ों सूर्यों के समान देदीप्यमान निज विविध आभूषणों से युक्त कर तथा अभयमुद्रा हाथों में धारण किये हुए श्री गुरु का स्मरण करे ।

ध्यात्वा तच्चरणविगलितामृत-धारया-ऽन्तर्गतं मलं प्रक्षाल्य, विशुद्धान्तःकरणो बहिःस्नानं कुर्यात् । नाभिमात्रोदकं गत्वा पुरतो हस्तमात्रं तीर्थं कल्प्य आचम्य प्राणानायम्य ।

"क्रों" इत्यङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाहयेत् ।

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः संस्पृष्टानि ते रवे ।

तेन सत्येन सकलं तीर्थं देहि दिवाकर ॥

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

उनके चरण से निकले हुए अमृत की धारा से अपने समस्त पापों को दूर करने की भावना से अन्तःकरण के पापों को दूर करके पश्चात् बाहरी स्नान करे । नाभिमात्र जल में जाकर अपने चारों ओर एक हाथ तीर्थ कल्पना करता हुआ आचमन करे । फिर प्राणायाम करे । "क्रों" इस मन्त्र से अंकुश मुद्रा को बनाकर तीर्थों का आह्वान करे ।

हे रवे ! इस ब्रह्माण्ड के भीतर रहने वाले समस्त तीर्थ तुम्हारी किरणों से

दन्त धावन विधि

चम्पाऽऽम्र-जम्बू-अपामार्गाणामेकतमं वृक्षं प्रार्थयेत् ।
आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशून् वसूनि च ।
श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥

इति प्रार्थ्य अष्टौ दश द्वादशाङ्गुलं वा विहित वृक्षशास्त्रोक्तदन्तकाष्ठं गृहीत्वा, "क्लीं" कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः ।

इस मन्त्र से मध्यम तर्जनी उंगलियों के द्वारा लिंग को पकड़कर "ओं कपालिन्यै नमः" इस मन्त्र से मूत्र का तथा ओं रक्तचामुण्डायै नमः इस मन्त्र से जल तथा मिट्टी के द्वारा गन्धक्षय पर्यन्त लिंग और गुदा का प्रक्षालन करे। फिर "ऐं क्लीं श्रीं" इस मन्त्र से दोनों हाथों और पैरों का तथा "ह्रीं क्लीं ह्रीं" इस मन्त्र से पुनः हाथ का प्रक्षालन करे और दांतून के लिये चम्पा, आम, जामुन तथा अपामार्ग में से किसी वृक्ष की प्रार्थना करे

"हे वनस्पते ! आप मुझे आयु, बल, यश, तेज, संतति, पशु, धन, धान्य, श्री, मेधा तथा प्रज्ञा प्रदान करें ॥

इस प्रकार प्रार्थना कर आठ दस या बारह उंगल की दांतून के लिये शास्त्र में विहित वृक्ष की शाखा से दांतून काट ले । फिर "क्लीं" काम देवाय सर्वजनप्रियाय नमः ।

दर्भान् संशोध्य "क्लीं" इति जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं प्रक्षालयेत् । ततः करौ प्रक्षाल्य देवं स्मरन् मुखं प्रक्षालयेत् । इति दन्तधावन-विधिः ।

ततो हनुमन्तं स्मरन् योगमन्दिरे सम्मार्जनादिकं कृत्वा मंगलारार्तिकं विधाय, निर्माल्यमपसार्य देवगुणकर्मादिकं स्मरन् स्नातुं नदीं गच्छेत् । तत्र गत्वा "फट" इति तारिं प्रोक्ष्य स्नानोपस्करं संस्थाप्य, तर्जन्यां स्वर्णरजत-निर्मितां मुद्रिकां कुशमयीं वा धृत्वा गणेशं च नत्वा अन्तःस्नानं कुर्यात् । शिरसि सहस्रदल, कमल, कर्णिकायां विराजमानं कोटिसूर्यप्रतीकाशं निजविविधभूषण-विभूषितविग्रहं वराऽभयकराऽम्बुजं श्रीगुरुं ध्यायेत् ॥

इस मन्त्र से दान्तों को शुद्ध करे । पश्चात् क्लीं इस मन्त्र से जिह्वा

को साफ कर दन्तूअन के छिलकों को धोकर शुद्ध स्थान में फेंक दें । तदनन्तर हाथ धोकर इष्ट देवता का स्मरण करता हुआ मुख का प्रक्षालन करे ।

दन्तधावनविधि समाप्त ।

स्नानविधि

तत्पश्चात् श्री हनुमान जी का स्मरण करता हुआ यज्ञ भूमि को लीपे और मंगल आरती करे । फिर श्री हनुमान जी के ज्ञान आदि गुण तथा अतुलित बलधाम आदि पराक्रम का स्मरण करता हुआ स्नान के लिये नदी में जाये । वहां जाकर "फट्" इस मन्त्र से तरि को शुद्ध करे और वहां पर स्नान की समस्त सामग्री धोती, कमण्डलु आदि को रखे और तर्जनी उंगली में सोने, चांदी अथवा कुशा की अंगूठी धारण कर एवं गणेश जी का स्मरण करके सर्वप्रथम मानसिक स्नान करे। सिर पर सहस्रदल कमल में करोड़ों सूर्यों के समान देदीप्यमान निज विविध आभूषणों से युक्त कर तथा अभयमुद्रा हाथों में धारण किये हुए श्री गुरु को स्मरण करे ।

ध्यात्वा तच्चरणविगलिताऽमृत-धारया-ऽ-तर्गतं मलं प्रक्षाल्य, विशुद्धान्तः करणो बहिःस्नानं कुर्यात् । नाभिमात्रोदकं गत्वा पुरतो हस्तमात्रं तीर्थं कल्प्य आचम्य प्राणानायम्य ।

"क्रों" इत्यङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाहयेत् ।
ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः संस्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन सकलं तीर्थं देहि दिवाकर ॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

उनके चरण से निकले हुए अमृत की धारा से अपने समस्त पापों को दूर करने की भावना से अन्तःकरण के पापों को दूर करके पश्चात् बाहरी स्नान करे । नाभिमात्र जल में जाकर अपने चारों ओर एक हाथ तीर्थ कल्पना करता हुआ आचमन करे । फिर प्राणायाम करे । "क्रों" इस मन्त्र से अंकुश मुद्रा को बनाकर तीर्थों का आह्वान करे ।

हे रवे ! इस ब्रह्माण्ड के भीतर रहने वाले समस्त तीर्थ तुम्हारी किरणों से

पुष्ट हैं। अतः हे दिवाकर ! इस सत्य से इस जल में समस्त तीर्थ मुझे प्रदान करो ॥

हे गंगे ! हे यमुने ! हे गोदावरि ! हे सरस्वति ! हे नर्मदे ! हे सिन्धो हे कावेरि ! इस जल में आपका सन्निधान हो ॥

आवाहयामि त्वां देवि ! स्नानार्थमत्र सुन्दरि ।

एहि गंगे ! नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥

इत्यावाह्य "व" इति तीर्थान् तज्जले संयोज्य, रव्यग्नीन्द्रमण्डलानि तत्र सञ्चिन्त्य "व" इति द्वादशधाऽभिमन्त्र्य धेनुमुद्रया मुद्रीकृत्य, मत्स्येनाच्छाद्य "हूँ" इत्यवगुण्ठ्य चक्रेण संरक्ष्य "फट्" इति छोटिकया दशदिग्बंधनं कृत्वा मूलेनैकादशधाऽभिमन्त्र्य जलं नमेत् ।

हे समस्त तीर्थों से संयुक्त सुन्दरी गंगा देवी ! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। इस जल में हम तुम्हारा आह्वान करते हैं ॥

इस प्रकार जल में तीर्थों का आह्वान करके "व" इस मन्त्र से उन तीर्थों को जल में मिलाये। सूर्य, अग्नि तथा चन्द्रमण्डल के तेज का ध्यान करता हुआ। "व" इस मन्त्र से बारह बार जल अभिमन्त्रित करे। धेनुमुद्रा से अमृततुल्य बनाकर तथा मत्स्य "मुद्रा" को आच्छादित कर "हूँ" इस मन्त्र से उसे अवगुण्ठित करके चक्रमुद्रा से उस जल की रक्षा करता हुआ "फट्" इस मन्त्र से छींटों द्वारा दस दिशाओं की रक्षा करे। फिर मूल मुद्रा से ग्यारह अथवा बारह बार जल को अभिमन्त्रित करके उसे प्रणाम करे।

ततो जलं पूर्वोक्तविधिना प्रक्षिप्य चतुष्कोणे वक्ष्यमाणं विचिन्त्य, बिन्दौ हनुमन्तं ध्यात्वा, षडङ्गमन्त्रैः पञ्चोपचारैः सम्पूज्य मूलेन कुम्भमुद्रया शिरसि तोयं त्रिः प्रक्षिप्य ओं स्वाहा इत्याचामेत्। ततः सप्तरन्ध्राणि संरुन्धयन् त्रिर्निमज्ज्य देवं मनसि स्मरन् "हिरण्यशृङ्गम्" इत्यादिवैदिकमन्त्रैस्तान्त्रिकमन्त्रैश्च स्वदेहमभिषिञ्चेद् यथा—

हिरण्यशृङ्गं वरुणं प्रपद्ये तीर्थं मे देहि याचितः ।

तदनन्तर जल में पूर्वोक्त कर्म से उनके चारों ओर हनूमत् मन्त्र का ध्यान करता हुआ, बिन्दु में हनुमान् का ध्यान करता हुआ, षडङ्ग मन्त्रों से पञ्चोपचार

द्वारा उस जल का पूजन करे। मूल मन्त्र से कुम्भ के द्वारा सिर पर तीन बार जल छिड़ककर "श्रों ह्रीं स्वाहा" इस मन्त्र से उस जल द्वारा आचमन करे। पश्चात् शरीर के सात छिद्र—दो कान, दो नेत्र, दो नासिका पुट तथा मुख को धोता हुआ तीन बार जल में डुबकी लगाये। फिर इष्ट देवता श्री हनुमान् जी का स्मरण करता हुआ "हिरण्यशृङ्गम्" इत्यादि वैदिक तथा तान्त्रिक मन्त्रों से अपने शरीर पर जल छोड़े।

वह इस प्रकार है—

मैं हिरण्यशृङ्ग वरुण की शरण में हूँ। मैं वरुण, मैं आप समस्त तीर्थों की याचना कर रहा हूँ। आप मुझे समस्त तीर्थ प्रदान करें।

यन्मयाऽऽत्तं प्रसाधूनां पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः ॥
यन्मया मनसा वाचा कर्मणा वाऽघः कृतम्।
तन्म इन्द्रो वरुणो बृहस्पतिः सविता च पुनन्तु पुनः पुनः ॥
इयं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥
आधारा सर्वभूतानां विष्णोर्जाताश्च तेजसा
तद्रूपाश्च ततो जाता आपस्ताः प्रणमाम्यहम् ॥७॥
सिसृक्षोर्निखिलं विश्वं ग्रहः शुक्रं प्रजापतेः।
मातरः सर्वभूतानामापो देव्यः पुनन्तु माम् ॥८॥
अलक्ष्मीमलरूपा या सर्वभूतेषु संस्थिता।
क्षालयन्ति निजस्पर्शात्सर्वा देव्यः पुनन्तु माम् ॥

जो मैंने साधुजनों को दान किया है अथवा पापियों से प्रतिग्रह लिया है अथवा उनका मन वचन और कर्म से जो पाप किया है, मेरे उन पापों को इन्द्र, वरुण, बृहस्पति और सविता नष्ट कर पवित्र करें ॥

जो समस्त प्राणियों का आधार है, तथा जिसकी उत्पत्ति अत्यन्त तेजस्वी श्री विष्णु से हुई है उस जल को मैं प्रणाम करता हूँ ॥

विश्व की सृष्टि करने वाले भगवान् प्रजापति का शुक्र जिसमें पड़ा है, तथा जो समस्त प्राणियों का पालन करने के कारण मातृस्वरूप है उस जल की अधिष्ठात्री देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥

जो समस्त प्राणियों के भीतर रहने वाली मलरूप अलक्ष्मी का स्पर्श मात्र से ही विनाश कर उन्हें पवित्र करते हैं उस जल की अधिष्ठात्री देवी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥८॥

यन्मे केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्द्धनि ।
ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरपस्तदघ्नन्तु वो नमः ॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयं सुखम् ।
सन्तोषः शान्तिरास्तिक्यं विद्या भवतु ते नमः ॥

एभिर्मन्त्रैर्जलेन चाऽभिषिच्य 'देवांस्तर्पयामि, ऋषींस्तर्पयामि, पितॄंस्तर्पयामि ।'' इति सन्तर्प्य वस्त्रं सम्पीड्य, क्षालयित्वा, तीरमागत्य भूतादिभ्योऽञ्जलित्रयं दद्यात् ।

असुरा भूतवेतालाः कूष्माण्डा ब्रह्मराक्षसाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा ॥

इति दत्वा मूलेन प्रोक्षिते धौते वाससी परिधायाऽऽचामेत इति स्नानविधिः ।

मेरे केशों के विन्यास स्थान सिर, ललाट, कान, तथा नेत्रों में जो पाप स्थित है, उसे हे जल की अधिष्ठातृ देवता नष्ट करो ॥

हे जल ! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं । आप मुझे आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, शत्रुपक्ष का नाश, सुख, सन्तोष, शान्ति, आस्तिक्य तथा विद्या प्रदान करें ॥

इन मन्त्रों से तथा मूल मन्त्र से ''देवांस्तर्पयामि । ऋषींस्तर्पयामि, पितॄंस्तर्पयामि'' इन मन्त्रों से देवता, ऋषि तथा पितरों का तर्पण करे । उसे धोकर तट प्रदेश में आकर भूत वेताल, कूष्माण्ड तथा ब्रह्मराक्षस मेरे दिये गये जल द्वारा तृप्त हों ॥

इस प्रकार मन्त्र को पढ़कर तीन अंजलि जल देकर मूल मन्त्र से धोती का प्रोक्षण कर धोती तथा अंगोछा धारण करे । फिर आचमन करे ।

—: o :—